नित्यकुसुमाकरोद्यान।

अर्थात्

चमनिस्तानेहमेशःबहार।

प्रथम भाग।

संशोधित और वर्द्धित।

इसमें नए और पुराने अच्छे २ शायरों की बहुत उम्दा चुनी हुई गजलें दी गई हैं।

उर्दू कविता और गाने के रसिकों के आनन्द और उपकार के वास्ते बाबू अमीरसिंह ने संग्रह किया।

बनारस।

नैपालीखपरा हरिप्रकाश यन्त्रालय में

बाबू अमीरसिंह ने सातवीं बार मुद्रित किया।

सन् १८९८ ई०।
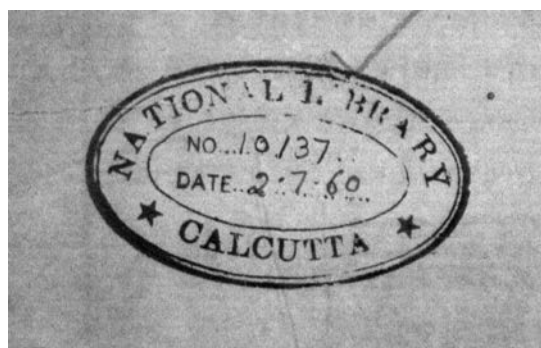
नित्यकुसुमाकरोद्यान।

अर्थात्

चमनिस्तानेहमेशःबहार।

हम्देबारी।

गजले जफ़र।

मक़दूर किसको हम्दे खुदाये जलील का। इस जा से बे-जबां है दहन कालो कील का॥ पानी में उसने राहबरी की कलीम की। आतिश में वह हुआ चमनआरा खलील का॥ उसकी मदद से फ़ौज अबाबील ने किया। लश्कर तबाह कावः व असहाब फ़ील का॥ पैदा किया बह इसने बशर औज बिन्ने उन्क। पुल जिसके साकेपा से बना रौद नील का॥ फ़िरता है उसके हुक्म से गर्दूं यह रात दिन। चलता है यां अमल कोई जरँ सकील का॥ बुलवाया अपने दोस्त को उसने वहां जहां। मक्दूर परजदन न हुआ जबरईल का॥ क्या पाते कुनह जात को उसकी कोई जफ़र। वां अक्ल का न दख्ल न हरगिज दलील का॥१॥

गजले जफ़र।

खारि हसरत कब्र तक दिलपर खटकता जायगा। मुर्गे बिस्मिल की तरह लाशा फड़कता जायगा॥ चुनके अफ़शां बाम पर बहरे खुदा मत जाइयो। ऐ सनम जो देख लेगा सर पटकता जायगा॥ देखिये किस दिन जवाबे खत से आंखें शाद हों। रास्ता देखा नहीं कासिद भटकता जायगा॥ मर गया

हूं मैं किसी की हसरतेदीदार में । कब्र तक लाशा हमारा राह तकता जायगा ॥ सर को मेरे काट कर तशरीफ फरमाएँगे आप । खूनेदिल कदमो पः आंखों से टपकता जायगा ॥ उम्र की किश्ती मेरी इस बह्रे हस्ती में तबाह । एक दम में पार उसको नाखुदा ले जायगा ॥ जब जनाजे पर मेरे आएगा वह रश्की क़मर । तख्तयेताबूत मिस्लेगुल महकता जायगा ॥ ऐ जफर कायम रहेगी जब तलक इकलीमेहिन्द । अखतरे इकबाल उस गुल का चमकता जायगा ॥ २ ॥

गजले अलीगौहर ।

कहो बुलबुल से ले जावे चमन से आशियां अपना । पड़े गर सद हजार अफसूं न होगा बागवां अपना ॥ उठाकर ले-चली बुलबुल चमन से आशियां अपना । कहा गुल से कि ले ओ बेवफा हमसे मकां अपना ॥ हुई जब बाग से रुखसत कहा रो रो के या किसमत । लिखा था यों कि फस्ले गुल में छूटे खानमा अपना ॥ अरे सैयाद यों चाहे तो जी ओ जां से हाजिर हूं । वलेकिन तौक कुमरी की तरह करके निशां अपना ॥ मेरा जलता है जी उस बुलबुलेबेकस की गुरबत पर । कि गुल के आसरे पर यों लुटाया खानमां अपना ॥ चली जब बाग से बुलबुल लुटा कर खानमां अपना । न छोड़ा हाय बुलबुल ने चमन में कुछ निशां अपना ॥ न तूने गुल किया अपना न बुलबुल बागवां अपना । चमन में किस भरोसे पर लुटाया खानुमां अपना ॥ ये हसरत रह गई किस २ मजे से जिन्दगी कटती । अगर होता चमन अपना गुल अपना बागवां अपना ॥ अलम कर इस कदर रोई कि रुसवा होगई बुलबुल । डुबाया हाय आंखों ने त-

मामी खानुमां अपना॥ मगर दिल से बना रखता अलोगोहर से प्यारे को। वह हुकोशाही रखता था बले या मेकवां अपना॥३॥

गजले जफर।

यार था गुलजार था मै थी फिजा थी मैं न था। लायके पाबोसे जानां क्या हिना थी मैं न था॥ हाथ क्यों बांधे मेरे छल्ला अगर चोरी गया। यह सरापा शोखिए दुज्देहिना थी मैं न था॥ मैंने पूछा उस सनम से क्या हुआ हुस्नो शबाब। हँस के बोला वो सनम शानेखुदा थो मैं न था॥ कोई जा सकता नहीं असमत सराए यार तक। परदएदर जिसने उलटा वह हवा थी मैं न था॥ बेखुदी में लेलिया बोसा खता कीजे मुआफ। इस दिले बेताब की साहब खता थी मैं न था॥ मैं सिसकताही रहा और मर गये फरहादो कैस। क्या उन्हीं दोनों के हिस्सों में कजा थी मैं न था॥ नातवानी ने बचाई जान मेरी हिज्र में। कोने कोने ढूंढती फिरती कजा थी मैं न था॥ दाग इसका दिल पः मेरे ऐ जफर रह जायगा। खानहाये यार में खल्केखुदा थी मैं न था॥ ४॥

गजले हकीर।

बतादें हम तुमारे आरिजो काकुल को क्या समझें। उसे हम सांस समझें और इसे मन सांप का समझें॥ यह क्या तशबीः है बेहूदः यह क्यों मूजी से निसबत दें। उसे बर्क और इसे सावन की हम कारी घटा समझें॥ घटा और बर्क क्या हैं क्यों घटा कर इनको निसबत दें। उसे वर्गेंसमन और इसको सम्बुल की जटा समझें॥ नबाताते जमीं से इनको क्या निसबत मआजहल्लाह। हुमा आरिज को और काकुल को हम

जुलैहुमां समझें ॥ गलतीही होगई तश्बीह यह भी एक तायर से। इसे जुल्मात उसको चश्मए आबेबका समझें ॥ जो कहिये यह फकत मकसूद थी खुसरो सिकन्दर के। यदेबैजा इसे और उसको मूसा का असा समझें ॥ अगर यह भी पसन्दे खातिरे वाला न आवे तो। उसे वक्ते नमाज़े सुबह और इसको अशा समझें॥ जो इन तश्बीहों से भी दाग उन दोनों में आता हो। उसे कन्दीले काव: इसको काव: की रदा समझें॥ हकीर इन सारी तश्बीहों को रद करके यह कहते हैं। सवैदा इसको समझें और उसे नूरेखुदा समझें॥ ५॥

गजले मोमिन।

अगर गफलत से बाज आया जफा की। तलाफी की भी जालिम ने तो क्या की ॥ मुझे उम्मेद थी मेहो वफा की। वले जालिम ने जब देखो दगा की ॥ अभी इस राह से कोई गया है। कहे देती है शोखी नक्शेपा की॥ सबा ने उसके कूचे से उड़ाकर। खुदा जाने हमारी खाक क्या की ॥ न कुछ तेजी चली बादेसबा की। बिगड़ने पर भी जुल्फ उसकी बना की ॥ विसाले यार से दूना हुआ इश्क। मरज बढ़ता गया जों जों दवा की ॥ मरीजे इश्क ये अच्छा न होगा। तबीबों ने बहुत इसकी दवा की ॥ मरज अपना नहीं अच्छा हुआ कुछ। तमामी उम्र ईसा ने दवा की ॥ तबीबो क्या दवा करते हो मेरी। है दीदारे सनम सूरत शिफा की ॥ हुआ मैं दर्दे उल्फत से न अच्छा। तबीबों ने बहुत मेरी दवा की ॥ लगी ठोकर जो पाये दिलरुबा की। महीनों तक मेरी तुरबत हिला की ॥ न आया चैन एक दम वस्ल में भी। घटा की रात और हसरत बढ़ा

की ॥ हमारे आइने दिल को न छेड़ो । कसम तुमको बुतो अपनी खुदा की ॥ नहाने में जो अब्रेजुल्फ टपका । उलझ कर कान से बिजली गिरा की । हवा से जुल्फ आरिज पर हिला की ॥ कि बदली चांद के सदके हुआ की ॥ सुंवाती है हमें बू गुल की लाकर । करूं मिन्नत न क्यों बादेसबा की ॥ तपे उल्फत उठू क्या क्या जला है । हकीकत खुलगई रोजेजज़ा की ॥ मेरा दिल ले लिया बातोंहि बातों । चलो बोलो न बस तुमने दगा की ॥ मिले बोसे रकीबों को हजारों । भला हमने तुम्हारी क्या खता की । न आओगी जनाजे पर अगर तुम । रहेगी रूह मेरी तुमसे शाकी ॥ अदम है या कि यह कूए सनम है । चलो जाती है यां खिलकत खुदा की ॥ सबा जल्दी खबर दे जाके उनको । कि हालत देखलें मेरे निजअ की ॥ किसो ने गर कहा मरता है मोमिन । कहा मैं क्या करूं मरज़ी खुदा की ॥ ६ ॥

गजले गाफिल।

निगाहे यार हमसे आज बेतक्सीर फिरती है । किसी की कुछ नहीं चलती कि जब तकदीर फिरती है । कभी तो खींच लावेगी उसे गोरेगरीबां तक । कि मुद्दत से हमारी खाक दामनगीर फिरती है ॥ तेरी तलवार का मुंह हमसे फिर जावे तो फिर जावे । हमारी खाक कब कातिल तहेशमशीर फिरती है ॥ मकामे इश्क में शाही गदा का एक रुतबा है । जलेखा हरगली कूचे में बेतौकीर फिरती है ॥ तेरा दीवाना जब से लुट गया सहराय वहशत में । बगोले की तरह से ढूंढ़ती तसवीर फिरती हैं ॥ सुरका है मेरी आंखों में क्या याराने रफ्त:

का। जो नजरों के तले हर एक की तसवीर फिरती है॥ मैं उस लैली का दीवाना हूं जो सहरा में ऐ ग़ाफ़िल। बगल में अपनी मजनू को लिये तसवीर फिरती है॥ ७॥

गजले जफर।

दिलो जां दीनो ईमां है जो लेना हो सनम लेलो। करूंगा उज्र देने में न मैं मुझसे कसम लेलो॥ हमारा मुंह कहां लें बोसा उनको बे रजामन्दी। कहें जबतक न वह मुंह से कि हां राजी हैं हम लेलो॥ तुम आये ऐन गरमी में निकलकर दिल से ऐ अश्को। कोई दम नख्ले मिजगां के तले साया में दम लेलो॥ नहीं है हज्रतेदिल इश्क के बाजार में सौदा। अगर लेते हो अपने वास्ते तो मोल गम लेलो॥ भरे है कौन कौन उल्फत का दम मालूम होजाये। मियां से तुम मियां जिस वक्त शमशीरेदोदम लेलो॥ रवाना इश्क ने की साथ मेरे फौज अश्कों की। अगर चलते हो तुम भी नालहाये दिल अलम लेलो॥ उठाया जोशेवहशत से कदम मजनू ने सहरा में। कहो कांटों से गर मञ्जूर लेना हो कदम लेलो॥ अजी है आशिकी बेदम से लेना दिल का क्या मुश्किल। कि तुम दमबाज हो जिस वक्त चाहो दे के दम लेलो॥ नहीं है एतबार उनका वो हैं कहके मुकर जाते। नविश्ता उनकी बातों का जफर तुम यक-कलम लेलो॥ ८॥

गजले मोमिन।

वो जो हमसे तुमसे करार था तुम्हें याद हो कि न याद हो। वोही यानि वांद: निवाह का तुम्हें याद हो कि न याद हो॥ वो जो जुल्फ थे मुंह प पेशतर वो करम कि था मेरे हाल पर।

वो हरेक बातों में रूठना तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ वो नये गिले व शिकायतें वो मज़े मज़े की हिकायतें। मुझे सब हैं याद ज़रा ज़रा तुम्हें याद हो कि न याद हो॥ कभी हमसे तुमसे भी राह थी कभी हमसे तुमसे भी चाह थी। कभी हम भी तुम भी थे आशना तुम्हें याद हो कि न याद हो। वो बिगड़ना वस्ल की रात का वो न मानना किसी बात का। वो नहीं नहीं की जो थी सदा तुम्हें याद हो किन याद हो ॥ जिसे आप कहते थे बेवफ़ा उसे आप कहते हैं आशना। मैं वही हूं मोमिने मुब-तिला तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ ८ ॥

गज़ल।

नहीं का अब नहीं है वक्त दो बोसा कि जां निकले। दमे आखिर है इस दम तो सितमगर मुंह से हां निकले॥ गले पर फेरिये खञ्जर न डारिये मैं तड़फूंगा। ज़बां भी खींच लेना तुम अगर मुंह से फुगां निकले ॥ जो उस कातिल ने अपने आ-शिकों का जायज़ा देखा। करोरों उसमें बेदम थे हज़ारों नीमजां निकले ॥ जाते थे ज़ेरे ज़मीं अरसए महशर पः जा पहुंचे। ति-लिस्मे ताजः यह देखो कहां डूबे कहां निकले ॥ न था यारो कोई मुश्फिक बेरे दिन अपने जब तक थे। जब आये अपने अच्छे दिन हज़ारों मेहर्बां निकले॥ जलाकर कर दिया मुझको फना इस सोज़िफ़ुर्क़त ने। जो देखो कब्र तख्ता खोलकर शा-यद धुआं निकले॥ भरी है सीनये सोज़ां में आतिश इस कदर गम की। कि ठंढी सांस भी लूं तो मेरे मुंह से धुआं निकले ॥१०॥

गज़ले ज़फर।

मुर्गदिल मत रो यहां आंसू बहाना मना है। इस कफस

के कैदियों को आबो दाना मना है ॥ तेरिही दीवार से अब मैं भी सर पटका किया । रौजने दीवार तक आंखें मिलाना मना है ॥ कत्ल करके मुझको अब सङ्गींदिलों ने यों कहा । कत्ल हो जाना वलेकिन तड़फड़ाना मना है। तड़फना मत देखना खञ्जर तले ऐ सैद दिल। इश्क के मक्तल में दस्तोपा हिलाना मना है॥ ऐ जफर तुमको हमेशा चाहिये अशरत मुदाम । अब तुम्हें चालीस दिन मेंहदी लगाना मना है ॥ ११ ॥

गजले जफर।

बलाएं जुल्फे जनां की अगर लेते तो हम लेते । बला ये कौन लेता जान पर लेते तो हम लेते ॥ न लेता कोई सौदा माल बाजारे मुहब्बत में। मगर कुछ जान अपनी बेच कर लेते तो हम लेते॥ उसे क्या थी गरज जो बेसबब वह ढूंढ़ता फिरता। दिले नाकाम अपने की खबर लेते तो हम लेते ॥ जो होता हमसे हमबिस्तर भला कह तेरा क्या जाता । तड़फ कर करवटें शब भर अगर लेते तो हम लेते ॥ लगाया जाम होठों से जो उनके मुझको रश्क आया। जो बोसा इन लबों का ऐ जफर लेते तो हम लेते ॥ १२ ॥

गजले जफर।

खूं से अश्क आंखों में जब मिलकर गुलाबी हो गया। फिर तो रूमाले सफैद अकसर गुलाबी हो गया ॥ तेरे दामन से जो टपका खूं शहीदेनाज का। खूब गहरा दामने महशर गुलाबी हो गया ॥ तर पसीने में हुआ वो जो गुलाबीपोश आज । बर में जोड़ा और जेवातर गुलाबी हो गया॥ बज्म में देखे गुलाबी तूने किसके चश्मे मस्त । साकिया बे होश क्यों भर कर गुलाबी

हो गया॥ याद में उसके गुले आरिज की अश्के खूं से रात। ली जिधर करवट उधर बिस्तर गुलाबी हो गया॥ हो चुकी गर्मी गुलाबी बादए गुलगूं से भर। अब तों जाड़ा ऐ परीपैकर गुलाबी हो गया॥ वह गुलावो आंख जो याद आइ वक्ते मैकशी। फिर तो मेरे हक में हर सागर गुलाबी हो गया॥ खून का दावा किया जो उस गुलाबीपोश ने। साफ रंगी कागजी महज़र गुलाबी हो गया॥ बाग में चटका गुलाब आया जुनूं यह जोश पर। पुंब: खूं से दागी सौदा पर गुलाबी हो गया॥ मुंह पै ताना वक्त ख्वाब उसने दुपट्टा तो सफेद। अक्स रूएलाल: गूं से पर गुलाबो हो गया॥ तुर्शअबरू वह हुआ जो उसकी शोखी पर जफर। रंगी लाल: बाग में काट कर गुलाबो हो गया॥ १३॥

गजले जफर।

गमे दिल किस्से कहूं कोई भी गमख्वार नहीं, गमे फुरकत के सिवा। और अगर पूछे कोई काबिले इजहार नहीं, चुपका रहना है भला॥ जुल्फ के प्रेच से छुट सक्ता नहीं कोई दिल, और यह पेंच पः पेच। कौन सा दिल है कि जो इसमें गिरफ़्तार नहीं, है अजब दामे बला॥ सैकड़ों हैं जिगरअफगार हजारों दिलरेश, तेरे हाथों लेकिन। पास तेरे कोई खञ्जर कोई तलवार नहीं, हां मगर नाजो अदा॥ क्या तेरे चश्म सियहमस्त की कैफीतय है, कि जहां है बदमस्त। जिसको अब देखो वह बेहोश है हुशियार नहीं, अय बुते होशरूबा॥ मर मिटे खाके दरे यार पर उश्शाक जफर, कि जो होना हो सो हो। उठके अब जायँ कहां ताकते रफ़्तार नहीं मिस्ले नक्शे कफेपा॥ १४॥

गजले आतिश।

दहन पर हैं उनके गुमां कैसे कैसे। कलाम आये हैं दरमियां कैसे कैसे ॥ जमीने चमन गुल खिलाती है क्या क्या। बदलता हैं रङ्ग आसमां कैसे कैसे॥ तुम्हारे शहीदों में दाखिल हुए हैं। गुलो लाल:ओ अरगवां कैसे कैसे॥ बहार आई है नशे में झूमते हैं। मुरीदाने पीरेमुगां कैसे कैसे॥ अजब क्या छुटा रूह से जामए तन। लुटे राह में कारवां कैसे कैसे॥ तबे हिज्र को काहिशों ने किये हैं। जुदा पोस्त से उस्तखां कैसे कैसे॥ न मुड़कर भी बेदर्द कातिल ने देखा। तड़फते रहे नीमजां कैसे कैसे॥ न गोरे सिकन्दर न है कब्रे दारा। मिटे नामियों के निशां कैसे कैसे। बहारे गुलिस्तां की है आमद आमद। खुशी फिरते हैं बागवां कैसे कैसे॥ तवज्जह ने तेरी हमारे मसीहा। तवाना किये नातवां कैसे कैसे॥ दिले दीदये अहले आलम में घर है। तुम्हारे लिये हैं मकां कैसे कैसे। गमो गुस्स:ओ रञ्जो अन्दोहो हिरमां। हमारे भी हैं मेहबां कैसे कैसे॥ तेरी अक्ले कुदरत की कुरबान आंखें। दिखाये हैं खुशरू जवां कैसे कैसे॥ करे जिस कदर शुक्रे नेअमत वो कम है। मजे लूटती है जबां कैसे कैसे ॥ १५॥

गजले जफर।

मैं हूं आशिक मुझे गम खाने से इनकार नहीं, कि है गम मेरी गिजा। तू है माशूक तुझे गम से सरोकार नहीं, खाय गम तेरी बला॥ दिलो दीं तेरे हवाले किये कारहतेही तलब, और जो कुछ कहा सब। फिर जो बेजार है तू मुझ से बता इसका सबब, मेरी तकसीर है क्या॥ भेजे खत सैकड़ों लिखकर

तुम्हें हुशियारी से, बड़ो दुशवारी से । तुमने भेजा न जबाव एक भी श्रय्यारो से, यह भी किस्मत का लिखा ॥ तलबे बोस: पः क्यों इतना बुरा मानते हो, हमें पहचानते हो । देखो हम हैं वही जांबाज जिन्हें जानते हो, करते हैं जान फिदा ॥ है ह-याते अबदी गर हो शाहादत हासिल. तेरे हाथों कातिल । तेरे आबे दमे शमशीर को तेरा बिस्मिल, समझे है आबेबका ॥ क्या कहूं मैं तेरे अन्दाजो अदा का आलम, है सितम हाय सितम । देखकर होश रहे क्या कि निकल जायगा दम, अय बुते होश-रूबा ॥ न तो तकरीर से हो और न तहरीर से हो, और न तदबीर से हो । हम तो कहते हैं जफर जो हो सो तकदीर से हो, है यही बात बजा ॥ १६ ॥

गजले शिकोहुद्दीन।

मुरादें दिल की बर आएं तुम्हारा हौसला निकले । कोई अहले वफा ढूंढ़ो अगर हम बेवफा निकले ॥ निगोड़ी खींच लाई इसतरफ को दिल की बेताबी । नहीं इसमें खता दा-निस्तः ओ भूले से आ निकले ॥ मैं बेताबी से दिल की ठोकरें खाता हूं गलियों में । कि शायद यार के कूचे का कोई रास्ता निकले ॥ अगर कुछ रञ्ज भी आया हया से कुछ नहीं कहते । मैं पुरअरमां का अरमां हूं मेरा अरमान क्या निकले ॥ शिको-हुद्दीन कहते हैं हमें क्यों प्यार करते हो । उसे चाहो कि जिस्से दिल लगाने का मजा निकले ॥ १७ ॥

गजले अखतर।

दिल जले है गम से ओ आंसू बहाना मना है । लग रही है आग घर में और बुझाना मना है ॥ राजेदिल है पूछते और

बोलने देते नहीं। बात मुंह पर आ रही है लब हिलाना मना है॥ सीने में सोजिश है औ जब्तेफ़िगां का हुक्म हैं। जिगर में है शोला और नालः उठाना मना है ॥ जख्म पर देते हैं जख्म और है मनाही पुंबः की। चाक पर है चाक और मरहम लगाना मना है॥ इश्क के मजहब की क्या हालत कहे अखतर भला। जबह होते हैं पड़े और तड़फड़ाना मना है॥ १८॥

गजले नूर।

मैं जो जाऊं अजल से आप आजाएं अगर पहले। यह पैगामि जबानी खत से कहना नामःवर पहले॥ अरे ओ बे मुरव्वत तुझको दिल देना नहीं लाजिम। कोई पैदा भी कर लेवे हमारा सा जिगर पहले ॥ एवज बोसे के हमने गालियां दीं थीं कि साहब ने। जरा इन्साफ तो कीजे निकाला किसने शर पहले॥ शबे वस्ले सनम में सुबह तक हमने दुआ मांगी। इलाही आज निकले मिफ़्तावां से कमर पहले॥ अजब सरकार है अल्लाह की अय नूर में सदके। हुनरमन्दों से पूछे जाते हैं दानाहुनर पहले॥ १९॥

गजले जफर।

क्या कहूं दिल माइले जुल्फे दुता क्योंकर हुआ। यह भला चङ्गा गिरफ़ारे बला क्योंकर हुआ॥ जिनको महराबे इबादत हो खमे अबरूए यार। उनका काबः में कहो सिजदा अदा क्योंकर हुआ॥ दीदए हैरां हमारा था तुम्हारे जेरे पा। हमको हैरत है कि पैदा नक्शे पा क्योंकर हुआ॥ नामःबर खत देके उस नौखत को तूने क्या कहा। क्या खता तुझसे हुई और वह खफा क्योंकर हुआ॥ खाकसारी क्या अजब खो दे अगर दिल

का गुवार। खाक से देखो कि आईना सफा क्योंकर हुआ॥ था जो यकताई का दावा देख कर वह आइना। होगया हैरां कि पैदा दूसरा क्योंकर हुआ ॥ तेरे दाँतों के तसव्वर से न था गर आबदार। जो बहा आंसू वो दुर्रे बेबहा क्योंकर हुआ॥ जो न होना था हुआ हमपर तुम्हारे इश्क में। तुमने इतना भी न पूछा क्या हुआ क्योंकर हुआ॥ वह तो है नाआशना मशहूर आलम में जफर। पर खुदा जाने वह मुझ से आशना क्योंकर हुआ ॥२०॥

गजले जफर।

सूफियों में हूं न रिन्दों में न मैख्वारों में हूं। ऐ बुतो बन्दा खुदा का हूं गुनहगारों में हूं ॥ मेरी मिल्लत है मुहब्बत मेरा मजहब इश्क है । ख्वाह हूं मैं काफिरों में ख्वाह दींदारों में हूं॥ सफहए आलम पः मानिन्दें नगों मिस्ले कलम । या सियहरूयों में हूं मैं या सियहकारों में हूं ॥ ने चढूं सर पर किसी के और न मैं पाओं पड़ूं । इस चमन के ने गुलों में हूं न मैख्वारों में हूं॥ सूरते तसवीरे मैकश मैकदे में धर गये । कुछ न बदहोशों में हूं मैं और न हुशियारों में हूं ॥ ने मेरा मूनिस है कोई और न कोई गमगिसार । गम मेरा गमख्वार है मैं गम के गमख्वारों में हूं ॥ जो मुझे लेता है फिर वह फेर देता है मुझे। मैं अजब एक जिन्स नाकारा खरीदारों में हूं ॥ खानए सैयाद में हूं तायरे तक्सीरवार । पर न आजादों में हूं और ने गिरफ़ारों में हूं॥ ऐ जफर मैं क्या बताऊं तुझसे जो कुछ हूं सो हूं। लेकिन अपने फख्रो दीं के कफ्शबरदारों में हूं॥ २१॥

गजले मकबूल।

तमन्ना सैर गुलशन की अभी सैयाद बाकी है। न कर कैदे

क़फ़स गुल से अभी फ़रियाद बाक़ी है॥ लहू दामन सेती धोया तो क्या लेकिन क़यामत तक। हमारा तेरी गरदन पर तो ऐ जल्लाद बाक़ी है॥ मैं देखा बाग में जाकर न गुल है और न गुंचा है। चमन में बुलबुलों की हर तरफ़ फ़रियाद बाक़ी है॥ मैं देखा लैलियो मजनूं को और फ़रहादो शीरीं को। वले अरमान उस तसवीर का बेहज़ाद बाक़ी है॥ न लोहू है जिगर में और न आंसू आंख में मेरे। मगर खूनी मुहब्बत दिल में ऐ फ़स्साद बाक़ी है॥ नक़ाबे अम्बरीं रुख से उठा दे ऐ परीपैकर। कि तेरे दर्स में हमको मुबारकबाद बाक़ी है॥ सखुन को वे जो थे उस्ताद उनका होगये यारब। मगर इस वक़्त में मक़बूल एक उस्ताद बाक़ी है॥ २२॥

ग़ज़ले गुच्छः।

गिला किस्से करूं तेरी जफ़ा का। नहीं है कोई दाफ़ा इस बला का॥ फ़क़त ग़मख्वार हैं यह नालओ आह। व या है आसरा मुझको खुदा का॥ तेरे दिल में नहीं होती है तासीर। असर क्या उड़ गया मेरी दुआ का। अगर ग़मग़ीर का ज़ख्मी हो जो जाय। बचे किस तौर से घायल अदा का॥ जो हो तक़सीर मुझसे माफ़ रखना। कि है इनसा बना ग़ल्ती खता का॥ खुदा से रोज़ो शब यह मांगता हूं। न हो क़ैदी कोई ज़ुल्फ़ेदुता का॥ शिगुफ्ता हो मिसाले गुञ्चा जब दिल। कि लादे खबरे गुल क़ासिद सबा का॥ २३॥

ग़ज़ले रमज़ानअली।

फिर दोबारा इश्क़ का दिल पर असर पैदा हुआ। बाग़ में तेरे मुहब्बत का शजर पैदा हुआ॥ अश्क जारी रात दिन

हैं चश्मेगिरियां से मेरे । इस कदर रोया कि अश्कों से गोहर पैदा हुआ ॥ देखकर गुलशन में कहतीं बुलबुलें उस माह को। क्या चमन में दूसरा रश्केकमर पैदा हुआ ॥ अब मुझे तेरे बगैर आता नहीं आरामो चैन । फिर जुदाई से तुझे क्योंकर सबर पैदा हुआ ॥ जख्म आले होगये छिल छिल के सारे जिस्म के । दर्ददिल रमजानअली शामो सेहर पैदा हुआ ॥ २४ ॥

गजले जौक।

रुखसत अय जिन्दां जुनूं जञ्जीरे दर खड़काए है । मुजदः खारे दश्त फिर तलवा मेरा खुजलाए है ॥ सर बवक्ते जबह अपना उसके जेरे पाय है । यह नसीब इल्लाह अकबर लोटने की जाय है ॥ पान खाए वह परी सुर्खी रगों से है नमूद । यह वह गरदन है मियां लाखों गले कटवाए है ॥ वाहवा शोरे मुहब्बत जोर है छिड़का नमक। उस्तुखां मेरी हुमां किस किस मजे से खाए है ॥ वस्ल की शब पहली है और वह बुत अब शरमाए है। दिल घटा जाता है ज्यों ज्यों रात घटती जाए है॥ हां मदद ताकत कहे है जोफ से सीने में दम। देखिये लब तक खुदा क्योंकर मुझे पहुंचाए है॥ बस गरम सोजे दरूं वह जायँगी दिल और जिगर । रहम जोशे गिरियः फिर छाती अभी भर आए है ॥ बलबे इस्तिगना कि वह यों आते आते रह गये । उफ रे बेताबी कि यां तो दमही निकला जाए है॥ निजअ में भी जौक के तेराही बस है इन्तिजार । जानिबे दर देखले है जब कि होश आजाए है । २५ ॥

गजले आगा।

निकालना सख्त मुश्किल हो न क्योंकर कूए कातिल से।

तड़फते हों जहां आशिक हजारों मुर्गेबिस्मिल से ॥ तेरे कूचे में अय जालिम न आता पर न आता मैं। मगर मजबूर हूं कुछ बस नहीं बेताबिए दिल से ॥ हटा दो उनको बालीं से कि वह तो खौफ खाएँगे। सुना है दम निकलता है बहुत आशिक का मुश्किल है ॥ न हो आशिक तो माशूकों को पूछे कौन दुनियां में। जहां में कद्र है गुल की फकत इश्के अनादिल से ॥ शबे फुरकत में ऐसा देखता है खुद तू अय आगा। बदलना कैसा करवट सांस भी लेता हुं मुश्किल से ॥ २६ ॥

गजले सखी।

मेरी कब्र पर से फिर आये क्यों वह जमाल क्यों न दिखा दिया। मैं तो सो रहा था मजार में मुझे क्यों न तुमने जगा दिया ॥ दमेगुस्ल के मेरे साथहो मेरे गुलबदन ने वफा की ली। जो गले में फूलों का हार था वो लहद प मेरे चढ़ा दिया ॥ कहा दिल के देने में मैंने जो कि हैं लोग बैठे तो बोल उठे। अजो लाओ चुपके छिपायलें कोई जानता है कि क्या दिया ॥ जो निकालूं आह मैं सीने से जो सुनाऊं नाला बसद फुगां। तो अजब नहीं कि खुदा कहे मेरा अर्श इसने हिला दिया ॥ वो जो पूछा मेरे जनाजे को किसी अजनबी ने कि किसका है। मैं तसद्दुक उसकी जबान पर मेरा नाम रो के बता दिया ॥ मेरे बेवफा के पयामबर ये जुरूर जातेही पूछना। कि हुआ था उससे कुसूर क्या जो सखी को तूने भुला दिया ॥ २७ ॥

गजले तांबा।

इश्क क्या शय है किसी कामिल से पूछा चाहिये। किस्तरह जाता है दिल बेदिल से पूछा चाहिये ॥ क्या तड़फने में

मजा है कत्ल हो प्यारे के हाथ। इसकी लज्जत को किसी बिस्मिल से पूछा चाहिये॥ जिसने उसका जख्म खाया है उसे मालूम है। तेगेअबरू की सिफत घायल से पूछा चाहिये॥ यार के मिलने की तो कोई तरह आती नहीं। तरह मिलने की किसी वासिल से पूछा चाहिये॥ आहो नाले की हकीकत देखता हूं हिज्र में। क्या गुजरती होगी ताबांदिल से पूछा चाहिये॥२८॥

गजले सौदा।

खूबिये रुखसारे खूबां गुल से पूछा चाहिये। इजतिराबे आशिकां बुलबुल से पूछा चाहिये॥ जो गुजरती है हमारे हाल पर जुल्फों को देख। इसकी माहीयत कहीं सम्बुल से पूछा चाहिये॥ खन्दए खूबां बजा है वादानोशों के ऊपर। बेखुदी की बात जा कामिल से पूछा चाहिये॥ अहले किशमीरो सफाहां ऐश करती हैं मुदाम। हिन्द की लज्जत किसी काबिल से पूछा चाहिये॥ लोग कहते हैं अबुलखैरेहजीं सोदा हुआ। कुछ इलाज इस मर्ज का काकुल से पूछा चाहिये॥ २९॥

गजले जफर।

जलाया आप हमने जब्त कर कर आहेसोजां को। जिगर की सीने को पहलू को दिल को जिस्म को जां को॥ हमेशा कुञ्ज तनहाई में मूनिस हम समझते हैं। अलम को यास को हसरत को बेताबी को हिरमां को॥ जगह किस किस को दूं दिल में तेरे हाथों से ऐ कातिल। कटारी को छुरी को बांक को खञ्जर को पैकां को॥ नहीं जब तूही ऐ साकी भला फिर क्या करे कोई। हवा को अब्र को गुल को चमन को सेहनेबुस्तां को॥ नहीं कुलकुल दुआ देता है शीशा दम बदम

साकी। सबू को खुम को मय को मयकदे को मयपरस्तां को॥ तुझे दिल देके मैं अय काफ़िरे बेमिह्र खो बैठा। खिरद को होश को ताक़त को जी को दीनो ईमां को॥ लड़ाकर आंख उससे हमने दुश्मन कर लिया अपना। निगह को नाज़ को अन्दाज़ को अबरू को मिज़गां को॥ तेरे दन्दानो लब ने कर दिया बेक़द्र आलम में। गोहर को लाल को याक़ूत को हीरे को मरजां को॥ बनाया अय ज़फ़र खालिक़ ने कब इन्सान से बेहतर। मलिक को देव को जिन को परी को हूरो गिलमां को॥२०॥

ग़ज़्ले ज़फ़र।

खुदा जाने निगाहों में बुतो क्या काम करती हो। नज़र जिस वक़्त तुम करती हो क़त्ले आम करते हो॥ जो उनका नाम भर कर आह लेता हूं तो कहते हैं। जता कर इश्क़ अपना क्यों मुझे बदनाम करती हो॥ जुदाई में तुम्हारे हम यहां बेताब फिरते हैं। मेरे वां बिस्तरे राहत पः तुम आराम करती हो॥ तुम्हें जब देखते हैं रुख प तुम ज़ुल्फ़ें बनाती हो। बनावट किसकी खातिर सुबह से ता शाम करती हो॥ खुदा जाने कि है मञ्जूर किससे मश्विरा इसमें। तअम्मुल तुम जो सुनकर वस्ल का पैग़ाम करती हो॥ नसीहत करते हो क्यों पुख़्तः मग़्ज़ाने जुनूं को तुम। यह क्या ऐ हज़रते नासिह ख़्येय ले ख़ाम करते हो॥ ज़फ़र उस तुन्दखू से बोसएलब मांगते हो क्या। मगर इस परदे में कोई तलब दुश्नाम करती हो॥ २१॥

ग़ज़्ले ज़फ़र।

दिल अगर मांगोगे तुमको अय सनम दे देंगे हम। पर न देना और को यह भी क़सम दे देंगे हम॥ कार रोग़न का क-

रेंगे अश्क दिल की आग पर । और भड़केगी जो छीटा चश्मे नम दे देंगे हम॥ जानते हो आप सा दमबाज जांबाजों को भी। दमही समझे जाओगी गर अपना दम दे देंगे हम ॥ जाहिदे बेमग्ज़ को होगी न कैफीयत नसीब। जामि मय क्या गरचे उसको जामेंजम दे देंगे हम ॥ मुंह न मोड़ेंगी तेरे तेगेसितम से देखना। सर तलक भी इश्क में अबरूसितम दे देंगे हम॥ गर कहें दोगे निशां क्या तुम दमेरुखसत मुझे। हँस के कहते हैं कि कुछ दर्दो अलम ट देंगे हम ॥ यह भी था तकदीर में लिक्खा कि अय नौखत तुझे। यों दिलो जां दीनो ईमां यकबालम दे देंगे हम॥ सब निकल जाएँगी अय कातिल हमारी हसरतें। जब तड़प कर दम तेरे जेरेकदम दे देंगे हम॥ कन्दः है दिल के नगीने पर हमारे नामि दोस्त। अय जफर क्योंकर किसी को यह रकम दे देंगे हम॥ ३२॥

गजले अमानत।

भूला हूं मैं आलम को संरशार इसे कहते हैं। मस्ती मे नहीं गाफिल हुशयार इसे कहते हैं॥ दम लेके मेरा छोड़ा आजार इसे कहते हैं। अच्छा न रहा एक दिन बीमार इसे कहते हैं॥ कल घर से वह जो निकला एक हश्र हुआ बरपा। दिल पिस गये आलम के रफतार इसे कहते हैं॥ उस माह का जलवा है उश्शाक की महफिल में। यूसुफ इसे कहते हैं बाजार इसे कहते हैं॥ तस्वीर को सक्ता है कहते हैं इसे नकशा। आईने को हैरत है रुखसार इसे कहते हैं॥ एक रिश्तए उल्फत में गरदन है हजारों की। तस्बीह इसे कहते है जुन्नार इसे कहते हैं॥ महशर का किया वादा यां शक्ल न दिखलाई।

इक़रार इसे कहते हैं इन्कार इसे कहते हैं ॥ मिज़्गां ने किया बेदम अबरू ने मुझे मारा । खञ्जर इसे कहते हैं तलवार इसे कहते हैं ॥ दिल ने शबे फुरकत में क्या साथ दिया मेरा । मूनिस इसे कहते हैं गमख्वार इसे कहते हैं ॥ शब गुजरी सहर आई बक बक के थका आशिक । बोसा न दिया उसने तकरार इसे कहते हैं ॥ खामोश अमानत है कुछ उफ नहीं करता है । किया क्या नहीं ऐ प्यारे अमयार इसे कहते हैं ॥ ३१ ॥

गजले गोया ।

न अजल आई न वह यार आया यह भी न हुआ वह भी न हुआ । न तो वस्ल हुआ न विसाल हुआ यह भी न हुआ वह भी न हुआ ॥ हर रग को शौक था नश्तर का मुश्ताक गला था खञ्जर का । लेकिन न मिटा ये मुकद्दर का यह भी न हुआ वह भी न हुआ ॥ तासीर न हो जब इनमें जरा रोए तो क्या तड़पे तो क्या । बिजली न गिरी तूफां न उठा यह भी न हुआ वह भी न हुआ ॥ न तो सदमए आह अलम उट्ठी और जार यह हूं तिनका न हिला । मुझसे तो सुना ऐ आह-रुबा यह भी न हुआ वह भी न हुआ ॥ तड़पा न तहे खञ्जर मैं जरा सर अपना दिया शिकवा न किया । था पासे अदब जो कातिल का यह भी न हुआ वह भी न हुआ ॥ कहता था जो उससे विसाल मेरा या जल्द कहीं हो विसाल मेरा । था ख्वाब मगर ये खयाल मेरा यह भी न हुआ वह भी न हुआ ॥ मेंह हाय न बरसा तीरों का और उन अबरूअमशीरों का । कुछ बस न चला तदबीरों का यह भी न हुआ वह भी न हुआ ॥ बाजारे मुहब्बत गर्म रहा उस यूसुफ से सौदा न बना । न तो

मोल लिया न तो आप बिका यह [illegible] हुआ [illegible] भी न हुआ ॥ मैं निजअ् में था बुलवा न सका और [illegible] मुझे पहुंचा न सका। वह आ न सका मैं जा न सका यह भी न हुआ वह भी न हुआ ॥ जाहिद ने तौफ हरम का किया हिन्दू ने बुत को किया सिजद । नाकाम वह हूं मुझसे गोया यह भी न हुआ वह भी न हुआ । २४ ॥

गजले निजाय।

तूने अपना जलवा दिखाने को जो नकाब मुंह से उठा लिया। वोहीं महवे हैरतो बेखुदी मुझे आइना सा बना दिया । वह जो नक्शेपा की तरह रही थी नमूद अपने वजूद की । सो कशिश से दामने नाज को उसे भी जमीं से मिटा दिया ॥ कहां चैन ख्वाब अदम में था न था जुल्फे यार का ख्याल भी। सो जगा के शोरे जहूर ने मुझे इस बला में फँसा दिया ॥ जरा छिप निगाहे रकीब से पड़ी उस गली में थी मेरी खाक । तूने एक झोंके में ऐ सबा उसे ले वहां से उड़ा दिया ॥ रगेपा से आग भड़क उठी वहीं फुक पड़ा सभी तन बदन । मुझे साकिया मए आतिशों का यह जाम कैसा पिला दिया ॥ यह निहाल शोले हुस्न का तेरा बढ़ के सरबफलक हुआ । मेरी काहे हस्ती ने मुश्तगल हो इसे यह निश्वोनुमा दिया ॥ जभी जाके मकतबे इश्क में सबके मुकामे फना लिया। जो लिखा पढ़ा था नियाज ने सो वह साफ दिल से भुला दिया ॥ २५ ॥

गजले अमानत।

रफ्तार के चलन से गजब दिल भुला लिये । छोटे से सिन में यार बड़े तुम हो चालिये ॥ बोसा जो मांगा चश्म का क्या

कह होगया। मुझपर न ऐन वस्ल में आंखें निकालिये॥ जाने न दूंगा आपको सुने का कुछ नहीं। बातें बना के वस्ल का वादा न टालिये॥ एक बोसे पर यह गालियां अल्लाह की पनाह। कुछ मैं भी अब कहूंगा नहीं मुंह सँभालिये॥ दर गुजरा मैं मिलाप से हटिये कहां का प्यार। फैला के पांव हाथ गले में न डालिये॥ नज्जारा रूए साफ का मन्जूर है हमें। दिखला के जुल्फ को न बला सर की टालिये॥ आशिक को जहर गैर को मिसरी की हो डली। इस तरह की न बात जबां से निकालिये॥ नामहरमों की आंख न अँगिया प जा पड़े। सीना खुला हुआ है दुपट्टा सँभालिये॥ खुशचश्म सब जहां के अमानत हैं बेवफा। जो चाहता है आंख किसी पर न डालिये॥ २६॥

गजले जफर।

मेरी आंख बन्द थी जब तलक वह नजर में नूरे जमाल था। खुली आंख तो न खबर रही कि वह ख्वाब था कि ख्याल था॥ दमे बिस्मिल ऐ बुते एश्वःगर खुशी ईद की सी हुई मुझे। खमे तेग तेरा जो सामने नजर आया मिस्ले हिलाल था॥ कहो इस तसव्वरे यार को कहूं क्यों न खिज्र खजिस्तः पै। कि यही तो दश्ते फिराक में मुझे रहनुमाय विसाल था॥ मेरे दिल में था कि कहूंगा मैं यह जो दिल पै रञ्जो मलाल है। वह जब आगया मेरे सामने न तो रञ्ज था न मलाल था॥ वह है बेवफा वो है पुरजफा वहां लुत्फ कैसा वफा कहां। फकत अपना वहमो खेयाल था यह खेयाल अम्रे मुहाल था॥ पसे परदा सुनके तेरी सदा तेरा शौके दीद जो बढ़ गया। मुझे इजतिराब कमाल था यही वज्द था यही हाल था॥ जफर इससे छुट के जो जस्त

की तो यह जाना हमने कि वाक़ई । फक़त एक क़ैद खुदी की थी न क़फस था कोई न जाल था ॥ २७ ॥

गजले जफर।

नहीं इश्क़ में इसका तो रञ्ज हमें कि क़रारो शिकेब जरा न रहा । गमें इश्क़ तो अपना रफ़ीक़ रहा कोई और बला से रहा न रहा ॥ दिया अपनी खुदी को जो हमने उठा वह जो परद: सा बीच में था न रहा । रहो परदे में अब वहो परद:-नशीं कोई दूसरा उसके सिवा न रहा ॥ न थी हाल की जब हमें अपने खबर रहे देखते औरों के ऐबो हुनर । पड़ी अपनी बुरायों पर जो नजर तो निगाह में कोई बुरा न रहा ॥ तेरे रुख के खयाल में कौनसे दिन उठे मुझ प न फ़ितनए रोजे जज़ा। तेरी जुल्फ के ध्यान में कौनसी शब मेरे सर प हजूमे बला न रहा ॥ हमें सागरे बाद: के देने में अब करे देर तू साकिया हाय गजब । कि यह अहदे निशात यह दौरे तरब न रहेगा जहां में सदा न रहा॥ कई रोज में आज वो मेहलक़ा हुआ मेरे जो सामने जिल्व:नुमा। मुझे सब्रो क़रार जरा न रहा उसे पासे हिजाबो हया न रहा॥ तेरे खञ्जरो तेग की आबेरवां हुई जब कि सबीले सितमजदगां । गये कितनेही क़ाफ़िले खुश्कजहां कोई तिश्नए आबेबक़ा न रहा॥ मुझे साफ बताए निगार अगर तो यह पूछूं मैं रो रो के खूनेजिगर । मले पांव से किसके हैं दीदए तर कफ़ेपा प जो रङ्गे हिना न रहा ॥ उसे चाहा था मैंने कि रोक रखूं मेरी जान भी जाय तो जाने न दूं । किये लाख फरेब करोर फसूं न रहा न रहा न रहा न रहा ॥ लगी यों तो हजारोंहा तीरेसितम कि तड़फते रहे पड़े खाक प हम।

बले माजो कारख़ः को तेगे दीदम लगी ऐसी कि तखः लगा न रहा ॥ अफर आदमी उसको न जानियेगा वह हो कैसाही साहबे फहमोजका । जिसे ऐश में यादे खुदा न रही जिसे तैश में खौफे खुदा न रहा ॥ ३८ ॥

नज़ीर।

गर तुझमें ऐ परीरू या मेहर या जफा है । या रास्ती का मिलना या सरबसर दगा है ॥ कर तू वही जो तेरे अब दिल को खुश लगा। हम जानते नहीं है कुछ नेको बद ये क्या है॥

राजी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रजा है।
यां यों भी वाह वा है और वों भी वाह वा है॥

दरियाय गम में अपने फेंकेगा तो बहेंगे । खींचेगा हाथ देकर तो हाथ को गहेंगे॥ जिस हाल में रखेगा उसी हाल में रहेंगे। जब तक कि दम में दम है हम तो यही कहेंगे॥

राजी हैं हम उसी में०।

कुछ दिल में हो तो जालिम आबादियां भी कर ले। जौरो सितम को अपने उस्तादियां भी करले॥ बेदाद है तो जालिम बेदादियां भी करले । जल्लाद है तो काफिर जल्लादियां भी करले॥ राजी हैं हम उसी में०।

डालेगा जिस अलम में उस गम में हम रहेंगे । पालेगा अशरतों से तो ऐश से पलेंगे ॥ दोजख में फेंक देगा दोजख में जा जलेंगे। जन्नत को ले चलेगा जन्नत को उठ चलेंगे॥

राजी हैं हम उसी में०।

गर मेह्र से बुलावे तो खूब जानते हैं। और कह्र से डुलावे तो डूब जानते हैं॥ हम दिल से अपना तुझको मह्बूब जानते हैं। और जाहिरी भी अपना मतलूब जानते हैं॥ राजी हैं०॥

अब दर प अपने हमको रहने दे या उठा दे । हम सब तरह से खुश हैं रख या हवा बता दे॥ आशिक हैं गर कलन्दर चाहे जहां बिठादे। या अर्श पर चढ़ादे या खाक में मिला दे॥

राजी हैं हम उसी में०।

साबित हैं हम तो अपनी कौलो कसम के ऊपर। कुर्बान हो चुके हैं हम तुझ सनम के ऊपर॥ खुशहाल हर खुशी में दिलशाद गम के ऊपर। अब तख्त पर कदम हो या सरजमीं के ऊपर॥ राजी हैं हम उसी में०।

जब ऐश थी तो क्या क्या अशरत में रह चुके हैं। अब कष्ट है तो गम के आंसू भी बह चुके हैं॥ शादी भी देख ली है और गम भी सह चुके हैं। अब क्या कहेंगे हम तो पहिलेही कह चुके हैं॥ राजी हैं हम उसी में०।

इक रोज था कि हम पर थे ऐश के धड़ाके। सब मतलबी थे हम थे और गैर को कड़ाके॥ अब गैर पर करम है और हम प यों झड़ाके। हम सब तरह से खुश हैं सुनता है ओ लड़ाके॥ राजी हैं हम उसी में।

अब शाम को खफा हो या आन मिल सवेरे। तू मान या न माने हम हो चुके हैं तेरे॥ या वस्ल के उँजेले या हिज्र के अँधेरे। हम सब तरह से खुश हैं सुनता है यार मेरे॥

राजी हैं हम उसी में०।

यां कुछ नहीं मुलम्मा ऐ यार हुस्नवाले। बावर नहीं है तुझको गर खूब छान ता ले॥ कुंदन के हम डले हैं चाहे जहां गला ले। अब जिस तरह से चाहे तू हमको आजमा ले॥राजी हैं०॥

अब प्यार है तो एक शब हम पास आ के सो ले। और है

खफा तो जालिम लोहू में हाथ भी ले ॥ काफिर है जोकि तेरे जुल्मो सितम से बोले। आशिक है धुन के पक्के जो होना हो सो हो ले ॥ राजी हैं हम उसी में०।

अब दिल से या खुशी होकर प्यार हमको प्यारे। या तेग खींच जालिम टुकड़े उड़ा हमरे ॥ जीता रखे तू हमको या तन से सर उतारे। अब तो नजीर आशिक कहते हैं यह पुकारे ॥

राजी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रजा हैं ॥ ३९ ॥

गजले जफर।

पहिले घबराए गले मेरे वो लग जाने से। बारे फिर सोच गये मेरे कसम खाने से ॥ जुल्फ सुलझाओ न तुम आगे मेरे शाने से। दिल उलझता है मेरा जुल्फ के सुलझाने से ॥ एक पैमाने से मस्तों को न साकी उहका। खुम चढ़ा जाते हैं क्या होता है पैमाने से ॥ चांद पर दौड़ता है मारे स्याहे शवेतार। रुखे रौशन प तेरे जुल्फ के बल खाने से ॥ शमश खू तेरी तो बातों से नहीं मैं जलता। आग लगती है मुझे गैर के भड़काने से ॥ तेरी आंखों ने खुदा जाने किया क्या जादू। हम भी दाना थे पर अब फिरते हैं दीवाने से ॥ चमने दहर में एक गुञ्चए तस्वीर हूं मैं। न तो खिलने से मुझे काम न मुरझाने से ॥ सख्तजानों ने बनाया मुझे कैसा पत्थर। पड़ गये यार की शमशीर पः दन्दाने से ॥ दिलो जां सभी तवां जो तुम्हें दरकार हो लो। होगा बाहर न जफर आपके फरमाने से ॥ ४० ॥

गजले मकसूद।

मुकद्दर अपना अपना आजमाये जिसका जी चाहे। हमारे कत्ल का बीड़ा उठाये जिसका जी चाहे ॥ चढ़ा मन्सूर सूली पर

पुकारे इश्कबाजों को। यह उसके बाम का जीना है आये जिसका जो चाहे॥ अलग हम सबसे रहते हैं मिसाले तारे तंबूरा। जरा छेड़े से मिलते हैं मिलाये जिसका जो चाहे॥ तेरी महफिल में ऐ जानां मिसाले एक तमाशा हूं। हँसाये जिसका जी चाहे रुलाये जिसका जी चाहे॥ गुरूरे हुस्न से हम पर अबस तू झांझ करता है। यह नौबत चन्दरोजा है बजाये जिसका जी चाहे। मुहब्बत के महल पर आशिके जांबाज रहते हैं। भला चङ्गा जिगर अपना जलाये जिसका जी चाहे॥ तसव्वुर में तुम्हारे जो कि जेरे खाक सोते हैं। न जागेंगे सिवा तेरे जगाये जिसका जी चाहे॥ मिलाये खाक में अफलाक ने क्या क्या परीपैकर। गुरूरे हुस्न से आंखें दिखाये जिसका जो चाहे॥ हमें खाके दरे जानां हि बस अकसीर पारस है। हवस गर कीमिया की हो बनाये जिसका जी चाहे॥ फकीराना हम आसन अपने दर पर मार बैठे हैं। बुलावें क्यों किसी को हम अब आये जिसका जो चाहे॥ मेरा मक़सूद मुझको आपसे मिल जायगा यारो। हजारों फिक्र से मकसूद पाये जिसका जी चाहे॥ ४१॥

गजले जफर।

गर कत्ल का है अज्म तो शमशीर दिखा दो। या आ के तुम अपनो मुझे तस्वीर दिखा दो॥ ता हश्र न हो खाहिशे नज्जारए सम्बुल। तुम हमको अगर जुल्फे गिरहगीर दिखा दो॥ पथरा गईं आंखें इसी हसरत में अजीजो। टुक मुझको दरे यार की जञ्जीर दिखा दो॥ यां तक कि कशिश दिल तुम्हें चाहे है यहां खींच। है मुझसा कोई साहबेतासीर दिखा दो॥ अपनीहि है यह आह कि पहुंची है फलक तक। वरनः कोई

ऐसा तो हमें तीर दिखा दो ॥ तुम तेग बकफ़ फिरते हो क्यों किसलिये क्या है । है आज कज़ा किसकी गुलूगीर दिखा दो ॥ तबदील किया के बे असर देखें तो हम दम । एक और गज़ल कह हमें तहरीर दिखा दो ॥ ४२ ॥

गज़ले नासिख़ ।

लगादे शोलए आरिज से गर वह आग गुलशन को । कबाबो सोख़ समझें बुलबुलें शाखे नशेमन को ॥ पस अज़ मुर्दन तो मुश्ते ख़ाक छू ले तेरे दामन को । क़दम रखता है क्या ज़ालिम बचा कर मेरे मदफ़न को ॥ वह अकसीर आतिशे ग़म है कि अपनी आह सोज़ां ने । तिलाई एक दम में कर दिया अख़ोरे आहन को ॥ चढ़ाए नाफ़ए मुश्कों समझ कर कुश्तए काकुल । गिज़ालाने बियाबां ने जो देखा मेरे मदफ़न को ॥ चबा कर पान ज़ालिम ने किये गुलगूं लबो दन्दां । बनाया मादने याकूत क्या हीरे के मादन को ॥ लटक आई जो बाज़ू पर कोई लट ज़ुल्फ़े पेचां की । किया सोनां सुगंध उसने तेरे सोने के जोशन को ॥ गरेबां सहर है जैसे हो रंगेशफ़क़ लाज़िम । न छोड़ेगा लहू मेरा कभी क़ातिल के दामन को ॥ मसायब नज़्म करता हूं शबे तारीक हिजरां में । बनाया शमए बज़्मे फ़िक्र मैंने तबए रौशन को ॥ कुरो देखी जो उस रश्के चमन के दस्ते नाज़ुक में । भुलाया बुलबुलाने बाग़ ने शाखे नशेमन को ॥ समाए गो न हम उसकी नज़र में एक दिन लेकिन । गुबार अपना पस अज़ मुरदन है सुरमा चश्मे दुश्मन को ॥ भला गैर अज़ ग़ज़लख़्वानी हो मुझसे काम क्या नासिख़ । बजुज़ नाला नहीं आता है कुछ मुर्गे नवाज़न को ॥ ४३ ॥

गजले नियाज़।

मुंह अपना जो तूने दिखाया मुझे। वोहीं फिर जो देखा न पाया मुझे॥ बसा मेरी आंखों में फिर इस क़दर। कि तुझ बिन नजर कुछ न आया मुझे॥ कहां तक कहूं तुझे एहसाने इश्क़। कि ज्यों ज्यों घटा मैं बढ़ाया मुझे॥ यहां तक दिया मुझको इसने उरूज। कि बन्दे से मौला बनाया मुझे॥ मैं क़ुर्बान हूं तेरी नजरों के यार। मिलातेही आंखें गँवाया मुझे॥ कहां मैं किधर बेखुदी का मक़ाम। वहां से यहां तूही लाया मुझे॥ नियाज़ अब यही है दुआ औ तलब। रख अपनाही बन्दा खुदाया मुझे॥ ४४।

गजले नजीर।

नजर पड़ा एक बुते परीवश निराली सजधज नई अदा का। जो उम्र देखो तो दस बरस की प क़हर आफ़त गजब खुदा का॥ जो शक्ल देखो तो भोली भोली जो बातें सुनिये तो मीठी मीठी। प दिल वो पत्थर कि सिर उड़ा दे जो नाम लीजे कभी वफ़ा का॥ जो घर से निकले तो यह क़यामत कि चलते चलते क़दम क़दम पर। किसी को ठोकर किसी को झिड़की किसी को गाली निपट लड़ाका॥ यह राह चलती में चुलबुलाहट कि दिल कहीं है नजर कहीं है। कहां का ऊँचा कहां का नीचा ख़याल किसको क़दम की जा का॥ लड़ावे आंखें वह बेहिजाबी कि फिर पलक से पलक न मारे। नजर जो नीचे करे तो गोया खिला सरापा चमन हया का॥ यह चञ्चलाहट यह चुलबुलाहट ख़बर न सर को न तन की सुध बुध। जो बीरा बिखरा बला से बिखरो न बन्द बांधा कभू क़बा का॥ मसी लिप-

टने में यों गिताबी कि मिस्ल बिजली के इजतिराबी । कहीं जो चमका चमक चमक कर कहीं जो लपका तो फिर झपाका ॥ न वह सँभाला किसी का सँभले न वह मनाये मने किसी के । जो कहले आशिक प आ के मचले तो गैर का फिर न आशना का ॥ नजीर हटजा परे सरक जा बदल ले सूरत छिपा ले मुंह को । जो देख लेवेगा वो सितमगर तो यार होगा अभी झड़ाका ॥४५॥

गजले खुसरो ।

जेहाल मिस्कीं मकुन तगाफिल दराय नैना बनाय बतियां । कि ताबे हिजरां नदारम ऐ जां न कभू गाहे लगाये छतियां ॥ चो शमए सोजां चोजर्रः हैरां हमेशः गिरियां ब इश्के आं मह । न नींद नैना न अङ्ग चैना न आप आवैं न भेजे पतियां ॥ शबाने हिजरां दराज चूं जुल्फो रोजे वस्लश चो उम्र कोतह । सखी पिया को जो मैं न देखूं तो कैसे काटूं अँधेरी रतियां ॥ यकायक अज् दिल दो चश्म जादू बसद फरेबम बेबुर्द तस्कीं । किसे पड़ी है जो जा सुनावे पियारे पिउ को हमारी बतियां ॥ बहक्के रोजे विसाले महशर कि दाद मारा फरेब खुसरो । लुभाय राखूं तू सुन ये साजन जो कहने पाऊँ दो बोल बतियां ४६

गजले जफर ।

न बोसा देना आता है न दिल बहलाना आता है । तुझे तो ऐ बुते काफिर फकत तरसाना आता है ॥ बिछा कर दाम गेसू रुख प वह सैयाद यों बोला । यह फन्दा वह है जिसमें मुर्गेदिल बेदाना आता है ॥ दिखा कर दस्त रङ्गीं बाम पर वह यों लगा कहने । अरे हटजा सरक जा दूर हो बेगाना आता है ॥ जो तुम हँसने में हो कामिल त मैं रोने में हूं मश्शाक । तुम्हें

बिजली गिराना हमको मेह बरसाना आता है॥ सुराही कह-कहा भरती है मीना मुस्किराता है। हमारा यार जिस दम जानिबे मयखाना आता है॥ गले में तौक बेड़ी पांव में लड़के लिये पत्थर। अजायब शान से ऐ बुत तेरा दीवाना आता है॥ पकड़ कर नब्ज को मेरी तबीबे अक्ल यों बोला। जफर यह इश्क का मुझको नजर दीवाना आता है॥ ४७॥

गजले गोया।

हर रविश खाक उड़ाती है सबा मेरे बाद। होगई चोरही गुलशन को हवा मेरे बाद॥ कितने दिन यार ने शाना न किया मेरे बाद। क्या परेशान रही जुल्फेदुता मेरे बाद॥ खूं मेरा कफके लगाना न हिना मेरे बाद। दस्तरङ्गी न हो अङ्गुश्तनुमा मेरे बाद॥ कोइ लाशे प मेरे आ न फिरा मेरे बाद। उस्तुखां खाने भी आया न हुमा मेरे बाद॥ कत्ल से अपने बहुत खुश हूं वले यह गम है। दस्ते कातिल को बहुत रञ्ज हुआ मेरे बाद॥ ठोकरें सर मेरा खाता न फिरा किस किस की। कौन है दोस्त कि दुश्मन न हुआ मेरे बाद॥ सङ्ग से फोड़ेंगे सर जाम जो मैं मस्त हुआ। काट डालेगी सुराही भी गला मेरे बाद॥ था दमे कत्ल यही ध्यान न छोड़ूं उसको। खूं भी कातिलही की जानिब को बहा बहा मेरे बाद॥ उस्तुखां मेरी सगे यार तलक पहुंचा दे। इतना एहसान करे मुझ प हुमा मेरे बाद॥ सदमए तेग से और फुर्त नजाकत के सबब। पहिले मैं गिर पड़ा और यार गिरा मेरे बाद॥ न रही बाद मेरे नामः औ पैगाम की रस्म। खाक उड़ाती फिरी गलियों में सबा मेरे बाद॥ क्या हुआ गम न किया उसने मेरे मरने का। उसका गेसू तो परेशान

रहा मेरे बाद। चाक करता हूं इसी गम से कफन मरकद में। खुले रहते हैं तेरे बन्दे कबा मेरे बाद॥ मुझसा बदनाम कोई इश्क में पैदा न हुआ। हां मगर कैस का कुछ नाम हुआ मेरे बाद॥ उस्तुखां को न जला दीजियो अय आतिशे गम। था के मायूस न फिर जाय हुमा मेरे बाद॥ तेरे आने की दुआ मांगी है अव्वल मैंने। साकिया हाथ सबू का भी उठा मेरे बाद॥ उठ गया सफहए हस्ती से नगीं की सूरत। न रहा मैं तो मेरा नाम रहा मेरे बाद॥ आखिर उसने मेरी मिट्टी का बनाया तोदा। कोई तीरों का निशाना न हुआ मेरे बाद॥ वलवला जोशे जुनूं का था मुझी तक गोया। नजर आया न कोई आ-शिक़:पा मेरे बाद॥ ४८॥

गजले नजीर।

दिल कहीं मेरा गिरफ़्तार हुआ चाहता है। फिर मुझे इश्क का आजार हुआ चाहता है॥ वह तो परदे से निकलता नहीं बाहर ऐ दिल। जिसका तू तालिबे दीदार हुआ चाहता है॥ देख लेने दो मुझे और भी यारो उस को। बन्द अब रौजने दीदवार हुआ चाहता हैं॥ बातें करता है वो रुक रुक के खुदा खैर करे। यारो हम पर सितमे यार हुआ चाहता हैं॥ रोज गुल खाता हूं फुरकत से तेरी सीने पर। सीना अब तख्तए गुलजार हुआ चाहता है॥ रात सब वस्ल की खफगी में कटी हाय नजीर। दिन जुदाई का नमूदार हुआ चाहता हैं॥ ४९॥

गजले नूरशाह।

हाले फुरकत क्या लिखूं तुम आप आ कर देख लो। वर नहीं तुझको मेरे प्यारे बुला कर देख लो॥ बेकरारी दिल की

मेरे देखने मञ्जूर हो । तो सिर्फ सीमाब थोड़ासा मँगाकर देख लो । आप खुल जावेगी मेरी इज़्तराबी आप पर । हाथ में अपने गुले नरगिस उठाकर देख लो ॥ अख़्तर को आप कर कम जानते हैं अब्र से । तो मुक़ाबिल अब्र के मुझको बुला कर देख लो ॥ आप बिन सोज़ों व गिरियां किस तरह कटती है रात । शमए मोमी अञ्जुम में अपने जला कर देख लो ॥ मूबमू हाले परेशां तुम अगर देखो मेरा । आइनाख़ाने में अपनी ज़ुल्फ़ आकर देख लो ॥ आपके बिन नूर की है शक्ल अब मैं क्या कहूं । कैस की तस्वीर का नक़शा खिँचा कर देख लो ॥ ५० ॥

ग़ज़ले ज़फ़र ।

पसे मर्ग मेरी मज़ार पर जो दिया किसी ने जला दिया । उसे आहे दामने बाद ने सरे शामही से बुझा दिया ॥ मेरी आंख झपकी थी एक पल वोंहीं दिल ने कहा कहीं उठ के चल । दिले बेक़रार ने आनकर मुझे चुटकी लेके जगा दिया ॥ दमे ग़ुस्ल के मेरे पेशतर कहा हमदमों ने यह सोच कर । कहीं जाय उसका न जी दहल मेरे लाशे पर से हटा दिया ॥ मेरी आशक़ी का मचा था शोर कोई चलके देखो जुनूं का ज़ोर । वह जो एक कोना उजाड़ था उसे जाके मैंने बसा दिया ॥ शबे वस्ल योंहीं गुज़र गई जो अकेला पाया था यार को । कभी पा दबा के सुला दिया कभी बोसा लेके जगा दिया ॥ कहा नामःबर ने जवाब दो ख़ते शौक़े आशिक़े ज़ार का । वोंहीं ख़त को आग में डाल कर कहा ख़त को कहना जला दिया ॥ कहीं साया था कहीं नूर था कहीं मूसा था कहीं तूर था । वो तो ख़ुद नशे में चूर था बेख़ुदी का जिल्वा दिखा दिया ॥ मुझे ह-

फ़न कर चुकी जिस घड़ी उसे जाके कहना कि भी परी। वह जो तेरा आशिके जार था तहे खाक उसको दबा दिया॥ पर मजारत मेरे ऐ जफर पढ़े फातिहा कोई आन कर। वह जो टूटी कब्र का था निशां उसे ठोकरों से मिटा दिया॥ ५१॥

गजले गाफिल।

आवे सब्जाह:नशीं कैस हुआ मेरे बाद। न रही दश्त में खाली मेरी जा मेरे बाद॥ मुंह पै ले दामने गुल रोएँगे मुर्गाने चमन। बाग में खाक उड़ावेगी सबा मेरे बाद॥ अब तो हँस हँस के लगाता है वह मेंहदी लेकिन। खूं रुलावेगा उसे रङ्ग-हिना मेरे बाद॥ मैं तो गुलजार से दिलतङ्ग चला गुञ्च:रविश। मुझको क्या फिर जो कोई फूल खिला मेरे बाद॥ वह हवाख्वाहे चमन हूं कि चमन में हर सुबह। पहले मैं आता हूं और बादे-सबा मेरे बाद॥ मेरेही जमजम:सञ्जी से चमन था आबाद। किया सैयाद ने एक एक को रिहा मेरे बाद॥ कत्ल तो करते हो पर खूबही पछताओगे। मुझसा मिलने का नहीं अहलेवफा मेरे बाद॥ बगैगुल लाई सबा कब्र प मेरी न नसीम। फिर गई ऐसी जमाने की हवा मेरे बाद॥ गिर पड़े आंख से उसकी भी यकायक आंसू। जिक्र मजलिस में जो कुछ मेरा हुआ मेरे बाद॥ यह मेरा बाद के ऐ दोस्तो लटका दीजो। ता न होवे कोई मजबूरे बला मेरे बाद॥ शर्त यारी यही होती है कि तूने गाफिल। भूल कर भी न मुझे याद किया मेरे बाद॥ ५२॥

गजले जफर।

सोते हो मेरे साथ तो हट कर न सोइये। यह साथ सोना क्या जो लिपट कर न सोइये॥ डरता हूं लग न जायकहीं नाक

को नज़र। मुंह पे नक़ाब श्रब को उलट कर न सोइये॥ सोते ही जो ख़्वाब में क़ाफ़िला आंखों निकल गया। होशोके साथियों को झपट कर न सोइये॥ जो हैं फ़राग़दिल उन्हें कहती है मेरे क्यों। है यां जगह कुशादा सिमट कर न सोइये॥ ख़्वाबे श्रदम से पहले श्रभी इश्क़ चाहिये। क्यों रखिये सुबह पर श्रभी कँट कर न सोइये॥ है कुछ तेरा कहना यह बिस्तर प होके गर्म। गर्मी में श्राप मुझसे चिमट कर न सोइये॥ झगड़ों में श्राशिक़ों के जो सोना कहां ज़फ़र। जब तक कि ख़ूब इनसे निबट कर न सोइये॥५३॥

ग़ज़ले ज़फ़र।

तेरा बोसा दिलो जां बेचकर लेते तो हम लेते। यह सौदा कौन ले सकता श्रगर लेते तो हम लेते॥ पड़ी थी क्या ग़रज़ उस को जो आता वह श्रयादत को। दिले बीमार श्रपने की ख़बर लेते तो हम लेते॥ हिना तेरी हुई पाबोस क्यों रश्क श्राय है हमको। श्रगर तेरे क़दम ऐ फ़ितनःगर लेते तो हम लेते॥ यह ग़म जे मुझसे कहते हैं तेरा दिल कौन ले सकता। खुशी से लेते श्रौर या छीनकर लेते तो हम लेते॥ निकलता काम क्या श्रौर तू किसी के काम क्या श्राये। मगर कुछ काम ऐ श्राहेजिगर लेते तो हम लेते॥ किया ग़ैरों ने क्यों बदनाम कह कर बेवफ़ा तुझको। यह तेरा नाम ऐ बेदादगर लेते तो हम लेते॥ किसे देता वह साक़ी साग़रे मय हाथ से श्रपने। श्रगर क़िसमत से श्रपनी श्रय ज़फ़र लेते तो हम लेते॥ ५४॥

ग़ज़ले सबा।

यही श्रालम रहे बस मौसिमे गुल का ज़माने में। रहें श्राबाद बुलबुल श्रपने २ श्राशियाने में॥ क़यामत है किसी को प्यार

करना इस ज़माने में । कज़ा का सामना रक्खा हुआ है दिल लगाने में ॥ हमें गो रंज देके उलटा हमसे शिकवे करते हो । जवाब अपना नहीं रखते हो तुम बातें बनाने में ॥ बिनाये दैरो काबे का सबब क्या जानिये क्या है । नहीं है दख़्ल बन्दों को खुदा के कारख़ाने में ॥ ये खुदबीं हो के दिन दिन भर खुदआराइ में रहते हो । बसर होजाती हैं दो दो पहर ज़ुल्फें बनाने में ॥ कदम रख देख कर बहरे मुहब्बत में ज़रा ऐ दिल । ख़तर है डूब जाने का भी दरिया के नहाने में ॥ सदा जी चाहता है बस गरेबां चाक करने को । कभी राहत नहीं पाई फ़लक के शा-मियाने में ॥ ५५ ॥

तरजीहबन्द ।

ग़मि दूरी से जो जलता है अश्क आंखों से जारी है ।

दोहा । सजन सकारे जायँगे नयन मरेंगे रोय ।
बिधिना ऐसी रैन कर भोर कभी ना होय ॥ १ ॥

कहो लैली से अय प्यारी सुदह बख़्सत हमारी है ।

दो० । लकड़ी जल कोइला भई कोइला जल भौ राख ।
मैं बिरहिन ऐसी जली कोइला भई न राख ॥ २ ॥

जिगर तो जल चुका प्यारे मगर अब तन की बारी है ।

दो० । एक तो नयना मद भरे दूजे अञ्जनसार ।
ए बौरी कोउ देत है मतवारे हथियार ॥ ३ ॥

निगाहे यार जादू है या बंदी की कटारी है ।

दो० । कागा नयन निकास दूँ पिया पास ले जाय ।
पहिले दरस दिखाय के पाछे लीजो खाय ॥ ४ ॥

जमाले यार से कब आशिक़ों को आंख प्यारी है ।

दो०। अरे पपीहा बावरे आधी रैन न कूक।
धीरें धीरे सुलगती तू क्यों दीन्ही फूक॥ ५॥
अरे ज़ालिम तेरी आवाज़ ने आफ़त उठाई है।
दो०। जा बैरा घर आपने तू क्या जाने सार।
आशिक चर्ख़े किन किये बिन देखे दीदार॥ ६॥
मेरे इस दर्द की दारू से अफ़लातूं भी आरी है।
दो०। हम तो जोगी प्रेम के प्रेम हमारो देस।
सुधि नहिं पाई पीउ की तब लीन्हा यह भेस॥ ७॥
न था मालूम क़िस्मत में हमारी ख़ाकसारी है।
दो०। तन सूखो किङ्गड़ी भयो रगें सूख भई तार।
रोम रोम सुर उठत है बाजत नाम तिहार॥ ८॥
मेरी हर उस्तख़ां से भी यही आवाज़ जारी है।
दो०। देह सूख पिञ्जर भयो रक्त रहो नहिं मांस।
खाली जिउड़ा रहि गयो वाको भी नहिं आस॥ ९॥
अजल लारे ख़बर जलदी से हम पर मौत भारी है॥ ५६॥

ग़ज़ले जफ़र।

तने गिलखुर्दः को आशिक़ के जो कफ़नाइयेगा। थान अच्छा कोई फुलकारी का मँगवाइयेगा॥ दिल को समझाए मेरे कह दे यह नासिह से कोई। हमें क्या मुश्फ़िक़ेमन आमके समझाइयेगा॥ तुम किनारा जो लगी करने यह मालूम हुआ। अब किनारेही मुझे गोर के पहुँचाइयेगा॥ जब कहा मैंने कि है सजए ख़त आपका ज़ङ्ग। बोले क्या काम तुम्हें इससे मगर खाइयेगा॥ कितने दिल उलझे हुवे हैं कहीं खुल कर न गिरें। ज़ुल्फ़ को अपनी समझ कर अभी सुलझाइयेगा॥ डर के बस आ-

है सरशार से कहते हैं मेरो । देखियेगा कहीं अब आप न लड़खाइयेगा ॥ जब कहा मैंने कि हो तुम तो कोई आलिमकद् । तो वह कहने लगी हां आप न जल जाइयेगा ॥ दो गे तुम दामने मिज़गां को गर अपनी जुम्बिश । और भी आतिशेदिल को मेरी भड़काइयेगा ॥ जब कहा मैंने कि आज आएँ जो हो गोशय ज़ुल्फ़ । हँस के कहने लगी हां शाम को आज आइयेगा ॥ ऐ ज़फ़र लाए हो तुम कौन से कहा उनसे । खैर तो है कहो गुल क्या कहीं अब खाइयेगा ॥ ५७ ॥

गज़ले आतिश ।

निकलती किस तरह है जाने मुज़्तर देखते जाओ । हमारे पास से जाओ तो फिर कर देखते जाओ ॥ नसीमे नौबहारी की तरह आए हो गुलशन में । तमाशाए गुलो सर्वो सनोबर देखते जाओ ॥ जिधर जाते हो हर घर में से यह आवाज़ आती है । मसीहा हो तो बीमारों को दम भर देखते जाओ ॥ क़दम अन्दाज़ से बाहर हुए जाते हैं साहब के । सितम रफ़्तार में करती है ठोकर देखते जाओ ॥ मिलें वह राह में अबकी तो कहता हूँ कि हो जो हो । दिखादो घर मुझे अपना मेरा घर देखते जाओ ॥ ख़िरामे नाज़ में आशिक़ से हो इसका इशारा भी । कुछ अपनी तेगे अबरू का भी जौहर देखते जाओ ॥ हमेशा मस्ताना चलते हो कदम मस्ताना पड़ते हैं । खुदा के वास्ते नकूरे पयम्बर देखते जाओ ॥ कोई उनसे कहे मुंह फेर कर जो क़त्ल करते हो । तड़फता है तुम्हारा कुश्ता क्योंकर देखते जाओ ॥ निगाहे लुत्फ का शायक है तहतो फौक का आलम । कभी नीचे नज़र हो गाह ऊपर देखते जाओ ॥ कभी छिपजाती है

अबस कभी जुल्फ़िश है मिजगां को। दिखाती हो हमें ग़मग़ीरी खंजर देखने जाओ। नक़ाब एक दिन उलट कर तुमने यह मुंह से न फ़रमाया। जमाले आफ़ताबे अर्शःपरवर देखते जाओ॥ न फेरो उससे मुंह आतिश जो कुछ दरपेश आजावे। दिखाता है जो आंखों को तुकद्दर देखते जाओ॥ ५८॥

गज़ले गोया।

कहो उस बर्क़वश से आज लाजिम साथ जाना है। जनाजे पर हमारे अब्रे रहमत शामियाना है॥ मिसाले नक़्शे पा लाखों पड़े रहते हैं मर उस जा। मगर क़ातिल तेरा गंजे शहीदां आस्ताना है॥ गरेबां फाड़ कर दस्ते जुनूं से होगी कब फ़ुरसत। अभी तो दामने सहरा के भी पुर्जे उड़ाना है॥ चलूंगा सर के बल शौके शहादत दस्तगीरी में। जहां तलवार चलती है उसी कूचे में जाना है॥ नहीं मद्दे नजर उस नावकअफ़गन को जो बरबादी। हमारी खाक का शायद उसे तोदा बनाना है॥ चला है दागे सोजां लेके दिल जानां के कूचे में। अहबाब साथ लेकर जानिबे अबल रवाना है॥ झुकाए देते हैं आगे तेरे सर हम जो ऐ क़ातिल। जबाने तेग से क़िस्मत के लिक्खे को पढ़ाना है॥ दुपट्टा आसमानी ओढ़ कर यह कौन आता है। कि पीछे पीछे मिस्ले सायः गरदूं भी रवाना है॥ न शरमाओ कहो तो छोड़दूं मिजगां को चिक्वन को। तुम आबे ऐन वादे पर हमें आंखें बिछाना है॥ उलझते हैं जो बाल उसके तो मेरा दम उलझता है। यहां है दर्द आंबे में जो वां जुल्फ़ों में शाना है॥ यह है मिजगां की जुल्फ़िश आह या है नावकअन्दाजी। अजिब है यह कमाने यार या तिउड़ी चढ़ाना है॥ लिया जिसने हमारा

नाम मारा बेगुनह उसको। मिथां जिसने बताया बस वो तीरों का निशाना है। दिलेअफसुर्दः में एक थाहे खूबां का तसव्वुर है। मेरे वीराने में गोया हुमा का आशियाना है॥ ५८॥

गजले जफर।

कातिल से हमें अपने शहादत तलबी है। यां आबे दमे तेग यहां तिश्नः लबी है॥ आराम मुझे दिन को न देते हो न शब को। क्या कहिये तुम्हें हजरते दिल बेअदबी हैं। इस दौर में क्या खाक करे ऐश कोई राह। ने जाम न साक़ी न शराबे इनबी है॥ है मरहमे काफूर वहां दागे जिगर पर। एजाज़ से सीने में यहां आग दबी है॥ दिल तोड़ जफ़र का न तू अब संगेजफ़ा से। अय काफ़िरे बदकैश यह शीशा जलबी है॥ ६०॥

गजले जफर।

पास जनां के कहा किसने कि जाना मना है। दिल को पर उस दुशमने जां से लगाना मना है॥ होके सरकश गिरपड़ा फ़व्वारा आखिर सर के बल। झुक के चलना चाहिये यां सर उठाना मना है॥ गुल खिलाया ताजा यह खूने शहीदे नाज ने। हों न जबतक फूल उनको पान खाना मना है॥ करके मुंह उस दर को आशिक आह खींचूं किस तरह। तीर क़िबला की तरफ़ अय दिल लगाना मना है॥ अपने जख्मो से कहा हंस हंस के जख्मो ने तेरे। आज हैं शादी का दिन आंसू बहाना मना है॥ इश्क़ के मजहब में वाजिब है बहाना अपना खूं। खूं बहे का जिक्र पर क़ातिल से लाना मना है॥ इश्क़ ने दिल को जफ़र इतने दिये क्यों आबले। यह वो है बीमार जिसको आबे दाना मना है॥ ६१॥

नरजीहवन्दे जामिन।

जबानी हाल थीं कहियो तू जाकर नामःवर पहिले।

हमारे चाहो गिरियां की तू कर दीजो खबर पहिले॥

दोहा। पंख नहीं बिन पंख हों केहि बिधि उड़ के जाउँ।

दरस पियारे पीउ को बिन पर कैसे पाउँ॥ १॥

मेरे सैयाद जालिम ने उखेड़े बालो पर पहिले॥

दो०। सजन सकारे जायँगे नयन मरेंगे रोय।

बिधना ऐसी रैन कर भोर कभी ना होय॥ २॥

सुबह गर यार जावेगा तो अपना है सफ़र पहिले।

दो०। भँवरा लोभी फूल का कली कली रस लेय।

कांटा लागा प्रेम का हेर फेर जिय देय॥ ३॥

तेरी उलफ़त के कूचे में नफ़ा पीछे जरर पहिले।

दो०। वह गए बालम वह गए नदी किनार किनार।

आप तो पार उतर गए हमैं छोड़ मँझधार॥ ४॥

सितमगर थी तुझे लाजिम मेरी लेनी खबर पहिले।

दो०। नयना नेह लगाय के कल न परत दिन रैन।

तिल तिल प्रीति बढ़ाय के अब लागे दुख दैन॥ ५

लगावे आंख जो मुझसे करे जाकर सबर पहिले।

दो०। आओ प्यारे नयन में मूंदि पलक तोहि लेउँ।

ना मैं देखूं और को ना तोहि देखन देउँ॥ ६॥

करूँ खिदमत मैं आंखों से बिठा लूं चश्म पर पहिले।

दो०। आगे के दिन पाछे गए हरि सों कियो न हेत।

अब पछताये होत का चिड़िया चुग गई खेत॥ ७

अकल जाती है इस कूचे में अय जामिन गुजर पहिले॥६२॥

ग़ज़ले सिराज।

ख़बरे तहैय्युरे इश्क़ सुन न जुनूं रहा न परी रही। न तो तू रहा न तो मैं रहा जो रही सो बेख़बरी रही॥ वह अजब घड़ी थी कि जिस घड़ी लिया दर्स नुस्ख़ए इश्क़ का। कि किताब अक़्ल की ताक़ पर जो धरी थी वोंहीं धरी रही॥ शहे बेख़ुदी ने अता किया मुझे अब लिबासे बरहनगी। न ख़िरद की बख़िय:गरी रही न जुनूं की पर्द:दरी रही॥ निगहे तग़ाफ़ुले यार का गिला किस ज़बां से बयां करूँ। कि शराबे सदक़द: आरज़ू ख़ुमे दिल में थी सो भरी रही॥ चली सिम्ते ग़ैब से एक हवा जो चमन सुरूर या जल गया। मगर एक शाख़े निहाले ग़म जिसे दिल कहें सो हरी रही॥ मेरे जोशे हैरते हुस्न का असर इसक़दर से यहां हुआ। न तो आइने में,जिला रही न परी में जिल्व:गरी रही॥ किया ख़ाक आतिशे इश्क़ ने दिले बेनवाय सिराज को। न ख़तर रहा न हज़र रहा जो रही सो बेख़तरी रही॥ ६२॥

ग़ज़ले जुरअ़त।

बेकली ऐसी गया है सौंप वह गुलरू मुझे। कल नहीं पड़ती किसी करवट किसी पहलू मुझे॥ ज़ख़्म एक शमशीर का सा दिल प लग जाता है आह। याद आजाती है जब वह जुल्फ़िशे अबरू मुझे॥ नातवां हूं बस्कि फ़ुरक़त में तेरी चूं बर्गे काह। अब सबा फेरे है इस पहलू से उस पहलू मुझे॥ रोते रोते मैं हूं हैरां है मुझे क्या होगया। जो नज़र आता नहीं आंखों में एक आंसू मुझे॥ जब तलक देखूं न तेरी शक्ल कल पड़ती नहीं। सच बता तूने किया है यार क्या जादू मुझे॥ बात

मैं मेरी तो अब तक फर्क कुछ आया नहीं । चाहता है क्यों किया इसका तू अब हरसू मुझे ॥ क्या कहूं गुरबत में इस सैयाद कातिल का गिला । दाम से छोड़ा तो छोड़ा तोड़ कर बाजू मुझे ॥ ६४ ॥

गजले सुखराम जी ब्रह्मचारी।

शरण हरिभक्ति की ऊधो अब आए जिसका जी चाहे । करोरों जन्म के पातक मिटाए जिसका जी चाहे ॥ भटकने की नहीं हम गोपियां इस ज्ञान निर्गुन में । बिचारे क्या हो तुम ऊधो भुनाए जिसका जो चाहे ॥ नहीं मिलने का मनमोहन बिना हरि प्रेम सुमिरन के । जती हो गेरुए कपड़े रँगाए जिसका जी चाहे ॥ पियासी कृष्ण दरसन की है जान आई है ओठों पर। धरम ले प्रेम का प्याला पिलाए जिसका जी चाहे ॥ हमारा मन तो बस लौलीन है उस मोहनी छब पर। यह जोग और ज्ञान ऐ ऊधो सुनाए जिसका जी चाहे ॥ कहा ललिता ने मनमोहन से राधे रूठ बैठी है । उन्हें अब पांव पड़ पड़ कर मनाए जिसका जी चाहे ॥ चला है श्याम को ले निर्दई अक्रूर मथुरा को। सखी जो दे व या आंसू बहाए जिसका जी चाहे ॥ जो साधू जन है हर एक सांस है रामस्मरन उनको । यह दौलत उम्र की नांदा गँवाए जिसका जी चाहे ॥ पुजाने के लिये जो ब्रह्मज्ञानी बन के बैठे है । वो पाखण्डी हैं सुखराम आजमाए जिसका जी चाहे ॥ ६५ ॥

गजले रसा।

वह मय दे साकिया कदहे आफताब में । आजाय जिस्से फूल की खुशबू शराब में ॥ डाले हुए हैं मुंह प वह आंचल हि-

जाब में। गोया कि आफताब छिपा है नकाब में॥ पानी छिपा जमीं में मेरी आहे गर्म से। पायाब अश्क होगए चश्मे सहाब में॥ जब से तेरे अवोंके यमन सुर्खरू हुआ। तेरेही रश्क ने दी है ये रङ्गत गुलाब में॥ चेहरे में मेरे मह के मुकाबिल हो क्या मजाल। यह रङ्गो बू कहां है गुले आफताब में॥ क्योंकर मैं यह कहूं कि है गुञ्चे का हमसिबाह। जाए सखुन नहीं दहने लाजवाब में॥ लिक्खे जवाबे नामा तो हर्गिज न मानियो। कासिद उसी को लाइयो खत के जवाब में॥ देखो चमक जो उसके रुखे लाजवाब की। एक तीरगी हुई नजरे आफताब में॥ उम्मेदे वस्ल किसको है बस अपनी जीस्त में। उसने जवाब साफ लिखा है जवाब में॥ जाहिद हमी हैं मूजिबे आमुर्जगीए हक। रहमत छिपी है उसकी हमारे हजाब में॥ उस रश्के मेह्र का मैं मुकिितला हूं ऐ रसा। जिसने दिया है दाग दिले माहताब में॥६६॥

गजले अलीगौहर।

उम्र सब मुफ़ में खोया किये नादान रहे। जो मैं पाया उसे जिसके लिये हैरान रहे॥ खबर उस यार को जल्दी से तू ला दे कासिद। काम हो मेरा तेरा उम्र भर एहसान रहे॥ हाय तिस पर भी न की कद्र हमारी तू ने। दिल से मौजूद रहे जान से कुर्बान रहे॥ हम तुम्हें छोड़के जाते हैं सुए मुल्के अदम। किसको सौंपें तुम्हें खुदाही निगहबान रहे॥ यों तो मुंह देखे की होती है मुहब्बत सबको। जब मैं जानूं कि मेरे बाद मेरा ध्यान रहे॥ हम दुआएँ तुम्हें देते हैं हजारों दिल से। साया हक का रहे मुश्किल तेरी आसान रहे॥ कौड़ियाला मेरी तुरबत प लगाना यारो। नागिनी जुल्फ के काटे की यह पहिचान

रहे ॥ बाद मरने के मेरी कब्र प र[illegible] [illegible] । कुश्तए अबरुए खमदार की पहिचान रहे ॥ हक त[illegible] ये तमन्ना है अली-गौहर को । तन्दुरुस्ती रहे ईमान रहे जान रहे ॥ ६७ ॥

गजले अमीर ।

बाइसे वहशत हुई बेएतनाई आपको । जिनके चुनवाने ल-गी हमसे जुदाई आपको ॥ आपकी जाने बला क्योंकर कटी फुर्कत की रात । दिल तड़फ कर रह गया जब याद आई आ-पकी ॥ बात करना हमसे और आंखें लड़ाना गैर से । देखली बस वाह मुश्फ़िक़ पारसाई आपकी ॥ आशिक़ों के दिल प गिर-ती हैं हजारों बिजलियां । देखकर सीने प जञ्जीरे तिलाई आ-पकी ॥ आपकी बातों का रहता है मुझे हरदम खयाल । जब कोई बोला सदा कानों में आई आपकी ॥ खुद गला काटूं मुझे खुञ्जर इनायत कीजिये । देखिये दुख जायगी नाजुक कलाई आपकी ॥ जान देदो या पसे दीवार सर पटको अमीर । उनके कूचे तक न होवेगी रसाई आपकी ॥ ६८ ॥

गजले मद्दआर ।

सुना है उनको मञ्जूरे नजर तेग आजमाई है । यहां शौके शहादत ने मेरी गर्दन झुकाई है ॥ अरे ओ बेवफ़ा तुझ पर त-बीअत जबसे आई है । बजाए रूह क़ालिब में तेरी उलफ़त समा-ई है ॥ सरे मरक़द जो आते हैं तो कहते हैं खुदा बख्शे । हमा-रे इश्क़ में इसने बहुत ईजा उठाई है ॥ अजब हैरान हूं ऐ जान दिल किसके करूं सदके । मसीहा ने बुलाया है अजल लेने को आई है ॥ सबब खुलता नहीं आजुर्दगी का सख्त हैरां हूं । उता-रेंगे किसे नजरों से क्यों तिउड़ी चढ़ाई है ॥ लहू आता है आं-

खों से खयाबों तेगे अबरू में। दिले नादां ने मेरे क्या बुरी तल-वार खाई है॥ जनाजा दर प रख कर यार से चिल्ला के यों क-हना। जिसे तुम कोसा करते थे यह उसको लाश आई है॥ फिसलती है निगह अपनी यह गालों पर सफ़ाई है। मैं उन हा-थों के सदके जिसने यह सूरत बनाई है॥ लिये जाती है फिर बेताबिये दिल खींच कर हमको। क़सम नाहक़ दरे माशूक़ तक जाने की खाई है॥ ६८॥

गज़ल।

फंस गया है दिल मेरा उस बेखबर से देखना। जो समझ-ता है गुनह सीधी नजर से देखना॥ सर झुका लेने दो आशिक़ को अभी जल्दी है क्या। तेग़ क्यों खींचो मियां तुमने कमर से देखना॥ दोस्तो कह दो न लिपटे मुझसे क़ातिल वक़्ते मर्ग। खून टपकेगा मेरे ज़ख्मे जिगर से देखना॥ मर गया आशिक़ तुम्हारा लो हुआ किस्सा तमाम। कोई दम में जायगा लाशा इधर से देखना॥ कबसे हम मुश्ताक़ बैठे हैं तेरे दीदार के। आज हमको भी जरा तिरछी नजर से देखना॥ क्या कहूं क-म्बख्त क़ासिद अब तलक आया नहीं। दोस्तो कोई भी आता है उधर से देखना॥ वां मलो मेंहदी रक़ीबों ने तुम्हारे हाथ में। यां लगा बहने लहू इस चश्मेतर से देखना॥ सुन चुके नाले मेरे जब वह तो यों कहने लगे। यह सदा रोने की आती है किधर से देखना॥ ७०॥

गज़ले नासिख।

दिल उसको दिया हमने तकसीर इसे कहते हैं। मारा ग़मे फ़ुरक़त ने ताज़ीर इसे कहते हैं॥ हम ख्वाब में वां पहुंचे

तहोर इसे कहते हैं। वह नींद से चौंक उठे तकदीर इसे कहते हैं॥ जो मुझसे गुरेजां था कल उसको मैं घर अपने। बातों में बना लाया तकरीर इसे कहते हैं॥ मैं खाक हुआ मर कर वह फातिहे को आया। अकसीर इसे कहते हैं तहरीर इसे कहते हैं॥ दीवानी सी जंगल में फिरती है पड़ी लैली। अब्वे दिले आशिक की तासीर इसे कहते हैं॥ पी जबकि शराब उसने कुन्दन सा बदन उसका। सोना इसे कहते हैं अकसीर इसे कहते हैं॥ शक्ल उसकी तसव्वुर ने खींची वरके दिल पर। नक्काश इसे कहते हैं तस्वीर इसे कहते हैं॥ बेजुर्म किया बिस्मिल लाखोंहि जवानों को। सफ्फाक इसे कहते हैं बेपीर इसे कहते हैं॥ महफिल से उठाने का जब कस्द किया उसने। दानिस्तः मैं गश लाया तज़वीर इसे कहते हैं॥ सौ कत्ल किये खूं है अबरू में न मिजगां में। शमशीर इसे कहते हैं और तीर इसे कहते हैं॥ जितना वह गुरेजां है दर पे दिले नालां है। सैयाद इसे कहते हैं नखचीर इसे कहते हैं॥ अञ्जाम को कुछ सोचो क्या किस्स बनाते हो। आबाद करो दिल को तासीर इसे कहते हैं॥ है पेशेनजर अपने हर वक्त तसव्वुर में। परियों को बस ऐ नाहिख तसखीर इसे कहते हैं॥ ७१॥

गजले हैदर।

बजाहिर तो लगावट हमसे वह हर बार करते हैं खुदा जाने मगर दिल से वह किसको प्यार करते हैं॥ अभी कम सिन हैं वादे का नहीं है एतबार उनके। कभी इकरार करते हैं कभी इन्कार करते हैं॥ यह हैरत है सवाले वस्ल जब होगा तो क्या होगा। अभी तो एक बोसे पर भी वह तकरार करते

हैं ॥ खुदा है पाक और खुशवक्त अपना फज़्ल करता है। हमा-री मुश्किलें हल हैदरे कर्रार करते हैं ॥ ७१ ॥ गज़ल।

बड़ा अन्देशा है देखें किधर फुर्कत में जाते हैं। खुदा पह-ले बुलाता है कि वह पहले बुलाते हैं ॥ अभी तो आस्मां तक यह मिसाले तीर जाते हैं। अब आगे देखिये नाले कहां वस्ते लगाते हैं ॥ फिरिश्तो हट के बैठो गुम्बदे गर्दूं गिराते हैं। किसी के इश्क में नाले की ताकत आजमाते हैं ॥ सुए गोरे ग़रीबां सैर को जिस दम वह जाते हैं। सदा कबरों से आती है यही मुर-दे जिलाते हैं ॥ हमारे मरने का सदमा न करना चैन से रहना। बहुत नाजुक तबीयत हो तुम्हें समझाए जाते है ॥ हमें क्या चौधवीं का चांद यह गर्दूं दिखाएगा। हम ऐसे तरत में तो एक हसीं का मुंह दिखाते है ॥ अभी रोका था इन अश्कों को फिर बाहर निकल आए। यह लड़के क्या किसी की बात को खातिर में लाते हैं ॥ जहां था बैठना मुश्किल वहां से उठना मुश्किल है। जब उठता हूं अंगूठे से मेरा दामन दबाते हैं ॥ अजब इस आशिकी का उलटा पुलटा कारखाना है। हमीं हैं रूठते उनसे हमीं उलटा मनाते हैं ॥ खुदा हाफ़िज तू रखियो उनको इस नाजुक कलाई का। कि दस्ते नाजनीं से वह मेरा लाशा उठाते हैं ॥ मुसल्मानों की बन आएगी काफ़िर जक्र खा-एंगे। सुना है मसहफे रुख़ से वह जुल्फों को हटाते हैं ॥ गले कटते हैं लाखों ही अता सब खून होता है। मिसी लब पर लगा कर जब कभी वह पान खाते हैं ॥ ७२ ॥

गज़ले आतिश।

अदम से जानिबे हस्ती तलाशे यार में आए। हवाए गुल

में हम किस वादियेपुरखार में आये ॥ न पीन ऐ तुर्क वेरहम जवदए खमदार में आये। लगा खामों का अब्बा बह जहाँ तलवार में आये ॥ उठाए वारे इश्क इस आलमे गद्दार में आये। कहाँ से हम कहाँ पकड़े हुए वेगार में आये ॥ हमारा है वही उनके लबे शीरीं से खालों का। मिलाने को नमक हम परवते दीदार में आये॥ न दी बू एक ने ऐ गुलबदन तेरे पसीने की। हजारों इत्र खिंचकर तबलए अत्तार में आये ॥ खरीदारों में आशिक अपने नामों को हैं लिखवाते। तमाशा है वह यूसुफ बनके हैं बाजार में आये ॥ रहा ऐ बादशाहे हुस्न तू जिस किस्से आलो में। हुमा बहरे सआदत सायए दीवार में आये ॥ वजू होते हैं मय से खिश्ते खुम पर शुक्र के सिजदे। नमाजी लोग भी हैं खानए खुम्मार में आए॥ किया है हुस्न ने सुल्तानी खूबां चाहिये तुमको। मिले दाद उनको फरयादी जो हैं सरकार में आये ॥ उड़े होश अपने नज्जारे में ऐकाश तेरी सूरत से। गश आया जब मकामे नरगिसे बीमार में आये ॥ जवानी है कहाँ अब यार की वह सूरते तिफली। हुए ढँग औरही रँग औरही रुखसार में आये ॥ बजा करते हैं महवी एहतिमाले सिद्क कज्ब आतिश। बहुत से मुखतलिफ अहवाल भी अखबार में आये ॥ ७४ ॥

गजले मूनिस।

जिसको लबे रङ्गीं प जमाना नहीं अच्छा। याकूत पर ये दाग लगाना नहीं अच्छा॥ क्योंकर कहूं किस मुंह से कि आना नहीं अच्छा। जानां मगर आकर तेरा जाना नहीं अच्छा ॥ आती है चमन में मेरे गुलरू की सवारी। जो बादे सबा खाक

उड़ाना नहीं अच्छा ॥ रखता हूं जब मैं सामने दिल तीरे मिज: से। मुंह फेर के कहता है निशाना नहीं अच्छा ॥ जुल्फें न निकालो अभी होजायगा धोखा। हुशियार को दिवाना बनाना नहीं अच्छा ॥ लिखना इसी मिसरे को मेरे सङ्गे लहद पर। मौत अच्छी मगर दिल का लगाना नहीं अच्छा ॥ मूनिस को गुलिस्तां में अभी आंख लगी है। बुलबुल यह तेरा शोर मचाना नहीं अच्छा ॥ ७५ ॥ गजले मूनिस।

बहार आई है भरदे बादए गुलगूं से पैमाना। रहे लाखों बरस साकी तेरा आबाद मैखाना ॥ मुझे आना मिले क्योंकर तेरी महफिल में जानानां। मेरी सूरत फकीराना तेरा दर्बार शाहाना ॥ निभे क्योंकर हमारे उस परीपैकर से याराना। वह बे परवा मैं सौदाई वह सङ्गोदिल मैं दीवाना ॥ गुजर यारब गुलिस्तां में हुआ है किस शराबी का। कि शाखें झूमती हैं नाल:ए बुलबुल है मस्ताना ॥ हमारे औ तुम्हारे इश्क का शुहरा है शहरों में। कोई सुनता नहीं अब लैलियो मजनूं का इफसाना ॥ उसी इश्केपरी पर जान देता हूं मैं दीवाना। अदा है जिसकी बांकी तिर्छी चितवन चाल मस्ताना ॥ रही है रात काम अब चलके लेटो बन चुकीं जुल्फें। हटा दो आइना जानूं से रख दो हाथ से शाना ॥ गिजाले दश्त बोले देख कर मजनूं को सहरा में। यह वहशी मर गया अब हो चुका आबाद वीराना ॥ गया है जब से वह गुल खानए वहशत है मैखाना। न मुतरिब है न साकी है न शीशा है न पैमाना ॥ बताऊं हाल क्या तुमको मैं अपने दीनो ईमां का। फकीरे मस्त हूं मूनिस मेरा मजहब है रिन्दाना ॥ ७६ ॥

गजले रसा।

नहीं हैं आये बिला वजह पान खाये हुए। किसी के कत्ल का बीड़ा हैं वह उठाए हुए॥ किसीद हम्र जबांसोज मूजिबे फितरत। यही हैं बैठे जो चुपके हैं सर झुकाए हुए॥ बुरा हो शर्म का मर कर भी न दीदार मिला। मेरे लहद प वह आये तो मुंह छिपाए हुए॥ बढ़ा है तख्ते सुलेमां से रुतबए ताबूत। कि मेरे लाशे को चलते हैं वह उठाए हुए॥ यही तो चाल है पामाल करने की साहब। चलो न हाथ से दामन अभी उठाए हुए॥ खुदा के वास्ते आंखों का सामना भी करो। रहोगी ता बकुजा दिल में मुंह छिपाए हुए॥ खड़े हैं देर से मुश्ताक तेग के हम भी। इधर भी हाथ खुदारा जरा बढ़ाए हुए॥ उलट के फेर गले पर छुरी मेरे जल्लाद। कि बाम पर हैं तमाशे को वह भी आए हुए॥ रसा अजब है तमाशा कि सब हैं पा बरकाब। मगर हैं बैठे बिला फिक्र घर बनाए हुए॥ ७७॥

फिर बहार आई जुनूं की फिर वही सागर चले। फिर जुनूं ताजा हुआ फिर जख्म दिल के भर चले॥ तिश्नए दीदार हूं उस अबरुए खमदार का। क्यों न गर्दन पर मेरे हक हक के यों खञ्जर चले॥ माल दुनियां वक्ते रेहलत सब रहा बालायताक। हम फकत बारे गुनह को दोश पर लेकर चले॥ खाकसारी ही है मूजिब सरबलन्दी की मेरे। काट डालूं सर अगर मजनूं मेरा तन कर चले॥ मौत पर मेरे फिरिश्ते भी हसद करने लगे। दोश पर अपने मेरा लाशा वो जब लेकर चले॥ दागे दिल फिर सूरते लाला मेरा ताजा हुआ। वह चढ़ाने के लिये जब फूल मरकद पर चले॥ खानए जञ्जीर से एक शोरो गुल बरपा हुआ।

दो क़दम भी जब दरे जिन्दां से हम बाहर चले ॥ दम लबों पर है तुझे मुतलक़ नहीं आता ख़याल। काश अब तो ख़ञ्जरे ख़ूंख़्वार गर्दन पर चले ॥ इस क़दर है ज़ोफ़े ताली हम प फ़ुरक़त में तेरी। बैठ जाते हैं अगर दो गाम भी उठ कर चले ॥ गर्दिशे क़िस्मत से हम मायूस होकर ऐ रसा। कूचए जानां से मिस्ले आस्मां फिर कर चले ॥ ७८ ॥

ग़ज़ले रैहा।

कोशिशें दर्याफ़्त जो जो किसी दिन श्याम से। क्या कभी वाक़िफ़ न थे वह राधिका के नाम से॥ डूब कर जमना में मर जावें तो कैसी बात हो। शर्म दुनियां की नहीं डरते नहीं इल्ज़ाम से ॥ जाके बृन्दाबन में रैहा ढूंढ कुञ्जे आफ़ियत। जा बजा कब तक फिरेगा गर्दिशे अय्याम में ॥ ७९ ॥

ग़ज़ले ज़ाहिर।

कहा था जो तूने फ़साद है तुम्हें याद हो कि न याद हो। मुझे कहना आपका याद है तुम्हें० ॥ तेरे दामे ज़ुल्फ़ से ऐ परी हुआ चाहता हूं मैं अब रिहा। रहो कुछ दिनों की मियाद है तुम्हें० ॥ क्यों है रञ्ज आप को इस घड़ी कि पयामे वस्ल के सुनते ही। कहा था कि दिल मेरा शाद है तुम्हें० ॥ तेरे ऐन चश्म के वस्फ़ में कभी शेर तुमको सुनाए थे। किया हर ग़ज़ल पर साद है तुम्हें० ॥ यही मर्ज़ी ख़ास है आप की चले रोज़ ठहरे मिलाप की। यही ज़ाहिर अपनी मुराद है तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ ८० ॥

ग़ज़ले मुज़तरी।

बाग़ में ज़िनहा को फ़र्मा इये मा। आंखें नरगिस को न दिख०

जाइयेगा ॥ कुछ पता घर का न बतलाइयेगा। ठोकरें भी कहीं खिलवाइयेगा ॥ मैंहदी मलने से सरेदस्त खुला ॥ कुछ न कुछ रङ्ग नया लाइयेगा ॥ बैठ जायेगा दिले जार अपना । आप पहलू से जो उठ जाइयेगा । यह तो फर्माइये जाते तो हैं आप। फिर भी तशरीफ कभी लाइयेगा ॥ छोड़ कर तेरी निगह आशिक पर। देखिये देखिये पछताइयेगा ॥ रात थोड़ी है यहां भी रहिये। सुबह दम उठ के चले जाइयेगा ॥ कमतरानी की न लीजे हमसे। बस यह मूसाही से फर्माइयेगा ॥ बोसा मांगा तो वह हँस कर बोले। मुंह की इन बातों में फिर खाइयेगा ॥ यह गजब यौंहीं रहेगा मुझपर। या कभी रह्म प भी आइयेगा ॥ मुग्तरी जोहर:वशों से मिलकर। गोद दिल माहसिफत खाइयेगा ॥ ८१ ॥

गजले हरिविलास।

बेवफाई क्या कहूं मैं श्याम गुलरू यार की। हमसे खामोशी करें कुजा मे बातें प्यार की ॥ अब हमें दर्वेश होने का हुकुमनामा लिखा। मुन्सफी क्या खूब देखो दौलते दर्बार की ॥ फुर्कते जानां में गो दिल को नहीं होशो हवास। पर अभी हसरत है बाकी माहरुख दीदार की ॥ दम ब दम है दम तड़फता देखे बिन उसको सदा। ऐ तबीबे दोजहां अब ले खबर बीमार की। नन्द के फरजन्द से अब जा कहो यों हरिविलास। अब तो वे बातें निबाहो कौल औ इकरार की ॥ ८२ ॥

गजले सुखरामजी ब्रह्मचारी।

राधे राधे सुर से बंसी में जो हरि गाने लगी। गोपियों के हेत प्रेमानन्द बर्षाने लगी ॥ देख बाल अलकों से मुंह पर हरि

के ललता ने कहा। श्याम घन बेतरह अब मुखचन्द पर छाने लगी॥ रात जागे हो कहां राधे ने पूछा श्याम से। जब उनींदे नैन मनमोहन के अलसाने लगे॥ गोपियों के प्रेम की सरिता का जल ऐसा चढ़ा। ज्ञान जोग ऊधो के सब तिनके से बह जाने लगी॥ खुल गई शिव की समाधी सुर असुर मोहित हुए। बांसुरी सुनके सहसफन शेष लहराने लगी॥ मिलके सखियों ने पकड़ जब हरि का मुख चुम्बन किया। माय जसुमति दौड़ियो यह कहके मुसकाने लगी॥ प्रीति दैमारी ने बात अपनी को उलटी कर दिया। जिनको समझाते थे हम वह हमको समझाने लगी॥ हमसे ऐ ऊधो कभी वह हरि जुदा होते न थे। अब हुए कुब्जा के मीत और हमको तर्साने लगे॥ आनके सुखराम हरि दर्शन अमी से सींचिये। गोपियों के प्रानरूपी पद्म मुर्झाने लगी॥ ८३॥

मुसद्दस।

मुंशी बटुकप्रसाद—(शौक़)

जिसका उठा दुआ के लिये एक बार हाथ।
नीचा हुआ न होके कहीं शर्मसार हाथ॥
तेरे करम ने बढ़ के वहीं तीन चार हाथ।
सायल को दूरही से सदा दो पसार हाथ॥
फैलाये क्या कोई मेरे परवरदिगार हाथ।
बन्दे के एक हाथ है तेरे हजार हाथ॥ १॥
शर्मे बरहनगी थी शजर को बहार से।
दस्ते दुआ बलन्द हुए शाखेसार से॥
या रब हमें बचाइयो इस नज्मे यार से।

औ तू ने उनको लाद दिया बर्गो बार से ॥

फैलाये क्या० ॥ २ ॥

खोला था मुंह सदफ़ ने दुआ के लिये वहां।
अब्रे करम को हुक्म उसी दम मिला कि हां ॥
जाये न बारगाह से खालीये बे ज़बां।
हां मोतियों से इसका इसी दम भरो दहां ॥

फैलाये क्या० ॥ ३ ॥

तू ने सदफ़ को दुर दिया और दुर को आब दो।
गुलशन का फूल फूल को बू लाजवाब दो ॥
मअदन को लाल लाल को वह आबोताब दी।
जो चीज़ दी किसी को ग़रज़ इन्तिख़ाब दी ॥

फैलाये क्या० ॥ ४ ॥

तूफ़ाने बाद मौज में है कौन कारसाज़।
ग़ोते प ग़ोते बह्र में खाता है जब जहाज़ ॥
होते हैं हाथ वां तेरे दर्गाह में दराज़।
और तू पनाह देता है उन सब को बेनियाज़ ॥

फैलाये क्या० ॥ ५ ॥

तेरे करम प करके भरोसा जहान ने।
बोए थे खेत लुत्फ़ किया तेरी शान ने ॥
रहमत की वह लगाई झड़ी आसमान ने।
दाना इक के लाख लाख कमाए किसान ने ॥

फैलाये क्या० ॥ ६ ॥

नेअमत से तू ने भर दिया दुनियां के ख़्वान को।
और सीमो ज़र से कर दिया लबरेज़ कान को ॥

तारों के थाल भर के दिया आस्मान को।
रहमत है या खुदा तेरे देने की शान को॥
फैलाये क्या० ॥ ७ ॥
मामूर माल से हैं खज़ाने उजाड़ के।
भरपूर सीमो ज़र से हैं दामन पहाड़ के॥
देना जिसे तू चाहे बनादे बिगाड़ के।
दे जिस प तेरा फ़ज़्ल हो छप्पर को फाड़ के॥
फैलाये क्या० ॥ ८ ॥
यों जबकि फ़ैज़े आम है मख़्लूक़ पर तेरा।
महरूमे शौक़ भी न तेरे दर से जायगा॥
या क़ाबिलुलक़ुबूल मेरे दिल का मुद्दआ।
रौशन है तेरी ज़ात प फैलाऊं हाथ क्या॥
फैलाये क्या कोई मेरे परवरदिगार हाथ।
बन्दे के एक हाथ है तेरे हज़ार हाथ॥ ९ ॥ ॥ ८४ ॥

गजले सुखरामजी ब्रह्मचारी।

जिनकी रसना पर निरन्तर रट है सीताराम की। प्रेम में हरि के मगन हैं सुधि नहीं विश्राम की॥ अन्धकार अज्ञान माया स्वप्न में आता नहीं। जिनके हिरदे में बसी मूरति मनोहर श्याम की॥ जिनको श्री हरि ने दिया है ज्ञान भक्ती का प्रसाद। उनको कुछ इच्छा नहीं इन्द्रादि सुख धन धाम की॥ रामकृष्ण ऐ हरिजनो रटती नहीं जो यह अधम। तो न रखनो चाहिये मुख में यह रसना चाम की॥ प्रार्थना सुखरामदास अपने की सुन लीजे दयाल। लालसा है कृपानिधि हरिभक्त पद परनाम की॥ ८५॥ इति

नित्यकुसुमाकरोद्यान

अर्थात्

चमनिस्ताने हमेशबहार

दूसरा भाग।

इस हिस्से में नए और पुराने अच्छे २ शायरों
की बहुत उम्दा चुनी हुई गज़लें
दी गई हैं।

उर्दू कविता और गाने के रसिकों के आनन्द
और उपकार के वास्ते

श्रीबाबू हरिश्चन्द्र

(रसा)

ने

हरिप्रकाश यन्त्रालय के स्वामी
बाबू अमीर सिंह की सम्मति से
संग्रह किया।

बनारस।
हरिप्रकाश यन्त्रालय में चौथी बार संशोधित
और परिवर्धित होकर मुद्रित हुआ।

चमनिस्तानेहमेशःबहार ।

दूसरा भाग ।

गजल मद्हे खुदा तसनीफ बाबू हरिश्चन्द्र तखल्लुस रसा ।

जहां देखो वहां मौजूद मेरा कृष्ण प्यारा है । उसीका सब है जलवा जो जहां में आशकारा है ॥ भला मखलूक खालिक की सिफ़त समझे कहां कुदरत । इसी से नेत नेत ऐ यार बेदों ने पुकारा है ॥ न कुछ चारा चला लाचार चारो हार कर बैठे । बिचारे वेदों ने प्यारे बहुत तुमको बिचारा है ॥ जो कुछ कहते हैं हम यह भी तेरा जलवा है एक वर नः । किसे ताक़त जो मुंह खोले यहां हर शख्स हारा है ॥ तेरा दम भरते हैं हिंदू अगर नाकूस बजता है । तुझे ही शेख़ ने प्यारे अजां दे कर पुकारा है ॥ जो बुत पत्थर है तो काबे में क्या जुज खाको पत्थर है । बहुत भूला है वह इस फर्क में सिर जिसने मारा है ॥ न होते जलवःगर तुम तो यह गिरजा कब का गिर जाता । असारा को भी तो आखिर तुम्हाराही सहारा है ॥ तुम्हारा नूर है हर शै में कह से कोह तक प्यारे । इसी से कह के हर हर तुमको हिंदू ने पुकारा है ॥ गुनह बख्शो रसाई दो रसा को अपने क़दमों तक । बुरा है या भला है जैसा है प्यारे तुम्हारा है ॥ १ ॥

गजले बाबू हरिश्चन्द्र,रसा।

तेरी सूरत मुझे भाई मेरा जी जानता है। जो झलक तूने दिखाई मेरा जी जानता है॥ अरे जालिम तेरे इस तीरे निगह से हमने। चोट जैसी कि है खाई मेरा जी जानता है॥ खायंगे जह्र नहीं डूब मरेंगे जाकर। जो है कुछ जी में समाई मेरा जी जानता है॥ कत्ल करके न खबर ली मेरे कातिल अफसोस। जां इसी दुख में गंवाई मेरा जी जानता है॥ प्यार की वह तेरी चितवन व नशीली आंखें। दिल को किस तरह हैं भाई मेरा जी जानता है॥ देके जी और पै जीने का मज़ा खो बैठे। जीते जी जी प बन आई मेरा जी जानता है॥ सब्र की फौज के पा उठ गए दिल हार गया। आंख तूने जो लड़ाई मेरा जी जानता है॥ ख्वाब सा हो गया अब को तेरी सुहबत का खयाल। रात वह फेर न आई मेरा जी जानता है॥ दाग दिल पर यह रहेगा कि तेरे कूचे तक। थी रसा की न रसाई मेरा जी जानता है॥ २

गजले गिरधर दास।

हम भी उस बेपीर के आशिक हैं कहलाने लगे। आह हम मजनूंशआरी में गिने जाने लगे॥ संगदिल की याद में पत्थर बहुत खाने लगे। हो के ईमांदार बुत के दोस्त कहलाने लगे॥ हो गया मुझ से खफा वह यार अब आता नहीं। जब से सब बेपीर आकर उसको बहकाने लगे॥ इश्तिजारी ने दिखाया आह हमको आज यह। लोग कहते हैं कि यह भी कब्र को जाने लगे॥ बाल उस मूजी के काले मारते हैं किसको आज। देखिये यह सांप किस किस ढब से बल खाने लगे॥ जब तलक जिन्दः रहा कुछ मुंह से भी बोले नहीं। बाद मरने के मेरे

मरक़द पः वो थाने लगी ॥ दास गिरधर तुम फ़क़त हिन्दी पढ़े थे खूबही । किसलिये उरदू के शायर में गिने जाने लगी ॥ ३ ॥

ग़ज़ले मीर नव्वाब, मूनिस।

फ़ुरसत न उसके वस्ल को पाई तमाम रात। बातों में उस परी ने गंवाई तमाम रात ॥ उठ कर जो आप अपनी जगह से चले गये पहलू में दिल ने धूम मचाई तमाम रात ॥ पैरों पड़े बलायें लीं औ मिन्नतें भी कीं। सरकी न उनके मुंह से दुलाई तमाम रात ॥ खौफ उनको था कि नींद में बोसा न ले कहीं। गालों से धर के सोए कलाई तमाम रात ॥ तारे के टूटने की चमक उनको भा गई। अफ़शां लगा लगा के छुड़ाई तमाम रात ॥ पाला पड़ा है मुझको अजब बदमिज़ाज से। झगड़े तमाम दिन हैं लड़ाई तमाम रात ॥ मूनिस फिर आज हिज्र की शब काटनी पड़ी। नींद ऐसी सोगई कि न आई तमाम रात ॥ ४

ग़ज़ले मूनिस।

न पयाम आते हैं मुद्दत से न यार आता है। देखिये कब दिले मुज़तर को क़रार आता है ॥ साक़िया दे मये गुलरंग गुलाबी में मुझे। ले मुबारक हो फिर अब अब्रेबहार आता है ॥ मुड़के महमिल से ज़रा देख तो तू ऐ लैली। पीछे पीछे तेरे मजनूं का गुबार आता है ॥ रोज़ घर गैरों के जाना ये नये ढंग से हैं। नहीं मालूम कि कौन उनको उभार आता है ॥ खैर मुख़तार हो बोलो कि न बोलो साहब। दिले मुज़तर तुम्हें आ आ के पुकार आता है ॥ अय परी मलते हैं अफ़सोस से हम हाथों को। याद जिस दम तेरे सीने का उभार आता है ॥ इश्क़बाज़ी में ये चालें नहीं अच्छी मूनिस। नक़्द दिल मुफ़्त में भी यों कोई हार आता है ॥ ५ ॥

ग़ज़ले बहादुरशाह, ज़फर।

मेरी जानिब से गैरों ने लगाया कुछ न कुछ होगा। न आया वह तो उसके दिल में आया कुछ न कुछ होगा॥ तेरी तेगे सितम के जो मज़े से ज़ख्म खाते हैं। मज़ा उनको मुहब्बत ने चखाया कुछ न कुछ होगा॥ खबर जब लाई होगी उस बुते खन्दां के आने की। तो गुलशन में सबा ने गुल खिलाया कुछ न कुछ होगा॥ लड़े हैं मैकदे में आज जो यों शीशओ सागर। करश्मा चश्मे साक़ी ने दिखाया कुछ न कुछ होगा॥ मेरे खत के जो उसने बिन पढ़े पुरजे किये क़ासिद। किसी ने मेरी जानिब से पढ़ाया कुछ न कुछ होगा॥ अलम हो रंजो ग़म हो दाग़ हो या दर्द हो दिल में। दिलाज़ारों से दिल हमने लगाया कुछ न कुछ होगा॥ कहा होगा न गरचे साफ हाले दिल ज़फर अपना। पर उनको रम्ज़दानों ने जताया कुछ न कुछ होगा॥ ६॥

ग़ज़ले असग़रअली खां, नसीम।

रश्क सूये खातिरे नाशाद क्या। मेहरबां भूले हुओं को याद क्या॥ राहतें होंगी नसीबे दुश्मनां। मुझ प इहसाने मुबारकबाद क्या॥ किस सितम से तेरे फेरा हमने मुंह। कह रहा है वो सितमईजाद क्या॥ कुछ असर मुझ में न तेरे शोर में। हाय क्या मैं औ मेरी फरियाद क्या॥ दिल धड़कता है तअम्मुल से तेरे। सोचता है जी में वो जल्लाद क्या॥ जानता था तेगे खूं आलूदः को। था मैं मस्ते लज़्ज़ते बेदाद क्या॥ फिक्र के पहलू से हासिल क्या नसीम। होगो उस मजनूं से खातिर शाद क्या॥ ७

ग़ज़ले नसीम।

वसले तेरी कामिमें जीना मुझे दुश्वार था। ऐ मेरे दर्दे

जिगर तू भी मिज़ाजे यार था ॥ जो मैं बेताबो से घबराया तश्फ़्फ़ी उसने की। मूनिसे जाने हज़ीं शब भर तेरा इक़रार था ॥ रात भर सुनता रहा शब उससे लाइल्मी न कर। बे सबब आहें न थीं आख़िर कोई बीमार था ॥ जुज़ तेरे आंखों में जाने गैर तो पाता नहीं। पासबाने ख़्वाबे राहत दीदए बेदार था ॥ मटके मैं इस सुरअते तीरे नज़र के ऐ नसीम। उफ़ भी हम कहने न पाए वह जिगर के पार था ॥ ८ ॥

ग़ज़ले मीर बहादुर अली, वहशत।

हुआ दिल क्यों तू दीवाना न कुछ कहना न कुछ सुना। यह चुपके चुपके गम खाना न कुछ कहना न कुछ सुना ॥ हुई है बादे मुद्दत वस्ल की शब अबतो कुछ बोलो। ग़ज़ब है ऐसा शरमाना न कुछ कहना न कुछ सुना ॥ बस अपना क्या चले हैरत से हो जिस वक़्त यह आलम। मुंह उसका देख रह जाना न कुछ कहना न कुछ सुना ॥ सताने का हमारे यह भी एक अन्दाज़ है उनका। कि घर से हमको बुलवाना न कुछ कहना न कुछ सुना ॥ लगाया दिल को क्यों ऐसे से जिसको कुछ नहीं परवा। यही है अबतो पछताना न कुछ कहना न कुछ सुना ॥ मेरे नामे को पढ़ कर वह ख़फ़ा होवे तो क़ासिद तू। न घबराना न डर जाना न कुछ कहना न कुछ सुना ॥ यह ख़ू है शोलःरूयों की कि बैठे चुपके आशिक़ के। जिगर में आग भड़काना न कुछ कहना न कुछ सुना ॥ शरारत एक यह भी है कि हमसे बातों बातों में। बिगड़ कर उनको उठ जाना न कुछ कहना न कुछ सुना ॥ जो वहशत आशिक़े सादिक़ है तो तू उसको फ़ुरक़त में। कुछ एक दिन खा के मर जाना न कुछ कहना न कुछ सुना ॥ ९ ॥

ग़ज़ले मुंशी तफ़ज़लहुसन खां, शैदा।

सर काट के तलवार से ऐ यार हमारा। क्या खूब किया जिस्म सुबुकबार हमारा ॥ आंसू की तरह खाके मज़ल्लत से न उट्ठा। गिरकर तेरी नज़रों से दिलेज़ार हमारा ॥ हर मरतबः हो शौके शहादत में हवैदा। जो शमश सिफ़त सर कटे सौ बार हमारा ॥ डरता हूं शबे वस्ल न बदलो कहीं करवट। सो जाय न यह तालए बेदार हमारा ॥ उसने जो दिया बोसए लब सामने उनके तकते रहे मुंह सामने अग़यार हमारा ॥ यादे रुखे रङ्गीं में तेरे ऐ गुले राना। एक पल न रुका दीदए खूंबार हमारा ॥ शैदा हमें क्यों खौफ़ रहे रोज़े जज़ा का। होवे रसूल जब कि मददगार हमारा ॥ १० ॥

ग़ज़ले वज़ीर अली, सबा।

रहती है याद सबरुये दिलबर तमाम रात। कटती है ज़िन्दगी तहे खंजर तमाम रात ॥ मेहमां रहा वह मह जो मेरे घर तमाम रात। क्या क्या जला है चर्खे सितमगर तमाम रात ॥ उस आफ़ताब की जो मुझे लौ लगी रही। धुनतां रहा मैं शमश-सिफ़त सर तमाम रात ॥ सौदा बग़ैर साकिये महवश रहा हमें। पत्थर था और शीशओ सागर तमाम रात ॥ लूटी बहार सुम्बुले बागे विसाल की। सूंघा किया मैं गेसुए दिलबर तमाम रात ॥ सुबहे शबे विसाल क़यामत है जान को। हम भी हैं बस तमाम हुई गर तमाम रात ॥ तुमने कहांकहीं में बसर की सहर तलक। रोया किया यह आशिके मुज़तर तमाम रात ॥ लोटा किया मैं खाक पः बे यार ता सहर। खाली पड़ा रहा मेरा बिस्तर तमाम रात ॥ सोने दिया न क़ामते जानां की याद ने।

मश्यर बपा रहा मेरे सर पर तमाम रात॥ कैफीयतें मिलीं हैं अजब वस्ले यार में। लड़ते रहे हैं शोखो सागर तमाम रात॥ सामाने वस्ल में तेरे ऐ पादशाहे हुस्न। तारों से भी जियादा उठा अर तमाम रात॥ ऐ गरदिशे फलक तेरा खाना खराब हो। रहते हैं हम अज़ाब में दिन भर तमाम रात॥ ऐ रश्के आफताब तेरी इन्तिजार में। झपकी न आंख सूरते अखतर तमाम रात॥ उठने दिया न शाम से ता सुबह वस्ल में। छोड़ा न हमने दामने दिलबर तमाम रात॥ ऐ बुत तेरे बगैर जो रहता हूं बाग में। शबनम के बदले पड़ते हैं पत्थर तमाम रात॥ अजहरे तो रगी शबे फुरकत को ऐ सबा॥ चमका कोई फलक प न अखतर तमाम रात॥ ११॥

गजले अशरफ खां, खां।

दिल देके तुझको यार तेरा यार मैं हुआ। अलबत्त: यह खता है गुनहगार मैं हुआ॥ मानिन्दे शमअ तू रहे रौशन खुदा करे। काटा जो तूने सर तो सुबकबार मैं हुआ॥ अय दागे सीन: बाइसे शुहरत हुआ है तू। मानिंदे लाल: सब में नमूदार मैं हुआ॥ हर हर कदम प पीसेगा दिलको मेरे वह शोख़। आफ़त हुई कि माइले रफ्तार मैं हुआ॥ नज्जार: उसका करतेही हैरत सो होगई। दरवाज: से वह निकला तो दीवार मैं हुआ॥ आंखों ने तेरी बाग में यह रंग करदिया। नरगिस को जा के देखा तो बीमार मैं हुआ॥ बोसे लिये नशे में लबे सुर्खरंग के। ग़ाफ़िल हुआ वह शोखतो हुशियार मैं हुआ॥ सज धज प: तेरे आई कमांदार यह हँसी। आखिर को सूरते लबे सूफार मैं हुआ॥ ऐ खां मेरे फरेब को तो देख तू जरा। बेगान: होके शहर में इसरार मैं हुआ॥ १२॥

ग़ज़ले शेख़ वलायत अली, वलायत।

आया न पास वह मह़े अनवर तमाम रात। गिनता रहा मैं हिज्र में अख़्तर तमाम रात॥ शबनम की तरह शाम से अय गैरते चमन। काटी है हिज्रे यार में रो कर तमाम रात॥ शीरीं लबों के इश्क़ में फ़रयाद की तरह। गम का पहाड़ सर प है दिन भर तमाम रात॥ किसकी भवों के इश्क़ में दिवाना होगा दिल। देखा किया हूं ख़्वाब में खंजर तमाम रात॥ क्या आतिशे जिगर से वलायत मिसाले शमअ। जलता रहा है हिज्र में पैकर तमाम रात॥ १३॥

ग़ज़ले ख़्वाजः वज़ीर, वज़ीर।

सर मेरा काट के पछताइयेगा। झूठी फिर किसकी कसम खाइयेगा॥ थांभ लूं दिल को जरा हाथों से। अभी पहलू से न उठ जाइयेगा॥ कहिये याराने अदम क्या गुजरी। कुछ लबे गोर से फ़रमाइयेगा॥ कम भी देने में बहुत फ़ायदा है। बोसा एक दीजिये दस पाइयेग॥ मरदुमे चश्म से आये जो हिजाब। आंख के परदे में छिप जाइयेगा॥ क्यों बनावट से अजी रोते हैं आप। झूठे मोती किसे दिखलाइयेगा॥ जाम साकी से जो मांगा तो कहा। भर के अश्क आंख में पी जाइगा॥ हमने यूसुफ जो कहा क्यों बिगड़े। मोल लेगा कोई बिक जाइयेगा॥ हम भी आ निकलेंगे मस्जिद में वज़ीर। खिश्तेखुम लेके जो बनवाइयेगा॥ १४॥

ग़ज़ले राजा बलवानसिंह, राजा।

सीधी हुई न जुल्फे मुसलसल किसी तरह। इस कजसियाह का न गया बल किसी तरह॥ जीते जी हाल पूछा न बीमारे इश्क़ का। उठती है शाम अब तो जरी चल किसी

तरह ॥ सुरमा बनाया चाहिये अब खाके पाय यार। तलुवों से उसके आंखें दिला मल किसी तरह ॥ होठों प जान श्रोके अयादत से आगई। कातिल दिखा दे मुझको तू मक्तल किसी तरह ॥ ऐ राजा अरदा क्या दिले मुज़तर का अब रहा। आंसू मिज: प: ठहरा न एक पल किसी तरह ॥ १५ ॥

ग़ज़ले मुहम्मद अशरफ खां, खां।

रही कुछ थोड़ी सी वहशत की हवा मेरे बाद। पहिले मैं वहशी हुआ कैस हुआ मेरे बाद ॥ मुझसा ख्वाहां न कोई होगा चमन का गुलचीं। खाक छानेगी हर एक कू की सबा मेरे बाद॥ तू अभी से तो न उस बुत की तरफदारी कर। मुझसे हो जाइयो ए दिल तू जुदा मेरे बाद ॥ जा बजा करता हूं उस ज़ुल्फ का शिकवा इससे। ता न हो कोई गिरफतारे बला मेरे बाद। इस बुराई के सज़ावार हमी हैं प्यारे। गालियां किसको सुनाओगी भला मेरे बाद ॥ रश्क होवेगा मुझे कब्र प मेरी ऐ बुत। गैर को लाइयो मत बहरे खुदा मेरे बाद ॥ खां मियां जान के हर जाई मुझे उसने कहा। देखिये होती है अब किससे वफा मेरे बाद ॥ १६ ॥

हज़रत अबूज़फर बहादुर शाहे फिरदूस मकां।

कद्र ऐ इश्क रहेगी तेरी क्या मेरे बाद। कि तुझे कोई नहीं पूछने का मेरे बाद ॥ ज़ख्म पर दिल के गवारा है मुझी को ये नमक। कौन चक्खेगा मुहब्बत का मज़ा मेरे बाद ॥ दरे जानां से मेरी खाक न करना बरबाद। देख जाना न उधर बादे सबा मेरे बाद ॥ खारे सहराय जुनूं योंही अगर तेज रहे। कोई आयेगा नहीं आबिल: पा मेरे बाद ॥ मेरे दम तक है

तेरा ऐ दिले बीमार इलाज। कोई करने का नहीं, तेरी दवा मेरे बाद॥ उस सितमगर ने मुझे जुर्मे वफा पर मारा। कोई लेने का नहीं नामे वफा मेरे बाद॥ ऐ जफर क्योंकि मुहब्बत का न हो गम तेरी। कोई गमख्वारे मुहब्बत न हुआ मेरे बाद॥१७॥

ख्वाजः वजीरअली, वजीर।

जरा तो देख ले वह हमको आ कर। कोई दम और भी ऐ दम वफा कर॥ अगर पूछे वह बरबादी हमारी। सबा कह दीजियो कुछ खाक उड़ा कर॥ हजारों होगए टुकड़े गरेबां। चले इस नाज से दामन उठा कर॥ तेरा गेसू बहुत बल कर रखा है। बिगाड़ा तूने जालिम सर चढ़ा कर॥ वजीर अब ता कुजा यह बुतपरस्ती। किसी दिन तो भला याद खुदा कर॥१८॥

गजले नव्वाब असगर जान, असगर।

यकीं है कुछ न कुछ रहम अब मिजाजे यार में आये। अदब से हाथ हम बांधे हुए सरकार में आये॥ अदम के जाने वालो बज्मे जानां तक जो पहुंचोगे। हमें भी याद रखना जिक्र गर दरबार में आये॥ सभों ने फैज पाया आ के अपनी अपनी किस्मत से। नहीं खाली फिरे जो जो तेरी सरकार में आये॥ अगर बख्शे जिन्हें रहमत न बख्शे तो शिकायत क्या। सरे तसलीम खम है जो मिजाजे यार में आये॥ न पूछो अहले महशर हमसे दीवानों की बेताबी। यहां मजमां सुना यां भी तलाशे यार में आये॥ मुकद्दर से नहीं कुछ जोर चलता जाय हसरत है। चले काबे बहक कर खानए खुम्मार में आये॥ धुएं को दी है ईजा हमको असगर तीर बख्ती ने। जो बच कर धूप से हम सायए दीवार में आये॥ १९॥

ग़ज़लें ख़्वाजः वज़ीर के बेटे ख़्वाजः बादशाह, सफीर।

प्यार से हमने बलाएं लीं न उसने बात की। उँगलियाँ चटकीं सदा आने लगी है हात की॥ मर गया मैं आशिक़े दीदार बर आई मुराद। ख़ानए बुत में है तैयारी ख़ुदाई रात की॥ ऐन बारिश में ये देखा किसने चश्मे मस्त से। ऐसि सिमटी बन गई बोतल घटा बरसात की॥ ओ बुते काफ़िर न अपने क़त्ल से तू हाथ उठा। सर को ठुकरा पांव से देता हूं क़सम लात की॥ क्या सफ़ाई है की धोका साफ़ ख़त का होगया। पुश्ते लब से होगई ज़ाहिर जो उसने बात की॥ क्यों मली मिस्सी लबे जांबख़्श पर धब्बा लगा। आबे हैवां में सियाही आगई ज़ुल्मात की॥ पड़ गया है अक्स रूये यार शायद ऐ सफीर। रौशनी जो सूरते ख़ुरशेद है ज़र्रात की॥ २०॥

ख़्वाजः मीर, दर्द।

हम तुझसे किस हवस की फ़लक जुस्तजू करें। दिलही नहीं रहा है जो कुछ आरज़ू करें॥ तर दामनी प शेख़ हमारी न जा अभी। दामन निचोड़ दूं तो फ़रिश्ते वज़ू करें॥ हरचन्द आइना हूं प इतना हूं ना क़ुबूल। मुंह फेर ले वो जिसके तुझे रूबरू करें॥ गुल को न है सबात न मुझको है एतबार। किस बात पर चमन हवसे रंगो बू करें॥ है अपनी यह सलाह कि सब ज़ाहिदाने शह्र। ए दर्द आ के बैअते दस्ते सुबू करें॥२१॥

शेख़ इमामबख़्श, नासिख़।

धूप बेहतर है शबे फ़ुरक़त को बदतर चांदनी। शायके की तौर से पड़ती है मुझपर चांदनी॥ ख़ूब रोऊं ऐ शबे ग़म है

मुकद्दर चांदनी । बाद बारिश साफ हो जाती है अकसर चांद-नी ॥ होगया हूं मातवां ऐसा शबे फुरकत में मैं । जिस्मे लागर पर है मिस्ले संगमरमर चांदनी ॥ धूप आती है नजर तारीक साये की तरह । मेरे घर में है अंधेरे के बराबर चांदनी ॥ मेरे घर को राह कतरा कर निकल जाता है चांद । रहती है फु-रकत को शब बाहरही बाहर चांदनी ॥ खाकसारी भी न कोई दे खुदा जिसको उरूज । आस्मां पर माहेताबां है जमीं पर चांदनी ॥ भूल कर भी चांद के टुकड़े इधर आजा कभी । मेरे वीराने में भी होजाय दमभर चांदनी ॥ क्या शबे महताब में बेयार जाऊं बाग को । सारे पत्तों को बना देती है खंजर चां-दनी ॥ नुकरई मूबाफ उस काफिर की चोटी में नहीं । यह वो शब है जिसने करली है मुसख्खिर चांदनी ॥ गैर तारों की शबे फुरकत में ऐ नासिख नहीं । हां अगर जख्मी हूं तो निकले मुकर्रर चांदनी ॥ २२ ॥

गजले शेख इमामबख्श, नासिख ।

आवाज है मानिन्दे मजामीर गले में । तहरीर है गोया तेरी तकरीर गले में ॥ लिपटी है जो वां जुल्फे गिरहगीर गले में । यां भी तो कई मन की है जंजीर गले में ॥ दीवाना किया है तेरी सूरत ने परीरू । हो तौक के बदले तेरी तस्वीर गले में ॥ आवाज सुना कर मुझे बेहोश बनाया । कब शीशए मय की है ये तासीर गले में ॥ ऐ जान कोई अपना गला काट मरेगा । लटकाओ न यों नाज से शमशीर गले में ॥ जुज खाके दरे यार दवा दो न तबीबो । वल्लाह अटक जायगी अकसीर गले में ॥ सर कटने से हम मस्त न चुप हों कि है साकी । शीशे की तर-

ह कुव्वते तकरीर गले में ॥ अहबाब से मांगं मैं अगर जिंस मैं पानी। टपकायें न आबे दमे शमशीर गले में ॥ किस दरजः सुनहरी तेरी रंगत है परीरू। रक्खी हुई कुन्दन की भी जंजीर गले में। वे यार जो को बाद:कशी जबह हुआ मैं। हर मौज मए नाब है शमशीर गले में ॥ है मुल्क निसारा में तमन्ना यही नासिख। फांसीं हो वही जुल्फे गिरहगीर गले में ॥ २३ ॥

नव्वाब मुहम्मद तक्की खां. तरक्की।

गर एक शब भी वस्ल की लज्जत न पाए दिल। फिर किस उमेद पर कोई तुमसे लगाए दिल ॥ एक दिल तुझे मुदाम सताने को चाहिए। तेरे लिये कहां से कोई रोज लाए दिल ॥ तरगीब दे है किस लिये काबे को तू हमें। जाहिद खुदा का घर नहीं कोई सिवाय दिल ॥ उसकी गली में कोई ये बेदिल हुआ है दफ्न। आवाज मुत्तसिल यही आती है हाय दिल ॥ उतरा न आके यां प कोई कारवाने गम। मेहमांसरा से कम नहीं यारो सरायदिल ॥ कूचे से अपने हमको उठाता है किस लिये। बैठे हैं हम जहान से अपना उठाए दिल ॥ कहते हैं दर्दमन्द तरक्की का हाल देख। यारब कभी किसी प किसीका न आए दिल ॥ २४ ॥

गजले शेख कलन्दर बख्स. जुरअत।

क्या जाने क्या करेगा वह खूंखार आज कल। रखता बहुत है हाथ में तलवार आज कल ॥ इतना हुजूमे खल्क तो खाली न जायगा। गिरते हैं उसके कूचे में दो चार आज कल ॥ यूसुफ के भी जमाने में थे खूबरू बले। तुझ सा नजर पड़ा न तरहदार आज कल ॥ वादा खिलाफ आ के मिलेगा भी तू कभी

कब तक सुना करेंगे यह हर बार आज कल ॥ कौन उठ गया है पास से क्या हो गया है जो। पड़ती नहीं है तुझको दिले जार आज कल ॥ अफसोस है कि हम तो तड़पते हैं दाम में। खो खिल रहा है क्या गुलो गुलजार आज कल ॥ आंखों में अ- श्क जान बलब सीना चाक है। उल्फत कहीं हुआ है गिरफ्तार आज कल ॥ २५ ॥

नव्वाब सैयद मुहम्मद खां, रिन्द।

टीद गुल के तुझे पड़ जायंगे लाले बुलबुल। पड़ गई जब किसी सैयाद के पाले बुलबुल ॥ कान खोले हुए गुलगोश बर- आवाज है आज। दर्दे दिल जो तुझे कहना हो सुना ले बुल- बुल ॥ फिर वही कुंजेकफस फिर फिर वही सैयाद का घर। चार दिन और हवा बाग की खा ले बुलबुल ॥ बे इजाजत में कदम बाग में धरने का नहीं। मुन्तजिर हूं दरे गुलजार पः आ ले बु- लबुल ॥ हाथ औराके गुल आवें तो बना कर जुजा। लिखूं रङ्गीन मजामीं के रिसाले बुलबुल ॥ जिस शजर पर तेरा जी चाहे नशेमन कर ले। फट पड़ेंगी न तेरे बोझ से डाले बुलबुल चहचहे रिन्द करेगा तो यह हो जायगा बन्द। कह दे गुलचीं कि जरा अपनी संभाले बुलबुल ॥ २६ ॥

गजले मीर आबिद अली, आबिद।

मालूम तुमको भी हो किसी पर जो आए दिल। नाहक सताया करते हो साहब पराए दिल ॥ मिट्टी हुआ हवा हुआ पामाल होगया। क्या पूछते हो खाक कहूं माजराए दिल ॥ जुल्फों में फंस के सैकड़ों झटके उठा चुका। लाजिम है अब मु- आफ भी कर दो खताए दिल ॥ अब्रूमें इसे न किजिये तेरी

निगाह से। देना पड़ेगा आपको भी खूं बहाए दिल॥ दोनों का एक हाल है ईजाय हिज्र में। रोता है मेरे वास्ते दिल में बराय दिल॥ है आशना वही जो बुझाए लगी हुई। वह दोस्त है जो दोस्त की खातिर जलाए दिल॥ औरों के जब हुजूर में तुहफे गुजर चले। हम नज्र देने को सरे दरबार लाए दिल॥ सुन्ता हूं आज कल वह खरीदार दिल के हैं। धोखे से कोई जा के मेरा बेच लाए दिल॥ उठते तो बज्मे यार से आबिद उठे मगर। हर हर कदम पः मुंह से निकलता है हाय दिल॥ २१॥

गजले ख्वाजः वजीर, वजीर।

न किया जबह गया छोड़ के बिस्मिल कातिल। दहने जख्म पुकारा किये कातिल कातिल॥ दस्ते नाजुक की नजाकत जो सिपर ने देखी। ऐसी सिमटी कि हथेली का बनी तिल कातिल॥ जी में आता है तेरी तेग को दिल में रख लूं। ऐसी सैली को यही चाहिये मुहमिल कातिल॥ नेक साअत से चली थी ये तेरी तेग दो सर। सर तक आई मेरे पहुंची सरे मंजिल कातिल॥ ईदे कुरबां है यही दिन तो है कुरबानी का। आज तलवार के मानिन्द गले मिल कातिल॥ दिल में है इश्क तेरा याद तेरी गम तेरा। रहजनों से हुई आबाद यह मंजिल कातिल॥ किसी करवट किसी पहलू नहीं देता मुझे चैन। दुशमने जां हैं तेरी तरह जिगर दिल कातिल॥ खींचे तलवार तो होजाय दो चश्मां जोबन। तेगे खमगश्तः हिलाली मह्ने कामिल कातिल॥ सर से सीने में उतर आए जिगर से दिल में। तेरी तलवार करे कतअ मनाजिल कातिल॥ कब फड़कता

था तेरा दस्त हिनाई ऐसा । ताइरे रङ्ग हिना होगया बिस्मिल कातिल ॥ चार आईनः अनासिर का उतारूं फेकूं । जखम खाना मुझे होजायगा मुश्किल कातिल ॥ बारे मुरदन भी वही ओके शहादत है वजीर । दहने जख्म से हम कहते हैं कातिल कातिल ॥ २८ ॥

गजले शेख कलन्दर बख्श, जुरअत ।

अक्स दो दिन से जो तुमने हमको दिखलाई नहीं । कल से बेकल हैं हमी कल आज तक आई नहीं ॥ इस दिले वहशी से जो तुम भागते हो दूर दूर । अपना दीवाना इसे समझो ये सौदाई नहीं ॥ हर जगह जाने से मेरे दिल में क्यों रुकते हो तुम । मैं तुम्हीं को देखता फिरता हूं हरजाई नहीं ॥ उसके आने से मेरे दिल में नहीं कुछ और सोच । है यही हैरत कि क्यों अब तक अजल आई नहीं ॥ गर न देखूंगा तुम्हें तो और हूंगा बे करार । इसमें रुसवाई है कुछ मिलने में रुसवाई नहीं ॥ बात गर कहते नहीं तो सामने बैठे रहो । अक्स दिखलाने में तो तुम ने कसम खाई नहीं ॥ दोद का तालिब हूं तेरे सुन के कहता है वो शेख । खाक देखेगा तेरी आखों में बीनाई नहीं ॥ २९ ॥

गजले सैयद हादी अली, बेखुद ।

तपे हिजरां से मुझको गश प गश पैहम जो आते हैं । उसी कूचे की मिट्टी लोग ला ला कर सुंघाते हैं ॥ जुनूं में काम लें फस्साद का हम खारे सहरा से । फसादे खूने सौदा है बहुत तलवे खुजाते हैं ॥ वह चोबे खुश्क हूं मैं जिसको जलने से नहीं फुरसत । वह सब्जा हूं कि रहरौ जिसको अकसर रौंद जाते हैं ॥ तेरे दीवाने सौदे में भी पाबन्दे तकल्लुफ हैं । गुले दाग

सुर्मे से रिश्ती उरियानो बनाते हैं ॥ निगह करते हैं गैरों की तरफ दुज़दीदः नजरों से। हमीं से दीदये दानिस्तः वह आँखें चुराते हैं ॥ बुरा हो जोशे रिक्कत का तअम्मुल हो नहीं सकता। मैं कितना ज़ब्त करता हूँ मगर आंसू भर आते हैं ॥ हर एक से कहते हैं वे पूछे वह बेताब हो हो कर। अभी हम मैयते बेखुद को मिट्टी देके आते हैं ॥ ३० ॥

गजले नव्वाब असगर जान, असगर।

नहीं मुमकिन कि हम चर्खे दुनी से कामे जां निकले। बदन से जानो दिल से आरजू निकले तो हां निकले ॥ भला किस तरह मेरे दिल से शक अय बदगुमां निकले। वही कहना तुझे जिसमें नहीं निकले न हां निकले ॥ जला हूँ आतिशे फुरकत से ऐसा शोल:रूयों की। जो आहे सर्द भी खींचू तो सीने से धुआं निकले ॥ मुझे क्या तीरे मिजगां तेगे अबरू से डराते हो। रकीबों को भी बुलवाओ तो लुत्फे इमतिहां निकले ॥ नहीं दैरो हरम से काम हम उल्फत के बन्दे हैं। वही काबा है अपना आरजू दिल की जहां निकले ॥ फिराके यार में रोने से क्या तसकीन होती है। जिगर की आग बुझ जाती है दो आंसू जहां निकले ॥ ३१ ॥

गजले ख्वाज: हैदर अली, आतिश।

गेसुए मुश्कीं रुखे महबूब तक आने लगे। चश्मये खुरशेद में भी सांप लहराने लगे ॥ जुल्म मुरदों पर किया मश्के खिरामे यार ने। हर कदम पर कासये सर ठोकरें खाने लगे ॥ आंख फेरी तूने जिससे दम फिना उसका हुआ। मुरदों के आसार जिन्दों में नजर आने लगे ॥ मुश्क की बू सूंघ कर एक बददि-

मागी सो हुई। याद जुल्फे यार आई सर को टकराने लगे॥ इक क़िमा करने लगी तेरी कमर की जुस्तजू। आशिक़े जांबाज़ हस्ती से अदम जाने लगे। मर भी जाऊं तो न आतिश गोर पर आए वो गुल। काम तमकीं को ग़ुरूरे हुस्न फ़रमाने लगे॥२२॥

ग़ज़ले राजा बलवान सिंह, राजा।

हैं बेख़बर ऐसे कि ख़बर इक नहीं रखते। दिल हम नहीं रखते हैं जिगर हम नहीं रखते॥ क्या तुम प तसद्दुक़ करें क्या नज़्र दें तुमको। दिल हम नहीं रखते हैं जिगर हम नहीं रखते॥ आता है ग़मे यार मुदारात करें क्या। दिल हम नहीं रखते हैं जिगर हम नहीं रखते॥ अय साक़िये बदमस्त कबाब आए कहां से। दिल हम नहीं रखते हैं जिगर हम नहीं रखते॥ किस ताक पर आता है तू अय दर्दे मुहब्बत। दिल हम नहीं रखते हैं जिगर हम नहीं रखते॥ आहे सेहरी नालए शबगीर करें क्या। दिल हम नहीं रखते हैं जिगर हम नहीं रखते॥ बेताबी है क्यों दर्द यह अब कैसा है राजा। दिल हम नहीं रखते हैं जिगर सम नहीं रखते॥ २३॥

ग़ज़ले नव्वाब सैयद मुहम्मद ख़ां 'रिन्द'।

जांबर नहीं होते हैं जिन्हें डसते हैं काले। अल्लाह कभी पेंच में ज़ुल्फ़ों के न डाले॥ दिल सीने में बेताब है जां आई है लब पर। अब जान को रोके कोई या दिल को सम्हाले॥ आगाज़ मुहब्बत में हुआ हिज्र का बीमार। दिल देते ही मुझको तो पड़े जान के लाले॥ हूर आवलः है सीज़े जुदाई से सरापा। देखे तो कलेजे के दिखाऊं तुझे छाले॥ रो रो के जनाज़े प मेरे इश्क़ पुकारा। तुम आप चले हमको किया किसके हवाले॥

तेजाब का शीशा है हर एक आबिलए पा। जंगल में लगी आग जो फूटें कभी छाले॥ ओ दिल हदफे तीर निगह फिर किया तूने। अगलेही अभी जख्मे जिगर थे मेरे आले॥ क्यों रिन्द के दीवां की करें कद्र न आशिक। अजजा हैं यह सब इल्मे मुहब्बत के रिसाले॥ ३४॥

गजले ख्वाजः हैदर अली . आतिश।

सर काट के कर दीजिये कातिल के हवाले। हिम्मत यही कहती है कि एहसान बला ले॥ हर कतरए खूं मोज दर्द से है एक अखगर। जल्लाद की तलवार में पड़ जायँगे छाले॥ नक्काशे अजल ने तेरी तस्वीर में रक्खे। अन्दाजे रहो जुल्फ जमाने से निराले॥ कुछ और लबे यार की तारीफ करूं क्या। वह लाल कि देखे से पड़ें जान के लाले॥ पैगामे अजल होती हैं बस इश्क के सदमे। पाला नफसे सर्द से अल्लाह न डाले॥ दुश्मन से समझते हैं हम उस दोस्त को बदतर। मुश्ताक को मुंह अपना दिखा कर जो छिपा ले॥ मफतून है तू शमय रुखे यार का आतिश। अशआर इसी फिक्र से सांचे में हैं ढाले॥ ३५॥

गजले मिरजा मुहम्मद रजा , तूर।

खाक तब उड़के कूबकू न गई। मर गये फिर भी जुस्तजू न गई॥ साथ एक दिन लिपट के सोए थे। उम्र भर तनसे उसकी बू न गई॥ गए सब्रो करारो होशो हवास। दिल से एक तेरी आरजू न गई॥ नकहते जुल्फ को तरसता हूं। क्यों सबा उस गली में तू न गई॥ मरके भी खाक से उगा संबुल। उलफते जुल्फे मुश्कबू न गई॥ तूर तुझको खुदा बचा लेवे। इश्क में किसकी आबरू न गई॥ ३६॥

गज़ले नव्वाब सैयद मुहम्मद खाँ, रिन्द।

जाम भर भर के मए होशरुबा दे साक़ी। आज इतनी तुझे तौफ़ीक़ खुदा दे साक़ी॥ खुम का खुम लाके मेरे मुंह से लगा साक़ी। बादे मुद्दत तू मुझे आज छका दे साक़ी॥ मुंह से लगतेही मेरे होश उड़ा दे साक़ी। ऐसी बोतल कोई चुन कर मुझे लादे साक़ी॥ आलमे आब में मैं रंगे गुलो लालः देखूं। भर के सागर मए गुलरंग का लादे साक़ी॥ एक दो जाम की खातिर न बुरा मुझसे आंख। ऐन मस्ती में तू मुझको न दगा दे साक़ी॥ बे गज़क अब तो कलेजाही जला जाता है। बित्ते मय जल्द मुझे भून में लादे साक़ी॥ तेरी उम्मेद पः रिन्द आया है हफ़्तां खेंजां। हुई तलछट है जो शीशे में पिला दे साक़ी। २७।

गज़ले मुनव्वर खाँ, ग़ाफ़िल।

चमने कूचए जानां से यह क्या आती है। नाज करती हुई जो बादे सबा आती है॥ लेके पैग़ामे जवानी जो चला है क़ासिद। बात बिगड़ी हुई क्या उस्को बना आती है॥ इश्क ने आलमे पीरी में सताया मुझको। नालः करते हुए इस मुंह से हया आती है। किसके मैं दस्ते निगारीं का हूं ज़खमी या रब। हर गुले ज़ख्म से जो बूए हिना आती है॥ जी में आता है मसीहा से यह पूछूं जाकर। मरजे इश्क की भी तुमको दवा आती है॥ सुबह किस्तरह से होगी शबे देजूरे फ़िराक़। न तो नींद आती है मुझको न क़ज़ा आती है॥ छोड़ जाता है वो जब घर में अकेला मुझको। दरो दीवार से रोने की सदा आती है॥ यादे गेसू में उलझता है सरेशाम से दिल। रात क्या आती है एक सर पः बला आती है॥ अब चमन में कोई दिल किस्से

लगावे गाफ़िल। कौन से गुल में यहां बूए वफा आती है ॥३८॥

गज़ले बाबू हरिश्चन्द्र, रसा।

दिल मेरा लेगया दगा करके। बेवफा होगया वफा करके ॥ हिज्र की शब घटाही दी हमने। दास्तां जुल्फ़ की बढ़ा करके ॥ मुकलक़ कह तो क्या मिला तुझको। दिल जलों को जला जला करके ॥ वक्त रेहलत जो आए बालीं पर। खूब रोए गले लगा करके ॥ सर्व क़ामत गज़ब की चाल से तुम क्यों क़यामत चले बपा करके ॥ खुद बखुद आज जो वो बुत आया। मैं भी दौड़ा खुदा खुदा करके ॥ क्यों मसीहाई का न दावा करे। मुर्दे ठोकर से वह जिला करके ॥ क्या हुआ यार छिप गया किस तर्फ़। इक झलक सी मुझे दिखा करके ॥ दोस्तो कौन मेरी तुरबत पर। रो रहा है रसा रसा करके ॥ ३९ ॥

गज़ले बाबू हरिश्चन्द्र, रसा।

उठा के नाज़ से दामन भला किधर को चले इधर तो देखिये बहरे खुदा किधर को चले ॥ मेरी निगाहों में दोनो जहां हुए तारीक। य आप खोल के जुल्फ़े दोता किधर को चले ॥ अभी तो आए हो जलदी कहां है जाने की। उठो न पहलू से ठहरो ज़रा किधर को चले ॥ खफ़ा हो किसपे भवें क्यों चढ़ी हैं खैर तो है। ये आप तेग पै धर कर जिला किधर को चले ॥ मुसाफ़िराने अदम कुछ तो अजीज़ों से कहो। अभी तो बैठे थे है है भला किधर को चले ॥ चढ़ी हैं त्योरियां कुछ है मिज़ाज भी जुम्बिश में। खुदाही जाने ये तेगे अदा किधर को चले ॥ गया जो मैं कहीं भूले से उनके कूचे में। तो हँस के कहने लगी हैं रसा किधर को चले ॥ ४० ॥

मिरजा अलीजाह बहादुर दिलेरुद्दौला, शैदा ।

की चश्म को तारीफ़ कहाने को हमारे। कहलो को बढ़ाते हैं घटाने को हमारे॥ हम भी किसी माशूक़ का फिर जिक्र करेंगे। गैरों का न लो नाम सुनाने को हमारे॥ आराम के तकिये में शबे हिज्र को सोते। आई न अजल पांव दबाने को हमारे॥ आलम से तो ऐ जान किया कतअ तअल्लुक़। देखो तो जरा दिल के लगाने को हमारे॥ किस्मत इसे कहते हैं कि इस ख्वाने फलक में। जुज रंजो अलम कुछ नहीं खाने को हमारे॥ हैं गंज में सीने के भरे नक़्दे मज़ामीं। क्या चोर चुराएगा खजाने को हमारे॥ अहवाल हमारा जो परीरू नहीं सुनते। अफ़सूं न समझते हैं फिसाने को हमारे॥ हैदर के जो पैरो हैं तो इस राह से शैदा। भाते हैं चलन सारे जमाने को हमारे॥ ४१॥

नव्वाब राहतअली खां, आशिक़ ।

सियह चादर जो मेरी कब्र पर यारों ने तानी है। किसी की जुल्फ का मारा हूं यह उसकी निशानी है॥ कज़ा आनी थी तो एक दिन भी जान जाती है है। शबे फ़ुरक़त में आजावे तो उसकी मेहरबानी है॥ बयाने हर्फ़ मतलब में हमारी बात आनी है। उसे इस बात से चिढ़ है न मानेगा न मानी है॥ कब उट्ठा बार मुझसे सन्दली रंगों की उलफत का। मुझे सन्दल लगाना दर्दे सर में सरगरानी है॥ सरापा आशिके काकुल सियहबख़्ती के पुतले हैं। बला में मुबतिला हैं एक परेशां जिन्दगानी है॥ न छुट जाएगी मेंहदी पांव की चल देख तो लैली। कि तेरे इश्क़ में मजनूं ने

क्या क्या खाक छानी हैं। छिना मलते हैं वां अगयार दस्तो पाय दिलवर में। कलेका यां कोई मलना है अगले खूं फिशानी है। अगर उस लाल:रू से वस्ल हो फस्ले बहारी में। चढ़ाऊं कब्र पर बुलबुल के गुल मन्नत ये मानी है। दोबारा उम्र मिलती है विसाले यार है वह शय। दलील इस बात पर आशिक जुलेखा की जवानी है॥ ४२॥

पण्डित बिशेसर नाथ साहब, अनवर।

अब हमसा बावफ़ा न वो दुनियां में पाएंगे। क्योंकर यहै कि उनको न हम याद आएंगे॥ हमसे गवे विसाल भी उनका ये है सवाल। गर छेड़ियेगा आप तो हम रूठ जाएंगे॥ इस बागे दहर से सिफ़ते लाल: अय फलक। हम दागे यास सूये अदम लेके जाएंगे॥ हम रिन्द हैं गरज हमें दैरो हरम से क्या। तेरी गली में बैठ के धूनी रमाएंगे॥ तीरे मिज: से दिल को मेरे कर चुके हदफ़। अब किसके मुर्गदिल को निशाना बनाएंगे॥ देने को जान दे दूं मगर यह मलाल है। रो रो के मेरे गम में वह आंखें सुजाएंगे॥ लिक्खा है उस परी ने ये खत में जिहे नसीब। अनवर गजल यह भेज दो हम इसको गाएंगे॥४३

फ़क़ीर मुहम्मद खां, गोया।

बावफ़ा था मर गया एक बेवफ़ा के वास्ते। आशना था जान दी नाआशना के वास्ते॥ बागवां दीवारे गुलशन तक तो आने दे मुझे। कैंचियां लगावा न ऐ जालिम खुदा के वास्ते॥ अय हुमा पेशे फ़कीरी सलतनत क्या माल है। बादशाह आते हैं पाबोसे गदा के वास्ते॥ जानिबे गुलशन मुझे सैयाद ले जाता नहीं। तूही अजखुद रफ़्तगी ले चल खुदा के वास्ते॥ हूं वो मु-

जरिम कांपता है ज़ोफ से सारा बदन। हाथ उठाते शर्म आती है दुआ के वास्ते॥ रहम कर ऐ जोफ बस इतना न तू मुझ को घुला। हड्डियां दो चार रहने दे हुमा के वास्ते॥ दिल न अपना न है तन अपना न जां अपना है आह। सबसे बेगाने हुए एक आशना के वास्ते॥ कर तू गोया को शिफाअत या नबी बहरे खुदा। अय खुदा तू बख्श दीजो मुस्तफा के वास्ते॥ ४४॥

मौलवी मुहम्मद इनआमउल्लाह, इनआम।

मए उलफत के नशे में मेरा दीवाना आता है। सँभलता लड़खड़ाता झूमता मस्ताना आता है॥ मुहे किनआं नहीं जिसका सरे बाजार सौदा हो। मेरे यूसुफ का घर बैठे हुए बैआना आता है॥ बयां करता हूं जब तनहाइये दिल लोग रोते हैं। तड़प जाती है महफिल जब मुझे इफसाना आता है॥ तसद्दुक जान करना यार पर आसां समझते हैं। हमें जिस दम खयालें हिम्मते मरदाना आता है॥ जरा महफिल से हट बैठो हमें वसवास होती है। तसद्दुक शमअ पर होने को वह परवाना आता है॥ पिला देता है गैरों को वह साकी बोतलें मय की। हमारे सामने खाली लिये पैमाना आता है॥ बुझा देता है वह जब शमए मरकद को तो ऐ इनआम। हमारी कब्र पर रोता हुआ परवाना आता है॥ ४५॥

पण्डित विशेशरनाथ, अनवर।

रकीब साथ हैं दिल बेकरार है तो ये है। कलक मुझे तेरे छुटने का यार है तो ये है॥ न आया रोने को मुझ शमअ एक भी हमदम। सरे मजार फकत अश्कबार है तो ये है॥ जफाएं मैं जो उठाता हूं तो वो कहते हैं। हमारे आशिकों में जांनि-

सार है तो ये है ॥ दमे अखीर हो सर मेरा उनके जानू पर। बस आरजूए दिले बेक़रार है तो ये है ॥ निकाल जार इसे पहलू से फेंक दूं बाहर। दिले हजीं प मुझे इख़्तियार है तो ये है ॥ ग़मे फ़िराक़ में जुज़ ग़मग कौन है दिलसोज़। अनीस है तो ये है ग़मगुसार है तो ये है ॥ न मुझको दफ़्न किया तुमने अपने कूचे में। अबे फ़िना मेरे दिल में ग़ुबार है तो ये है ॥ अजल है सर प तुम्हें देख लें तो राज़ी हों। बस और कुछ नहीं एक इन्तिज़ार है तो ये है ॥ हमारी क़ब्र प अनवर लिखा ये उस गुल ने। ग़िलोंदे नाज़ का मेरे मज़ार है तो ये है ॥ ४६ ॥

ग़ज़ले नव्वाब मुमताजुद्दौला, मुमताज।

जिन्दगी भर न कोई मिलने की सूरत होगी। बाद मरने के भी हमको यही हसरत होगी ॥ दो घड़ी आपके बाइस से बहलता है जी। नाम उठने का जो लोगे मुझे वहशत होगी ॥ अ-बज़ए यार के सौदे में चलें सहरा को। हज़रते ख़िज्र की रस्ते में ज़ियारत होगी ॥ दो घड़ी रात से दिल उलटा हुआ है ग़मे वस्ल। सुबह हो आयगी जिस वक़्त क़यामत होगी ॥ कुल उसी के लिये है जामे शराबे कौसर। जिसको ऐ पीरेमुग़ां तुझसे इरादत होगी ॥ आबे ग़मख़ोर है मौजे मए इश्क़ ऐ मुमताज। यह पियाला वो पियेगा जिसे हसरत होगी ॥ ४७ ॥

ग़ज़ले अब्दुल्लाः ख़ां, मेह्र।

तबीअत अपनी अपनी आज़माए जिसका जी चाहे। यही गू है यही मैदां है आए जिसका जी चाहे ॥ इज़ाबे नूह आया है न टूटा बांध क़ुल्ज़ुम का। घड़ी भर रोए हैं तूफ़ां उठाए जिसका जी चाहे ॥ जलाया है बुताने शोलःखू ने बाइए दिल

को। लगी अच्छी नहीं होती बुझाये जिसका जी चाहे ॥ तेरी चुप चुप से क्या क्या हर कोई बातें सुनाता है। मेरी तकदीर बिगड़ी है बनाये जिसका जी चाहे ॥ खराबी है रगे आशिक की बरबादी अगर होगी। इसे काबः सुना करते हैं ढाए जिसका जो चाहे ॥ शहादत नक़्द जां देकर खरीदी कूए कातिल में। खुला है मौत का बाजार जाए जिसका जी चाहे ॥ सियह बख़्तों को रश्क आता है क्यों रौशन कलामों पर। चिरागे बज़्मे आलम हैं जलाए जिसका जी चाहे ॥ हया से मुसकिरा कर वस्ल की शब नाज़नीं बोला। हमें नींद आई है सोते हैं आए जिसका जी चाहे ॥ दुरे गोशे सनम से गौहरे अशआरे मेहर अच्छे। ज़रा जौहर शिनासों को दिखाए जिसका जीचाहे ॥ ४८॥

गज़ले नव्वाब सैयद मुहम्मद खां, रिन्द।

ज़बाने गैर से जब नाम तेरा जानेजां निकाला। लगी एक आग सबुओं से कि बस सर से धुआं निकाला ॥ न दिखलाया किसी दिन बूंद भर पानी पसीने ने। तेरा चाहे ज़कन ए जानेजां अंधा कुआं निकला ॥ दिला किस दश्ते पुर आफत में तनहा ले चला मुझको। कभी इस राह से होकर सलामत कारवां निकला ॥ दिले सोजां को मेरे साथ गर गाड़ा लहद में भी। तो यारो देख लेना क़ब्र से मेरी धुआं निकला ॥ सुआ था इश्के काकुल में पस अज मुरदन लहद से भी। मिसाले इश्कपेचः पेच दर पेच उस्तुख्वां निकला ॥ खलिश मौजूद है सीने में उसके तीर मिज़गां की। जिगर से रिन्द के ईसानफस कांटा कहां निकाला ॥ ४९ ॥

नव्वाब सैयद मुहम्मद खां बहादुर, रिन्द।

हकीकत में उसे मंजूर खातिर यां न आना था। फकत होला था दर्दे सर का सन्दल का बहाना था॥ शबे फुरकत में यह हालत रही बेताबिए दिल से। सिरहाने पांव थे और पांवते मेरा सिरहाना था॥ न दी आराइशे गेसू ने फुरसत बात करने की। मुकाबिल आइना था हाथ में काफिर के शाना था॥ जो मर जाऊं तो लौहे कब्र पर मेरे ये खुदवाना। मरा यह दर्दे फुरकत से कजा का एक बहाना था॥ हमेशा से हदफ हूं नावके मिज़गाने खूबां का। हुआ तीर अफगनों का शौक जिसको मैं निशाना था॥ भरी रहती थीं इनमें सूरतें आईन:रूयों की। यह अपना खानए दिल भी कभी आईन:खाना था। किसी दिल को मुहब्बत से तेरी खाली नहीं पाया। तेरा चरचा था हर महफिल में तेराही फसाना था॥ बढ़ाया क्यों मरज़ अपना किया क्या तूने ओ नरगिस। उन आंखों से तुझे बीमार क्या आंखें लड़ाना था॥ छुड़या रिन्द हमसे आस्मां ने उसका दरवाजा। यही घर था हमारा और उसका आस्तानां था॥५०॥

नव्वाब सयद मुहम्मद खां बहादुर, रिन्द।

अय परी याद है वह नाज़ से आना तेरा। मुंह को शरमा के दुशाले में छिपाना तेरा॥ आंखें नीचे किये शरमाए हुए मुंह फेरे। मुसकिरा कर वो गिलौरी का चबाना तेरा॥ नक्श है दिल प: मेरे आज तलक ऐ ज़ालिम। सबकी नज़रों को बचा आंख लड़ाना तेरा॥ सांप सा लोटता है छाति प अब आता है याद। बिगड़ी जुल्फों को वो हर बार बनाना तेरा॥ जानेजां याद है बोसे के लिये बक्त को शब। मिन्नतें करना

मेरा मुंह का छिपाना तेरा ॥ एक इक चीज को मैं याद किया करता हूं। कभी चोटी कभी गरदन कभो शाना तेरा ॥ मन्नतें मनियां दरगाहों में चिल्ले बांधे। पर मयस्सर न हुआ साथ सुलाना तेरा ॥ कहियो अय बादे सबा मरता है आशिक तेरा। कूचए यार में हो गर कभी जाना तेरा ॥ कितना समझाया समझता नहीं तू ओ जालिम। दिले बेताब यही है जो सताना तेरा ॥ देख कर कूचे में अपने मुझे बोला वह शोख। नहीं कम्बख्त कहीं और ठिकाना तेरा ॥ जब मैं रोता हूं तो हँस कर मुझे फरमाते हैं। आंखें फोड़ेगा अबस अश्क बहाना तेरा ॥ दिले बेताब घड़ी भर तो मुझे सोने दे। कहर है रोज का रातों को जगाना तेरा ॥ आज मर जाने प राजी हूं तेरे सर की कसम। हो यकीं मुझको अगर गोर पै आना तेरा ॥ दम में दम बाकी है जब तक न उठा यार से हाथ। रिन्द दुशमन है तो हो सारा जमाना तेरा ॥ ५१ ॥

गजले तुराब।

हलोले कारवां बांगे जरस है। गवाहे दर्दे दिल एक नालः बस है ॥ नहीं काटे से कटती हिज्र की शब। जुदाई का तो एक दिन एक बरस है ॥ गुलिस्तां जाय ऐशे बुलबुलां हो। हमें तो यार बिन कुंजे कफस है ॥ बुते जालिम नहीं सुनता है मेरी। गरीबों का खुदा फरियादरस है ॥ अबस है आरजू दुनियाय दूं की। तुराब अल्लाह बाकी बस हवस है ॥ ५२ ॥

गजले मुन्तजिर।

कोई लेगया जो मैं इल्तिजा कभी कुछ कहा कभी कुछ कहा। मेरे दिल का सोच के मुद्दआ कभी कुछ कहा कभी

कुछ कहा ॥ तुझे खत है तुझे है जुनूं तू खिताब ले कहीं अपना खूं। योंहीं उसने मुझको सुना सुना कभी कुछ० ॥ अरे ओ दीवाने किधर चला इसे यार रखियो बचा भला। मुझे उसने जान से मुब्तिला कभी कुछ० ॥ न तो गालियो मुझे दी कोई न वो वाद: बोसे का सच हुआ। तेरी बात को है कयाम क्या कभी कुछ० ॥ मैं किनारा लाख किया किया मैं हजार उसके न मुंह लगा। प ये रोझ उसको रही सदा कभी कुछ० ॥ जो हरम मे रब्बे हरम है तू तो कनिश्के दिल में सनम है तू। यही हमने जानके अय खुदा कभी कुछ० ॥ सनमा मुखम्मसो रेखता मियां मुन्तजिर से जो हो चुका। तेरे वस्फे हुस्न में बारहा कभी कुछ कहा कभी कुछ कहा ॥ ५३ ॥

५ गजले बाबू हरिश्चन्द्र, रसा।

असीराने कफस सहने चमन को याद करते हैं। भला बुलबुल प यों भी जुल्म ऐ सैयाद करते हैं ॥ कमर का तेरे जिस दम नकश हम ईजाद करते हैं। तो जां कुर्बान आकर मानियो बिहजाद करते हैं ॥ पसे मुरदन तो रहने दे जमीं पर ऐ सबा मुझको। कि मिट्टी खाकसारों की नहीं बरबाद करते हैं ॥ दमे रफ्तार आती है सदा पाजेब से तेरी। लहद के खुफ्तगां उट्ठो मसीहा याद करते हैं ॥ कफस में अब तो ऐ सैयाद अपना दिल तड़फता है। बहार आई है मुरगाने चमन फरयाद करते हैं ॥ बता दे ऐ नसीमे सुबह शायद मर गया मजनूं। ये किसके फूल उठते है जो गुल फरयाद करते हैं ॥ मसल सच है बशर को कद्रे नेअमत बाद होती है। सुना है आज तक हमको बहुत वह याद करते हैं ॥ लगाया बागबां क्या जख्म कारी दिल

प बुलबुल के। गरीबां चाक गुंचे हैं तो गुल फरयाद करते हैं॥ रवा मानी न किस्म अब हाल अपनी बेकरारी का। बरंगे गुंचः अब मजमूं तेरे फरयाद करते हैं॥ ५४॥

गजल।

ग़मे जुदाई का सदमा नहीं सहा जाता। हराम मौत न होती तो जह्र खा जाता॥ हंसी है खेल है दानिस्त में तेरी ऐ बुत। है अपनी जान से एक बन्दए खुदा जाता॥ जो गाह गाह भी होता विसाले यार नसीब। तपे फिराक कलेजा न मेरा खा जाता॥ वह करवटों का बदलना था ताबो ताकत तक। तेरे मरीज से अब तो नहीं हिला जाता॥ ५५॥

गजले सौदा।

डरता हूं मुहब्बत में मेरा नाम न होवे। दुनियां में इलाही कोई बदनाम न होवे॥ शमशीर कोई तेज सी लाना मेरे कातिल। ऐसी न लगाना कि मेरा काम न होवे॥ आता है मेरी गोर प हमराहे रकीबां। यानी मुझे तुरबत में भी आराम न होवे गर सुबह को चाक अपने गरीबां का दिखाऊं। ऐ जिन्दः दिलां हश्र तलक शाम न होवे॥ जो देता है बोसे को तवक्कय को फुर्गां तू। टुक देखियो सौदा ये तेरा खाम न होवे॥ ५६॥

मुंशी बांके बिहारी लाल, राहत।

वहशते दिल ने गरेबां से किये तार जुदा। गिरियः की तार जुदा रंजे अबेतार जुदा॥ तन से जां होवे जुदा जां से तनेजार जुदा। लेक आशिक से तो यारब न हो दिलदार जुदा॥ कजअदाई से जो लिखता है वो उलझी बातें। खत लिफाफे से नहीं होता है जिनहार जुदा॥ हुवे दिलदार प क्यों काकुले

पुर पेच न हो। संग से भी कहीं होता है भला मार जुदा॥ जिसको देखो वही दो गज़ का मुड़ासा बांधे। आह इस वक़्त में सर से हुई दस्तार जुदा॥ कुछ समझ कर नहीं दुनिया में मेरा दिल लगता। एक दिन होगा जो यह बाग़े फ़िज़ादार जुदा॥ ऐशे दुनियां न कभी रंज से ख़ाली देखा। जैसे गुलशन में न गुल से है कभी ख़ार जुदा॥ निगहे यार से है तुर्फ़ः तमाशा राहत। मज़बो कफ़ जुदा वस्ल का इक़रार जुदा॥ ५७॥

नव्वाब सैयद मुहम्मद ख़ाँ, रिन्द।

तुम्हारे हाथ से तंग आये हैं ख़ूं अपना करते हैं। बमजबूरी गले को काटते हैं तुम प मरते हैं॥ रहे पुरख़ौफ उलफ़त में क़दम ऐ रिन्द धरते हैं। तमन्ना जिन्दगी की है न मरजाने से डरते हैं॥ फ़िराक़े यार में दिन जिन्दगी के अपने भरते हैं। सिसकते हैं पड़े आशिक़ न जीते हैं न मरते हैं॥ गली से यार की आगे क़दम मुश्किल से पड़ता है। ज़मीं पावों पकड़ती है उधर से जब गुज़रते हैं॥ न पहने पैरहन ख़ाकिस्तरी क्यों सूरते क़ुमारी। मुहब्बत का किसी ख़ुशक़द के दम हम भी तो भरते हैं॥ चलो तुम भी शहीदाने मुहब्बत की मज़ारों पर। ज़ियारत को फ़िरिश्ते आसमानों से उतरते हैं॥ बहम्द अल्लाह मुहब्बत दोनो जानिब से बराबर है। वह हम पर जान देते हैं अगर हम उन प मरते हैं॥ मही ख़ुर जाय क़ुर्से सीमो ज़र के रात होते हैं। नज़र उनको हुई है रात दिन सदके उतरते हैं॥ नहीं मालूम उन्हें क्या हाल मेरी बेक़रारी का। ग़लत कहते हैं दम देते हैं झूठे हैं मुकरते हैं॥ समा है रोज़ अब तो इश्क़ का इस जाने मुज़तर को। जो होगी जिन्दगी अब जायेंगे बिलफ़ेल स-

रते हैं ॥ शरीके बज़्म हैं गो दोस्तों की पासे खातिर से । न स-
मझो इनको जिन्दों में किसी पर रिन्द मरते हैं ॥ ५८ ॥

नव्वाब सैयद मुहम्मद खां, रिन्द।

चलती रही उस कूचे में तलवार हमेशः । लाशेंही निक-
लते रहे दो चार हमेशः ॥ गुल खिलते रहें चहचहे करती रहे
बुलबुल । यारब रहे आबाद ये गुलज़ार हमेशः ॥ यां तुख्मे त
मन्ना से उगा करता है संबुल । गुलखाते हैं हर फ़स्ल में दो
चार हमेशः ॥ तड़पा करें कूचे में तेरे सैकड़ों कुश्ते । रंगीं रहे
ख़ूं से तेरी तलवार हमेशः ॥ मुझ तिश्नए दीदार को किस रोज़
छकाया । प्यासाही रहा ख़ूं को वह ख़ूंख़्वार हमेशः ॥ मुश्ताकों
ने तेरे न लिया कौड़ीयों के मोल । बिकता रहा यूसुफ़ सरे
बाज़ार हमेशः ॥ है ज़ुल्फ़े मुसल्सल तेरी या दामे बला है । हो
रहती हैं दो चार गिरफ़्तार हमेशः ॥ हंगामे नए रोज़ हुआ
करते हैं बरपा । फ़ितनेही उठाती है वह रफ़्तार हमेशः ॥
क्यों कर तू मसीहा हुआ मशहूर जहां में । मरते हैं तेरे हाथ
से बीमार हमेशः ॥ अय रिन्द जुनूं में भी न सहरा को गये हम ।
खाया किये पत्थर सरे बाज़ार हमेशः ॥ ५९ ॥

मुंशी बांकेबिहारीलाल, राहत।

थी हाथ में वह ज़ुल्फ़े मुअम्बर तमाम रात । शाही थी मु-
झको चीनो ख़ुतन पर तमामरात ॥ दुनियां जो है बिसात है
क्या हर्फ़े सल्तनत । कहता था ख़्वाब में ये सिकन्दर तमाम
रात ॥ एहसान बेज़री से है आरामे जां मुझे । रहते हैं ख़ौफ़े
ज़र में तवंगर तमाम रात ॥ कल वस्ल भी हुआ तो कहा दर्द
है मुझे । पकड़े रहा है हाथ से वह सर तमाम रात ॥ तकिये

जो रख के बीच में सोया वो मेरे साथ। समझा में उसको सहे सिकन्दर तमाम रात॥ सुबहे अजल न साथ चला कुछ भी रा- हता। मैं बांधता रहा जरो गौहर तमाम रात॥ ६०॥

नव्वाब सैयद मुहम्मद खां बहादुर, रिन्द।

सब धरी रह जायगी तेग आजमाई आपकी। चार तलवारों में शल होगो कलाई आपको॥ खुरक होवे उसकी दुश्मन जो तुम्हारा दोस्त हो। करती है बेगानः सब से आशनाई आपकी॥ बाज आया बन्दगी से मैं तुम्हारी ए बुतो। क्या मिलाएगी खुदा से आशनाई आपकी॥ हम तो मिलने से तुम्हारे हो चुके थे नाउमेद। शुक्र है अल्लाह ने सूरत दिखाई आपकी॥ अब तुम्हें बशशाश देखा आन बैठे कोई दम। उठ गये सोहबत से जब मरजी न पाई आपकी॥ बेतकल्लुफ हूजिये लिल्लाह मुंह दिखलाइये। नकद जां हाजिर है यां भी रूनुमाई आपकी॥ तर्क उलफत रिन्द से अब बे जेहत बेहतर नहीं। शुहरए आ- फाक होगी बेवफाई आपकी॥ ६१॥

नव्वाब सैयद मुहम्मद खां, रिन्द।

गुल किसी शमअरू प खा बैठे। दिल को परवाना:सां बना बैठे॥ मह के मुंह पर हवाइयां छूटें। चांदनी में अगर वह आ बैठे॥ तौलना तेग का अबस हर बार। जो लगाना हुआ लगा बैठे॥ है वो किसमत फकीर होजाऊं। मेरे सर पर अगर हुमा बैठे॥ रख दिया सर को पाय कातिल पर। मरते मरते भी जो जला बैठे॥ जज्बए दिल से क्यों तुम्हें खींचा। बे बुलाये जो पास आ बैठे॥ राहे उलफत में रक्खा बाद कदम। सर से हम पहले हाथ उठा बैठे॥ बग चला है तो फिर न हकियो दिल। टेढ़ी

सोधी जो वह सुना बैठे ॥ कुश्तगाने वफ़ा शहीद हुए। अब पढ़ें आप मर्सिया बैठे ॥ खाक होकर अगर उठें तो उठें। अब तो दर पर तुम्हारे आ बैठे ॥ निकलिये घर से तालिबे दीदार। रास्तों में हैं जा बजा बैठे ॥ बोसए खत तलब जो मैं ने किया। खाले रुख को भी वह छिपा बैठे ॥ सञ्ज रंगत पः उस परी के रिन्द। क्या अजब है जो जह्र खा बैठे ॥ ६२ ॥

हज़रत अबू ज़फ़र बहादुरशाह, ज़फ़र।

मौत अगर आई मरीज़े इश्क को अच्छा हुआ। मर गया क्यों उसको कहते हो कहो अच्छा हुआ ॥ नामःबर अच्छा न था देता खुला गर वह जवाब। हर्फ़ मतलब उस ने रक्खा गो-मगो अच्छा हुआ ॥ आशना उस बद्के खूबो से न हो कहते थे हम। उसने गर ऐ दिल दिया तुझको दबो अच्छा हुआ ॥ खूं चकां रहता है बेहतर जख्म दिल का इश्क में। यह हुआ अच्छा न अय चारःगरो अच्छा हुआ ॥ आह तो दमसाज थी नालः भी अब हमदम हुआ। एक से ऐ दिल हुए साथ अपने दो अच्छा हुआ ॥ तीरे मिजगां की खलिश से कुछ नहीं शिकवा मुझे। तूने यह नश्तर दिये दिल में चुभो अच्छा हुआ ॥ जान दे दी तुम पर अपनी आशिके जांबाज ने। चुक गया किस्सा ही सारा आज लो अच्छा हुआ ॥ तूने ऐ दिल क्यों हवाख्वाही जताई थी उसे। तुझ प भड़का इससे गर वह शोअलःरू अच्छा हुआ ॥ जिसने पाया है यहां कुछ खो के पाया है ज़फ़र। जां मुहब्बत में अगर दी तूने खो अच्छा हुआ ॥ ६३ ॥

ख्वाजः हैदरअली, आतिश।

ठोकरें मार के मुरदों को जिलाते न चलो। इश्क के खाक

में जिन्दों को मिलाते न चलो ॥ उनकी पाजेब की झनकार से आती है सदा। फ़ित्नए हश्र को बदख़्वाह जगाते न चलो॥ बाग में सैर को आये हो तो फिर लो दो गाम। कब्क़ो ताऊस का झगड़ा हि चुकाते न चलो ॥ साइले बोस: को मुंह फेर के कहता है वो शोख़। नेकतीनत हो जो बदज़ाती प आते न चलो ॥ गिरे पड़ते हैं कुओं और गढ़ों में रहगीर। ज़क़नी नाफ़ के आलम को दिखाते न चलो ॥ दो कदम साथ जो चलता हूं मैं गिरियां उनके। यही फ़रमाते हैं हंस हंस के हंसाते न न चलो ॥ मश्क़ रफ़्तार करो गर्मरुई को न सही। कौनसी चाल है यह आग लगाते न चलो॥ भाग कर आशिक़े शैदा से कहां जाओगी। कदम आहिस्त: रखो ठोकरें खाते न चलो ॥ अपने हाथों मे न अंधों के गले कटवाओ। यों चलो पांव की आवाज़ सुनाते न चलो ॥ कूए माशूक़ में ऐ आशिक़ो जा बैठो तो। यह शगूं नेक नहीं ख़ाक उड़ाते न चलो ॥ इनसे कह दे कोई आते हैं जो यह निगहे अब्र। चश्मे आतिश की तरह आंसू बहाते न चलो ॥ ६२ ॥

गज़ले नज़ीर।

कहा जो हमने हमें यां से क्यों उठाते हो। कहा कि इस लिये तुम यां जो गुल मचाते हो ॥ कहा लड़ाते हो क्यों हमसे गैर को हमदम। कहा कि तुम भी तो हमसे निगह लड़ाते हो॥ कहा जो हाले दिल अपना तो उसने हँस हँस कर। कहा ग़लत हैं ये बातें जो तुम बनाते हो ॥ कहा जताते हो क्यों हमको रोज नाज़ो अदा। कहा कि तुम भी तो चाहत हमें जताते हो॥ कहा कि अर्ज करें हम पः जो गुजरता है। कहा

खबर है हमें क्यों जबां प लाते हो ॥ कहा कि रूठे हो क्यों ह-मसे क्या सबब इसका। कहा सबब है यही तुम जो दिल छिपाते हो ॥ कहा कि हम नहीं आने के यां तो उसने नजीर। कहा कि सोचो तो क्या आप से तुम आते हो ॥ ६५ ॥

संस्कृत ग गोपाल भट्ट उपासिनी कृत।

सुमंजुदर्शयाशु सखे सुन्दराननम्। भ्रमाम ईश त्वहते विभीषि काननम् ॥ अनेकभीतितस्त्वया सुरचिता वयम्। अनौचितो ह्ययं चणे कृपावसाननम् ॥ न किं स्मरस्युपेन्द्र तन्नुन: कृते तदा। धृतो गिरि: कृतं च वासवावमाननम् ॥ त्वदीयदर्शनं विना चणं युगायते। त्वमेव नो धनं सखे त्वमेव प्राणनम् ॥ नचास्ति सुरतनाथ गोपिकात्मजो भवान्। अजासि धर्म गोपिता यशोविताननम् ॥ जगद्भयापहारि नामकीर्त्तनं नु ते। कृतेनईश जन्मयच्छ्रुतिप्रमाणनम् ॥ शरत्सुजातपंकजाभचचुश्रेचणात्। स्वदासिका: स्मनिघ्नतो न किं कृपाणनम् ॥ उपासनीरिमा: स्मन: कृतार्थ याधिहन्। कुचेषु धेहिन: पदं मनोजमाननम् ॥ ६६ ॥

नव्वाब सैयद मुहम्मद खां बहादुर, रिन्द।

क्या कहिये काटी हिज्र में क्योंकर तमाम रात। गुजरी जो कुछ गुजर गई मुझ पर तमाम रात ॥ नींद आई तुम बगैर न दमभर तमाम रात। तारे गिना किया हूं मैं दिलवर तमाम रात ॥ अब काटते हैं हम कलको हजतिराब में। सोते हैं आप चैन से क्योंकर तमाम रात ॥ ले ले के करवटें हो मेरी जान सुबह को। ढूंढ़ा किया तुम्हें दिले मुजतर तमाम रात ॥ अय जान यादे अबरुए खमदार में तेरी। रगड़ा किया गले प मैं खंजर तमाम रात ॥ मिजगां तुम्हारी शाम से जो याद आ गई।

दिल में चुभा किये मेरे नश्तर तमाम रात ॥ शबबाश आज तो मेरे घर ही करो करम। सोया नहीं हूं कल से मैं दिन भर तमाम रात ॥ हो जाओ आके सीनः ब सीनः कहां तलक। फड़का करे मेरा दिले मुजतर तमाम रात ॥ मानो यह अर्ज़ रिन्द रहो आज उसके पास। बहरे खुदा व बहरे पयम्बर तमाम रात ॥ ६७ ॥

गज़ले मीर नव्वाब, मूनिस।

बजद हो बुल बुले तस्वीर को जिसकी बू से। उससे गुल रंग का दावा करे तो किस मुंह से ॥ उल्फ़ते सर्व के ऐ फ़ाख़ता दम खूब भरे। बस कि वहशत मुझे होती है तेरी कू कू से ॥ सच बता किस्से हुई रात को हाथा पाई। नौरतन आज जो ढलका है तेरे बाजू से ॥ किसकी आंखों का पड़ा परतवः ये पानी में। बू चली आती है नरगिस को हबाबे जू से ॥ शकरी कन्द को झूठों कभी पूछे वो न बात। ख़्वाब में जो कोई उसके लबे शीरीं चूसे ॥ कल तो आग़ोश में शोख़ी से ठहरने न दिया। आज की शब तो निकल जाओ मेरे पहलू से ॥ एक दिन वह था कि तकिया था किसी का ज़ानू। अब सर उठता ही नहीं अपना सरे ज़ानू से ॥ नज़अ में हूं मेरी मुश्किल करो आसां यारो। खोलो तावीजे शफ़ा जल्द मेरे बाज़ू से ॥ शोखिये चश्म का दीवाना है किसका मूनिस। आंखें मलता है जो जा जा के तुमे आहू से ॥ ६८ ॥

गज़ले ख़्वाजः हैदरअली, आतिश।

तमाशाए चमन से सैरे कूए यार बेहतर है। गुलो संबुल से यां ख़ारो ख़से दीवार बेहतर है ॥ जबींसाई को संगे आस्ताने यार बेहतर है। कमर तकिये को किसे दोस्त की दीवार

बेहतर है॥ यही आवाज आती है दरे मैक़ो मुहब्बत से। इलाका इससे मुमकिन हो तो यह सरकार बेहतर है॥ अतिब्बा देख कर बीमार को तेरे ये कहते हैं। बहम पहुंचे तो इसको शरबते दीदार बेहतर है॥ कहा करते हैं आशिक लोग अक्सर प्यार से यूसुफ। तुमारे हुस्न को भी गरमिये बाजार बेहतर है॥ शबाहत से है रश्के सुबह नौरोजी ये पेशानी। हिलाले ईद से वह अबरुए खमदार बेहतर है॥ सुना है शाअरों से बेशतर कन्दे मुकर्रर भी। लबे शीरों के बोसे लेने में तकरार बेहतर है॥ निगाहें मरदुमे दीदः को हरदम यह सुझातीं हैं। मिले लूटे से जितनी दौलते दीदार बेहतर है॥ असीरे इश्क को दे खौफ आजादाने आलम पर। जहां के तन्दुरुस्तों से तेरा बीमार बेहतर है॥ रहे जाते हैं आशिक नीमजां क्या कज़ करते हो। कबाए तंग पर थोड़ीसी कजदस्तार बेहतर है॥ चलेगा कबक क्या तू तो करेगा क्या सखुनसाजी। तेरी गुफ्तार बेहतर है तेरी रफ्तार बेहतर है॥ बहारे बाग में नज्जारए महबूब दिखलाता। वह कामत सर्व से तो गुल से वह रुखसार बेहतर है॥ सवाले बोसः पर हँस कर वह बुत कहता है अय आतिश। खयाले बद अगर गुजरे तो इस्तिगफार बेहतर है॥ ६९॥

गजले वो शीरीं जान, नाज।

सबब यह है जो बुलबुल माइले फरयाद होते हैं। सफर है मौसिमे गुल का चमन बरबाद होते हैं॥ बहम सामाने मैखवारी है मैकश शाद होते हैं। बहारे गुल है साकी मैकदे आबाद होते हैं॥ कयामत की अदाएं इन हसीनों को भी होती हैं। हजारों कत्ल करने के करिश्मे याद होते हैं॥ नहीं

होती दिले उश्शाक को तस्कीं कभी हासिल। य वह उजड़े नगर हैं जो नहीं आबाद होते हैं॥ तुझे परहेज लाजिम जान है हुस्ने हसीनां से। यह वह कूचा है जिस में सैकड़ों बरबाद होते॥ ७०॥

गजले फकीर मुहम्मद खां, गोया।

हसरत ऐ जां शबे जुदाई है। मुजदए दिल की मौत आई है॥ तुझ से मग़रूर की झुकी गरदन। यह भी एक शाने किबरियाई है॥ उसने तलवार को सँभाला है। देखिये किसी की मौत आई है॥ जाहिदा कुदरते खुदा देखो। बुत को भी दावए खुदाई है॥ मुह है गोया का उसका बोसा ले। बात दुश्मन ने यह बनाई है॥ ७१॥

गजले मीर नव्वाब, मूनिस।

दिन फिर अब फस्ले बहारी के हैं आनेवाले। कह दो तैयार रहें दश्त के जानेवाले॥ साफ कहते हैं मेरी कब्र पर आनेवाले। खाक होजाते हैं यों दिल के लगानेवाले॥ बागबां बुलबुलो ताजस की खातिर है जुरूर। बज्मे गुल के हैं यही नाचने गानेवाले॥ कर दिया तुमने जो दर बन्द तो क्या होता है। आएंगे फांद के दीवार को आनेवाले॥ घुंगरुओं से तेरे हर गाम प आती है सदा। मुरदे ठोकर से जिलाते हैं जिलानेवाले॥ तू वो काफिर है कि जा जा के सनमखानों में। दम तेरा भरते हैं नाकूस बजानेवाले॥ यह सितम दीदओ दानिस्तः इधर तो देखो। गैर से कौन हो तुम आंख लड़ानेवाले॥ कब्र में भी मुझे आराम से सोने न दिया। वाह ऐ फितनए महशर के जगा-नेवाले॥ कह दो बैठे रहें जब तक न वो कातिल आए। अभी

जल्दी न करें लाश उठानेवाले ॥ दिल प कुछ पेच पड़ेगा तो बिगड़ जाएगी। हाय रोके हुए भी बाल बनानेवाले॥ अपनी वहशत किसे दिखलाइये ऐ दश्ते जुनूं। हाय जीते नहीं मजनूं के जमानेवाले॥ देख कर ख्वाबे अदम में मुझे कहता है वो शोख। सो गया भी मेरे रातों को जगानेवाले॥ गैर भड़काएं जो उसको तो अजब क्या मूनिस। आग पानी में लगाते हैं लगानेवाले ॥ ७२ ॥

गजले बो हुस्न जान, जुहरा।

हौसला आपको जफा का है। यह नतीजा मेरी वफा का है॥ नकद दिल लेते हैं वो शौक से लें॥ क्या हुआ माल आशाना का है॥ मैकशों लो बहार आ पहुंची। रंग बदला हुआ हवा का है॥ क्या अजब मेरे घर वो बुत आए। कारखाना बड़ा खुदा का है॥ न दिलासा न दिलबरी न वफा। तर्ज यह यारे बेवफा का है॥ शेख ने काबः बिरहमन ने दैर। दरे मैखानः हमने ताका है॥ जिस प रखते हैं हम जबीने नियाज। वह निशां किसके नकशे पा का है॥ फर्श से अर्श पर गई जुहरा। वाह क्या मरतबा हया का है ॥ ७३ ॥

गजले बो कमरनजान, मुश्तरी।

दिल तू उम्मीदवार है किसका। बेवफा है वो यार है किसका॥ नीम बिस्मिल पड़ा तड़पता हूं। तायरे दिल शिकार है किसका॥ शब को जागी हो याकि मय पी है। अँखड़ियों में खुमार है किसका॥ यार आया शराब दे साकी। अब बता इन्तिजार है किसका॥ इस सरा में सब आये हैं मिहमां। दारे-फानी दियार है किसका॥ जो वो करता है खूब करता है।

अब पर इख्तियार है किसका॥ खाक में क्या शकोहे नाज मिला। यह गुबारी गुबार है किसका॥ सात पर्दों में गर नहीं कोई। फिर फलक पर्दःदार है किसका॥ कब्रे आशिक प होके वह अनजान। कहते हैं यह मजार है किसका॥ आप तो समझे गैर को अपना। कहिये यह जांनिसार है किसका॥ मैं सजाए गुनह प पूछुंगा। नाम आमुर्जगार है किसका॥ मर्म तजई नहीं है गर वह माह। मेहर आईन दार है किसका॥ मुश्तरी गर वह सबसे है पिनहां। जलवः यह आशकार है किसका॥ ७४॥

फकीर मुहम्मद खां बहादुर, गोया।

कत्ल उश्शाक किया करते हैं। बुत कहीं खौफे खुदा करते हैं॥ खून रोती है चमन में बुलबुल। हम गुलों से जो हँसा करते हैं॥ अपने साकी को शबे फुरकत में। पानी पी पी के दुआ करते हैं॥ शोरे महशर से डरें क्या आशिक। ऐसे हंगामे हुआ करते हैं॥ मेंहदी मलने के बहाने कातिल। कफे अफसोस मला करते हैं॥ जो हमें भूल गया है जालिम। उसको हम याद किया करते हैं॥ हम बने चांद के हाले गोया। गिर्द उस मह के रहा करते हैं॥ ७५॥

गजले जहांगीर शाहजादः।

गर यार न हो साकी पैमान हुआ तो क्या। मामूर शराबों से मैखानः हुआ तो क्या॥ हम इश्क के बन्दे हैं मजहब से नहीं वाकिफ। गर काबः हुआ तो क्या बुतखानः हुआ तो क्या॥ जब दर्द न हो दिल में क्या इश्क मजा देवे। कहने को भला कोई दीवानः हुआ तो क्या॥ इस इश्क की आतिश से जलते हैं सभी कोई। गर शमअ हुई तो क्या परवानः हुआ तो क्या॥ माशूक

से कानों तक अब तक नहीं पहुंचा मैं। यह अश्क मेरा यारो दुरदानः हुआ तो क्या॥ अहँगीर था शहजादा था इश्क से वह गाफिल। आबाद हुआ तो क्या वीरानः हुआ तो क्या॥७६॥

गजले बहादुरशाह फिरदूसमकां, जफर।

जाके गुलजार से सैयाद फिर आया उलटा। क्या नसीबा है तेरा बुलबुले शैदा उलटा॥ तने उरयानी से बेहतर नहीं दुनियां में लिबास। यह वो जामा है कि जिसका नहीं सीधा उलटा॥ गालियां देते हैं उनसे तो खफा होते हैं। मेरे यारों से जो करते हैं वह शिकवा उलटा॥ नाम उसने जो सुना इश्क में बीमारी का। मेरे दर पर से मसीहा भी फिर आया उलटा॥ याद आया जो मुझे कूए सनम हश्र के दिन। दरे फिरदूस तलक जाके फिर आया उलटा॥ कैस की तरह से होजाते हजारों मजनूं। परदः मुहमिल का जो रखती कभू लैला उलटा॥ नाले करने से मेरा यार खफा होता है। रहम को जा उसे आजाता है गुस्सा उलटा॥७७॥

५ गजले बाबू हरिश्चन्द्र, रसा।

दिल आतिशे हिजरां से जलाना नहीं अच्छा। अय शोलःरुखो आग लगाना नहीं अच्छा॥ किस गुल के तसव्वुर में है ऐ लालः जिगर खूं। यह दाग कलेजे प उठाना नहीं अच्छा॥ आया है अयादत को मसीहा सरे बालीं। ऐ मर्ग ठहर जा अभी आना नहीं अच्छा॥ सोने दे शबे वस्ले गरीबां है अभी से। ऐ मुर्गे सहर शोर मचाना नहीं अच्छा॥ तुम जाते हो क्या जान मेरी जाती है साहब। अय जाने जहां आपका जाना नहीं अच्छा॥ आजा शबे फुरकत में कसम तुझको खुदा को। ऐ

मौत बस अब देर लगाना नहीं अच्छा ॥ पहुंचा दे सबा कूचए जाना में पसे मर्ग। जंगल में मेरी खाक उड़ाना नहीं अच्छा ॥ आजाय दिल न आपका भी और किसी पर। देखो मेरी आंखें लड़ाना नहीं अच्छा ॥ कर दूंगा अभी कत्ल बपा देखियो जल्लाद। धब्बा ये मेरे खूं का छुड़ाना नहीं अच्छा ॥ ऐ फाख्तः उस सर्वसिहीकद का हूं शैदा। कूकू की सदा मुझको सुनाना नहीं अच्छा ॥ होगा हरेक आह से महशर बपा रसा। आशिक का तेरे होश में आना नहीं अच्छा ॥ ७८ ॥

नवाजिश हुसेन खां, नवाजिश।

वही खोलेगा मुंह एक रोज इन गुंचःदहानों का। कि जिसको ध्यान है जखमों तलक से बेजबानों का ॥ हम उसको आजमाते थे वह हमको आजमाता था। वहम एक खेल सा था कुछ दिनों शगल इम्तिहानों का ॥ समझते हैं मुझे इस्तगफरल्ला और लोगों सा। है जो मैं चूम लूं झुंझला के मुंह इन बदगुमानों का ॥ तुम्हें भूली मेरी अपनी पड़ी थी मैं न कहता था। कि बिठलाना नहीं अच्छा है पास आजुर्दःजानों का ॥ बुताने नातवां में गो है भारी अपना मुरदा भी। उठाना उनके दिल पर बार है हम नातवानों का ॥ ये बुत यकसू है खल्क एकसू करा दे अपने मानों पर। नवाजिश मैं तो कुश्तः हूं इन्हीं की आन बानों का ॥ ७९ ॥

गजले मीरतकी, मीर।

सहरा में सैले अश्क मेरा जाबजा फिरा। मजनूं भी उसकी मौज में मुद्दत बहा फिरा ॥ तालअ जो खूब थे न हुमा आह कुछ नसीब। सर पर मेरे करोड़ बरस तक हुमा फिरा ॥ आंखें

बरंगे नक्शे कदम होगई सफेद । नामे की इन्तिजार में कासिद भुला फिरा ॥ टुक भी न मुड़ के मेरी तरफ तूने की निगाह । एक उम्र तेरे पीछे मैं जालिम लगा फिरा ॥ दैरो हरम में क्योंकि कदम रख सकेगा मीर । इधर तो उससे बुत फिरे उधर खुदा फिरा ॥ ८० ॥

गजले सोज ।

हमारे पास भी गाहे नगाहे आइये साहब । नहीं कुछ राह मिलने की मुझे बतलाइये साहब ॥ किसी के लेने देने में नहीं कोने में बैठे हैं । तुम्हारा गम सताता है उसे समझाइये साहब ॥ पड़े थे दिल के पीछे सो तो उसको ले चले अब क्या । अगर यह जान भी दरकार है सुसताइये साहब ॥ चले ले जान भी अल्लाह अकबर तुम हुए रुखसत । तुम्हारा काम पूरा हो चुका अब जाइये साहब ॥ कयामत तक रहेगी कहने सुनने को वफा तेरी । खड़े रह कर भला इस सोज को गड़वाइये साहब ॥ ८१ ॥

गजल ।

दर पर तेरे हम शाम से बैठे तो सहर की । ए परदःनशीं तुझसे किसी ने न खबर की ॥ घबरा के लगा कहने खुदा हाफिजो नासिर । जिस वक्त यार ने सुनी आवाज गजर की ॥ अबरू को तू अपने न हिला ऐ बुते काफिर । मिहराब न हिल जाय कहीं काबे के दर की ॥ गुल खाए हैं माशूक के हुस्ने के यहां तक । फबती है मेरे जिस्म को ताऊस के पर की ॥ नकशा बदने यार का सब लिख गया लेकिन । मानी से न खींची गई तसवीर कमर की ॥ तुम सामने गैरों के न आया करो साहब ।

पत्थर में भी होजाती है तासीर नजर की॥ गर तुझमे कहूं झूठ खुदा मुझसे यः समझे। बत्ती न धुआं दे मेरी तुरबत पर अगर की॥ ८२॥

गजल रसा।

याद फिर मुझको तेरी जुल्फे परीशां आई। फिर सताने को हमारे शबे हिजरां आई॥ लाके महबूस किया मुझको कहां ए सैयाद। कि कफस तक न कभी बूए गुलिस्तां आई॥ ए परी नाक में दम है तेरी इन जुल्फों से। यह कहां से तेरे मुखड़े की निगहबां आई॥ शबे फुरकत में जो सदमे हुए खालिक है गवाह। आप क्या आए कि कालिब में मेरे जां आई॥ हूं वो लागर कि दमे नजअ मेरी बालीं पर। मौत भी आई तो अंगुश्त बदन्दां आई॥ गम है परवाने को इस बज्म में जांसोजी का। गुल खिलाने को अजब शमअ शबिस्तां आई॥ ८३॥

गजले नव्वाब मिरजा असदुल्ला खां, गालिब।

हजारों ख्वाहिशें ऐसी कि हर ख्वाहिश प दम निकले। बहुत निकले मेरे अरमान लेकिन फिर भी कम निकले॥ डरे क्यों मेरा कातिल क्या रहेगा उसकी गरदन पर। वह खूं जो चश्मेतर से उम्र भर यों दम बदम निकले॥ निकलना खुल्द से आदम का सुनते आये हैं लेकिन। बहुत बेआबरू होकर तेरे कूचे से हम निकले॥ खुदा के वास्ते परदा न काबे का उठा जाहिद। कहीं ऐसा न हो वां भी वही काफिर सनम निकले॥ नहीं मुमकिन कि सीने से तेरा तीरे सितम निकले। जो यह निकले तो दिल निकले जो दिल निकले तो दम निकले॥ भरम खुल जाय जालिम तेरे कामत की दराजी का।

अगर इस तुर्रए पुरपेचो खम का पेचो खम निकले ॥ उलझने से न हम छूटे न तुम गेसू बनाने से। अजब जंजाल है जिससे न तुम निकले न हम निकले॥ हुई जिससे तवक्कय खस्तगी की दर्द पावेंगे। वो हमसे भी जियादः खस्तए तेगे सितम निकले॥ मुहब्बत में नहीं है फर्क जीने और मरने का। उसी को देख कर जीते हैं जिस काफिर प दम निकले॥ कहां मैखाने का दरवाजा गालिब और कहां वाअज। पर इतना जानते हैं कल वो जाता था कि हम निकले॥ ८४॥

गजले असगर अली खां, नसीम देहलवी

हश्र के रोज अगर दादतलब दिल होगा। लब हिलाना मेरे जल्लाद को मुश्किल होगा॥ हश्र को कागजे आमाल दिखाएंगी बशर। मेरे हाथों प फकत आबिलए दिल होगा॥ बोसे हंस कर जो लबे यार के ले लेता था। साकिया जाम न होगा वो कोई दिल होगा॥ कहते हैं कत्ल करेंगे वो लहद पर लाकर। फैसला आज हमारा सरे मंजिल होगा॥ कद्र रहने की नहीं बात जो बिगड़ेगी नसीम। कादहे मैक्र भी एक कासए साइल होगा॥ ८५॥

गजले नजीर।

दूर से आये थे साकी सुनके मैखाने को हम। बस तरस्तेही चले अफसोस पैमाने को हम॥ मय भी है मीना भी है सागर भी है साकी नहीं। दिल में आता है लगा दें आग मैखाने को हम॥ क्यों नहीं लेता हमारी तू खबर ऐ बेखबर। क्या तेरे आशिक हुए थे दर्दोगम खाने को हम॥ हमको फँसना था कफस में क्या गिला सैयाद से। बस तरस्तेही रहे हैं आब औ

दाने को हम ॥ ताक अबरू में सनम के क्या खुदाई रह गई। अब तो पूजेंगे उसी काफिर के मैखाने को हम ॥ बाग में लगता नहीं सहरा से घबराता है दिल। अब कहां ले जाके बैठें ऐसे दीवाने को हम ॥ क्या हुई तकसीर हमसे तू बता दे ऐ नजीर। ताकि शादी मर्ग समझें ऐसे मरजाने को हम ॥ ८६ ॥

गजल।

तोहमत तुम्हारे इश्क की हम पर लगी हुई। रक्खेगी न यह बाल बराबर लगी हुई ॥ मैयत को गुस्ल देना न इस खाकसार को। है खाक उसके कूचे की दिल पर लगी हुई ॥ खींचे से कब निकलती है उसके मिज: की नोक। हैगी कलेजे में मेरे गँसकर लगी हुई ॥ वे चाटे खूं मेरा नहीं रहने की उनकी तेग। बेढब है उसको चाट सितमगर लगी हुई ॥ लाओ तो कत्लनाम: जरा मैं भी देख लूं। किस किस की है मोहर सरे महजर लगी हुई ॥ ८७ ॥

गजल रेखा।

हम दर्दे हिज्रे यार में घबराए जाते हैं। आसार अपने नेक नहीं पाए जाते हैं ॥ चोरी से बोसा सोते में उनका लिया गया। हम सोहबतों के नाम निकलवाए जाते हैं ॥ त्योरी बदल के शोख ने देखा जो एक नजर। आजा तमाम खौफ से थर्राए जाते हैं ॥ लेवेंगे आफताब को वह अपने जाल में। जुल्फों के बाल धूप में सुखलाए जाते हैं ॥ तुमको कसम खुदा की खुदा के रसूल की। हमसे छिपा के खत किसे भिजवाए जाते हैं ॥ मानो न मानो जानेजहां इख्तियार है। हम नेको बद हुजूर को समझाए जाते हैं ॥ रेहां तुम्हें खुदा की कसम सच बयां

कारी। किस गुलबदन के वास्ते गुल खाए जाते हैं॥ ८८॥

गज़ल।

अपने आशिक पर तरस खाना सितमगर चाहिये। यों कटारी जुल्म की गुस्से की खंजर चाहिये॥ खत प खत मैंने जो भेजा उसने कुछ न लिखा जवाब। अपने खत के वास्ते कासिद कबूतर चाहिये॥ मसनदो कालीन क्यों लाए हो है किसको ज़रूर। आशिकों के वास्ते मिट्टी का बिस्तर चाहिये॥ तुम वहां गैरों से बोलो हम यहां तरसें हुज़ूर। इसका शिकवा कुछ नहीं अपना मुकद्दर चाहिये॥ ८९॥

गज़ले मदह।

किया बेहोश मुझको दोदए सागर पिलाने में। मेरा दम ले लिया तुमने बुतो आंखें मिलाने में॥ मिलाना आंख गैरों से व हमसे बेरुखी इतनी। भला तुमको नफा क्या है बताओ दिल जलाने में॥ अदम को सैकड़ों रफ़्तार के ख्वाहां गये मर मर। हज़ारों दिल पिसे देखो सनम के पा हिलाने में॥ शकर औ कन्द की उसको पसन्द आती है कब लज्जत। चखा जिसने मजा होवे लबों से लब मिलाने में॥ उमैदे वस्ल में जाती है मेरी जान ओ मदह। मिलो अब फायदा क्या मोमजनों के घुलाने में॥ ९०॥

गज़ल।

खंजर भी हल्क पर शबे हिजरां में रख लिये। नश्तर चुभो चुभो के रगे जां में रख लिये॥ चोटी जो कुफ्लबन्दी की गूंधी तो लाख दिल। कैदी बना के काकुले पेचां में रख लिये॥ लेकर कलमतराश किये जिनके सर कलम। नाम उनके खूं से लिख के कलमदां में रख लिये॥ ९१॥

गजले मुहम्मद इबराहीम, जौक़।

वह कौन है जो मुझ प तअस्सुफ़ नहीं करता। पर मेरा जिगर देख कि मैं उफ़ नहीं करता॥ क्या क़हर है वक़्फ़ः है अभी आने में उसके। औ दम मेरा जाने में तवक़्क़ुफ़ नहीं करता॥ कुछ और गुमां गुज़रे न दिल में तेरे काफ़िर। दम इसलिये मैं सूरए यूसुफ़ नहीं करता॥ पढ़ता नहीं ख़त गैर मेरा वां किसी उनवां। जब तक कि वो मज़मूं मैं तसर्रुफ़ नहीं करता॥ दिल फ़क़्र की दौलत से मेरा इतना ग़नी है। दुनियां में ज़रो माल प मैं तुफ़ नहीं करता॥ ऐ जौक़ तकल्लुफ़ में है तकलीफ़ सरासर। आराम में है वह जो तकल्लुफ़ नहीं करता॥८२॥

गजले मीरहसन, हसन।

वह जब तक कि ज़ुल्फ़ें सँवारा किया। खड़ा उस प मैं जान वारा किया॥ अभी दिल को लेकर गया मेरे आह। वो चलता रहा मैं पुकारा किया॥ क़िमारे मुहब्बत में बाज़ी सदा। वो जीता किया और मैं हारा किया॥ किया क़त्ल और ज़ानअख़ुश्रो भी की। हसन उसने एहसां दुबारा किया॥८३॥

गजले मिरज़ा सुलैमांक़द्र बहादुर, सुलैमां।

तोड़िए बदमस्ती से शीशओ पैमाना आज। बादए गुलगूं से रंगीं कीजिए मैख़ाना आज॥ शहर से आता है ऐसा कौनसा दीवाना आज। झाड़ती फ़िरती हैं परियां हर तरफ़ वीराना आज॥ मुझको अन्देशा है मै पीते हो तुम फ़स्लेबहार। देखिये क्या गुल खिलाए नरगिसे मस्ताना आज॥ ए परी आग़ोश्ह गले तूने लगाया है उसे। बातें हुशियारी की करता है तेरा दीवाना आज॥ जान से बेज़ार हूं इस शमअरू के इश्क़ में।

साथ लेकर मुझको कूदे आग में परवाना आज ॥ देखूं क्योंकर वो परी होती नहीं शीशे में बन्द। बादे मुद्दत होश में आया हूं मैं दीवाना आज ॥ तलवे सुहलाती हैं परियां खानए जंजीर में। वक्त का अपने सुलेमां है तेरा दीवाना आज ॥ ९४ ॥

विस्मा, तखल्लुस शीरीं।

सुनता है कौन किससे कहूं माजराए दिल। बेहतर य है कोई न किसी से लगाए दिल ॥ क्योंकर रहें हवास जो काबू से जाए दिल। अय काश मौत आए किसी पर न आए दिल ॥ बातें वो दिलफरेब अदाएं वो दिलरुबा। ऐसो परीखिसाल प क्योंकर न आए दिल ॥ बेमेह्रो बेमुरव्वतो नाआशाना हो तुम। तुमसे खुदानख्वास्तः कोई लगाए दिल ॥ शीरीं का यह कलाम है हर वक्त हर घड़ी। जिसको खुदा खराब करे वह लगाए दिल ॥ ९५ ॥

हजरत सुल्तानेआलम वाजिदअलीशाह, अख्तर।

जिगरे आशिके दिलसोज जलाते न चलो। शमअ को महफिले अशरत में रुलाते न चलो ॥ दुरे दन्दां से तो शबनम को रुलाते न चलो। गुंचए बन्द को गुलशन में हँसाते न चलो ॥ सुमे रहवार से मुरदों को जिलाते न चलो। सोते फितने को तुम अय माह जगाते न चलो ॥ ठोकरों से हमें पामाल करोगे तन कर। हाथ मलवाओगे सीने को उठाते न चलो ॥ बाग में आते हो गुलरू तो जरा बुलबुल को। गजले अख्तरे खुशलहजः सुनाते न चलो ॥ ९६ ॥

फतहुद्दौला मिरजा मुहम्मद रजा, बर्क।

कैस का नाम न लो जिक्रे जुनूं जाने दो। देख लेना

मुझे तुम मौसिमे गुल आने दो ॥ जस को ताब नहीं हिज्र में चिल्लाने दो। जोशे वहशत है जिधर जाउं उधर जाने दो॥ बादशाही से नहीं सलतनते इश्क भी कम। जमग होते नहीं वाहम कभी दीवाने दो ॥ जस का मुझसे तकाजा है कि ला-जिम है सकूत। दिले बेताब यह कहता है कि चिल्लाने दो ॥ नासिहा उसको तजल्लो ने जलाया है मुझे। माहो खुरशेद हैं जिस शमअ के परवाने दो ॥ अक्से दन्दां नहीं हस्तो में अयां होठों से। आबे गौहर से लबालब हैं ये पैमाने दो ॥ कैसो वर्क एक हैं इनका नहीं हमसर कोई। खल्क खालिक ने किये हैं यही दीवाने दो ॥ ८७ ॥

७ गजले बाबू हरिश्चन्द्र, रसा।

रहे न एक भी बेदादगर सितम बाकी। रुके न हाथ अभी तक है दम में दम बाकी ॥ उठा दुई का जो परदा हमारी आंखों से। तो काबे में भी रहा बस यही सनम बाकी ॥ बुला लो बालीं प हसरत न दिल में मेरे रहे। अभी तलक तो है तन में हमारे दम बाकी ॥ लहद प आएंगे और फूल भी उठाएंगे। ये रंज है कि न उस वक्त होंगे हम बाकी ॥ यह चार दिन के तमाशे हैं आह दुनियां के। रहा जहां में सिक-न्दर न और न जम बाकी ॥ तुम आओ तार से मरकद प हम कदम चूमें। फकत यही है तमन्ना तेरी कसम बाकी ॥ रसा ये रंज उठाया फिराक में तेरे। रहे जहां में न आखिर को आह हम बाकी ॥ ८८ ॥

शेख कलन्दर बख्श, जुरअत।

हमनशीं होगए रकीब अपने। क्या गिला कीजिये नसीब

अपने॥ देख कर मज को मेरी हैरात। हाथ मलने लगा तबीब अपने॥ याद आता है मुझको भी वह गुल। मत सुना नाले अन्दलीप अपने॥ नहीं अब कोई जुज़ गमो अंदोह। है यही हमदमो हबीब अपने॥ न मिले अब तो क्या करें जुरअत। गरचे है वह बहुत करीब अपने॥ ९९॥

ग़ज़ले नासिख़।

तेरे जाते ही हवा रंगे चमन हो जायगा। बर्गे गुल जो है वह बर्गे यासमन हो जायगा॥ बाम पर नंगे न आओ तुम शबे महताब में। चांदनी पड़ जायगी मैला बदन हो जायगा॥ फ़िक्र उरयानी नहीं मुझ नातवाने इश्क़ को। पोस्त ढीला हो के तन पर पैरहन हो जायगा॥ फुरक़ते साक़ी में निकलेगा लहू जाए शराब। अब दहाने शीशः ज़ख़्मों का दहन हो जायगा॥ और जानिब को चलूंगा अब दयारे यार से। खिज़्र भी मिल जायगा तो राहज़न हो जायगा॥ मैं वह वहशी हूं कभी सूंघे जो मेरा उस्तख़ां। मारे वहशत के सगे जानां हिरन हो जायगा॥ गर उठाकर शहर से सहरा में बिठलाओगे तुम। बस वहीं मिस्ले दरख़्त अपना वतन हो जायगा॥ हुस्न की ज़ीनत अगर चाहे कलामे इश्क़ सुन। गौहरे गोश ऐ सनम मेरा सुख़न हो जायगा॥ क्यों अचम्भा है तुझे नासिख़ फ़िराक़े यार का। एक दिन मादां फ़िराक़े रूह तन हो जायगा॥ १००॥

ग़ज़ले बाबू हरिश्चन्द्र, रसा।

बैठे जो शाम से तेरे दर पर सहर हुई। अफसोस अय क़मर कि न मुतलक़ ख़बर हुई॥ अरमाने वस्ल यों ही रहा सो गए नसीब। जब आंख खुल गई तो यकायक सहर हुई॥ दिल आ-

मिजों के छिद गए तिरछी निगाह से। मिजगां की नोक दुशमने जानो जिगर हुई॥ पछताता हूं कि आंख अबस तुमसे लड़ गई। बरछी हमारे हक़ में तुम्हारी नजर हुई॥ छानी कहां न खाक न पाया कहीं तुम्हे। मिट्टी मेरी खराब अबस दर ब-दर हुई॥ ध्यान आ गया जो शाम को उस जुल्फे रसा का। उलझन में सारी रात हमारी बसर हुई॥ १०१॥

शेख कलन्दर बख्श. जुरअत।

न कुछ अरमान अपने दिल के वां अय हमनशीं निकले। गये थे खुश पर उसके बज्म से अन्दोहगीं निकले॥ पड़ा हूं कुलबए अहजां में तनहाई है और मैं हूं। अब इस तन से मेरी ऐ काश यह जाने हजीं निकले॥ जो एक शब तू हमारे कुलबए तारीक में आवे। तो कुछ हसरत हमारे दिल की भी अय मह-जबीं निकले॥ अभी होजाउं जल कर खाक यह कुछ दिल में सोजिश है। खुदा नाकर्दः गर सीने से आहे आतिशीं निकले॥ गली में इसलिये बैठे हैं होकर सर बजानू हम। कहें टुक दर्दे दिल उससे जो वह घर से कहीं निकले॥ जवाबे खत खुदा चाहे तो लावे नाम.बर अपना। गए कूए बुतां में जो वह फिर जीते नहीं निकले॥ गजल हक़ तो य है जब बज्म में ऐसी पढ़े जुरअत। तो सुन कर क्यों न हरएक को जबां से आफरीं निकले॥ १०२॥

गजले रेंहां।

दिलों में कहने सुनने से अदावत आही जाती है। सफाई लाख हो लेकिन कदूरत आही जाती है॥ दिले रंजीदः कहता है न बोलूं यार से लेकिन। जब आंखें चार होतीहैं मुरव्वत

पाही जाती है॥ कहा सौ बार मैं भी लूं एवज उनसे अदावत का। मगर मजबूर हूं दिल में मुहब्बत पाही जाती है॥ जब उनको देखते हैं गैर से हम बोलते हँसते। नहीं कुछ वास्ता लेकिन शरारत पाही जाती है॥ बराबर दोस्ती निभते न देखी हमने दुनियां में। किसी ढब से कभी रंजिश की नौबत पाही जाती है॥ भला चंगा अगर दीवानः बनता है मुहब्बत में। बदल जाती है सूरत दिल में वहशत पाही जाती है॥ नहीं है मुश्तमिद तिफ़्ली में भोलापन हसीनों का। जवानी के जमाने में शरारत पाही जाती है॥ रही ऐसी है तेरे आशिके बीमार की हालत। कि सूरत देखनेवालों को रिक़त पाही जाती है॥ वफ़ूरे हुस्न से उनको नहीं है होश जामे का। नशा जब हद से बढ़ जाता है गफ़लत पाही जाती है॥ हरेक साअत की हुज्जत में निभेगी दोस्ती क्योंकर। कदूरत बढ़ते बढ़ते दिल में नफ़रत पाही जाती है॥ नहीं मौक़ूफ़ सिन पर देख के सूरत हसीनों की। जवानी पीर दोनों की तबीअत पाही जाती है॥ सरापा जिस्म आईना सा है अल्लाह की कुदरत। जो तुझको देखता है उसको हैरत पाही जाती है॥ नहीं छिपता छिपाने से ये रेहां नशः उलफ़त का। ज़रूर आंखों में कुछ इस मय की रंगत पाही जती है॥ १०३॥

ग़ज़ले आतिश।

हवाए दौरे मए खुशगवार राह में है॥ खिज़ां चमन से है जाती बहार राह में है॥ गदानवाज़ कोई शहसवार राह में है। बलन्द आज निहायत गुबार राह में है॥ शबाब तक नहीं पहुँचा है आलमे तिफ़्ली। हनोज़ हुस्ने जवानीये यार राह में

है ॥ तरीके इश्क़ में अव्वल अदाए आह है शर्त्त। कहीं चढ़ाव किसी जा उतार राह में है ॥ सबीले इश्क़ का सालिक है वाइज़ो की न सुन। ठगों के कहने का क्या एतबार राह में है ॥ अगह है रह्म की यार एक ठोकर इस को भी। शहीदे नाज़ का तेरे मज़ार राह में है ॥ न जाएं आप अभी दोपहर है गरमी की। बहुत सी गर्द बहुत सा गुबार राह में है ॥ पता यह कूचए क़ातिल का सुन ले ऐ क़ासिद। बजाए संग निशां एक मज़ार राह में है ॥ सफ़र है शर्त्त मुसाफ़िरनवाज़ बहुतेरे। हज़ारहा शजरे सायादार राह में है ॥ पियादा पा हूं रवाँ सूए कूचए क़ातिल। अजल मेरी मेरे सर पर सवार राह में है ॥ थकें जो पांव तो चल सर के बल न ठहर आतिश। गुले मुराद है मंजिल में ख़ार राह में है ॥ १०४ ॥

रेखता मुंशी नन्दकिशोर, किशोर।

आती है मुझे सांवलीसी शक्ल यार की। कोशल किशोर दिलबरे दशरथकुमार की ॥ राजीव नैन नेह भरे रैन के जगे। झुक झुक के पलक गिरती हैं आलस खुमार की ॥ मुसकान मन्द माधुरी पर वारूं लाख जी। किसे नजीर दे कोई उस गुल उजार की ॥ रघुवर किशोर दीन पै टुक कीजिये नजर। दानी शिरोमन जान के तेरी पुकार की ॥ १०५ ॥

ग़ज़ले आतिश।

मगर उसको फ़रेबे नरगिसे मसताना आता है। उलटती है सफ़ें गरदिश में जब पैमान आता है ॥ निहायत दिल को है मरगूब बोसे खाले मुश्कीं के। दहन तक आपने कब तक देखिये यह दाना आता है ॥ तलब दुनियां को करके जनसुरीदी हो नहीं

सकती। खयाल आबरूए आर्मा हिम्मते मरदाना आता है॥ जि-यारत होगी काबे की यही ताबीर है इसकी। कई शब से हमारे ख्वाब में बुतखाना आता है॥ फंसा देता है मुर्गे दिल को दामि जुल्फ़े पेचां में। तुम्हारे खाले रुख़ को भी फ़रेबे दाना आता है॥ बतावो लुत्फ़ को फ़रमाओ हर सूरत से राज़ी हूं। शिकायत से नहीं वाक़िफ़ हमें शुकराना आता है॥ खुदा का घर है बुतखाना हमारा दिल नहीं आतिश। मुक़ामे आश्ना है यां नहीं बेगाना आता है॥ १०६॥

सैयद आगाहसन खां, अमानत।

ग़र न करना एन महफ़िल में बशर से देखना। देखना जिसको मुहब्बत की नजर से देखना॥ पहलुए दिलदार से चि-पटी है नागिन की तरह। पेच करना जुल्फ से मूए कमर से देखना॥ दुनिया की बेकरारी हिज्र में अच्छी नहीं। जान एक दिन जायगी दर्दे जिगर से देखना॥ जो के बहलाने को आशिक़ से करीं लेना मकान। खाक पर लोटेंगे हम तुम अ-पने घर से देखना॥ लाल डोरा चश्मे आशिक़ में लहू की धार है। किसकी गरदन कट गई तेगि नजर से देखना॥ १०७॥

ग़ज़ले रासिख़।

महे दुहफ़ा करेगा ज़ाहिर तुम्हारे आगे कमाल आधा। रुखेमनोवर करेगा आख़िर घटा घटा कर हिलाल आधा॥ जमु-र्रदो लालो लूलुए तर ज़मीं से निकले चमक दमक कर। गिरा गिलौरी का जिस जगह पर तुम्हारे मुंह से उगाल आधा॥ पड़ा है खुश्की तरी में यह गुल शिकार हो जायंगी जुमी कुल। अरक़ में डूबा है निस्फ़ काकुल पड़ा है दरया में जाल आधा॥ बयाने

हाजत नहींने पाया हुखाइयों से जवाब पाया। नया यह मन्ज़र है खुदाया जवाब पूरा सवाल आधा॥ कमाले बातिन अमाले सूरी बयान रासिख़ करूं ज़रूरी। गुज़र गई गरचे रात पूरी हुआ नहीं अज़ॅ हाल आधा॥१०८

रेखता।

ऊधो तुम जाओ ज़रा श्याम के समझाने को॥ वो तो आवेंगे न आवेंगे न आवेंगे कभी। रूठ कर बैठ रहे हैं मेरे तरसाने को॥ वो तो मानेंगे न मेरे खतो परवाने को। कुबजा से दोस्ती की है हमें तड़फाने को॥ रंज औ गम से सभी गोपियां घबराती हैं। और दो चार पड़ी हैं यहां मर जाने को॥ वो तो गोकुल से जा मथुरा में गरज रखते नहीं। हम भी ब्रज तज के चली जावेंगी बरसाने को॥ १०९॥

सैयद आगाहसन खां, अमानत।

कल ले चले जो यार को अगयार खींच कर। हम ठंढी सांसें रह गये दो चार खींच कर॥ आई न कत्लगह में भी मुझ खस्ता:जां को मौत। जल्लाद को गश आगया तलवार खींच कर॥ जल्लाद तूने वार न तल्वार का किया। खत रह गया गले प कई बार खींच कर॥ वहो बदन प पड़ गई अक्षहरे नाज़ुकी। मारा जो मैंने गुल को उसे हार खींच कर॥ वह ज़ारो नातवां हूं कि गश आगया मुझे। मारे गुलों ने फूल जो दो चार खींच कर॥ आई हवाय गर्म कफस में तो गश हुई। एक आहेसर्द बुलबुलें दो चार खींच कर॥ दागी है रश्के रुख से अबस जामए चमन। रख दे न कहीं पोस्त वो खूंख्वार खींच कर॥ मैं कत्ल हो चुका हूं सनम तेरी नाज़ से। क्यों हाथ तुम

दिखाते हो तलवार खींच कर॥ सोने को चाप से नहीं पहलू में आये तुम। लाये हैं अपने तालए बेदार खींच कर॥ होकर खफा चला जो अमानत के घर से यार। ले आये दूर से उसे गमख्वार खींच कर॥ ११०॥

रेखता हींगा हरी।

बंसी सुनो घनश्याम को बेहाल होगई॥ सिर मोर मुकुट वाला लाला है नन्द का। गावे बजावे आपही तानें नई नई॥ घर बार ना सुहावे भावे मुझे वही। नाचे अजब तरह से वो ताता थेई थेई॥ सुन्दर बदन पे मानिक मोती झलक रहे। कटि काछिनो है जगमगी देखत बेदम भई॥ अँचरन मनो मुक्ता टके रँगपीत दुपट्टा। सुख दीजिये हींगाहरी तुमरी सरन लई॥१११॥

गजले शेख इमामबख्श . नासिख।

हुई महफिल की महफिल कत्ल तेगे नाजे कातिल से। मुशाविह शमए सोजां होगई हुल्कूमि बिस्मिल से॥ मुहब्बत जोस्त भर मुझको थी एक जुहरा शमायल से। मेरे लाशे को देना गुस्ल आबे चाहे बाबिल से॥ पए तस्कोने दिल तस्वीरे शीरीं जिस प खोदो थी। बनाई कोहकन की लोहे तुरबत बस उसी सिल से॥ किसी दिन पांव अपने धोए थे उसने लबे दरिया। हुबाब आ आ के अब तक सर पटक जाते हैं साहिल से॥ चिरागे आफताब ऐसा नजर आता है जो रौशन। मिला क्या है इसे रौशन तेरे रुखसार के तिल से॥ जो आंखें सोएं तो दिल ख्वाब में महबूब को देखे। नहीं हुशियार वह हरगिज जिसे नफरत है गाफिल से॥ वहीं इरफाल मारे पत्थरों के टुकड़े करते हैं। खिलौने गर कभी बनते हैं मुझ दीवाने को गिल से॥ जो है मम-

दूद उसका बस वही ममदूह है उसका। नहीं नासिख ज़रा घतवे में कम सहबाने बाइल से ॥ ११२ ॥

ग़ज़ले शेख इमामबख्श, नासिख।

वस्ल के अय्याम में वह शोरे कुलकुल होगया। अब तो साक़ी की जुदाई में मेरा कुल होगया ॥ बाद मरने के भी हम छूटे न दामे इश्क़ से। जिस्म से निकला जो मुर्गे रूह बुलबुल होगया ॥ इसक़दर मज़मून लिक्खे काकुले महबूब के। रेशा भी अपने कलम में तारे संबुल होगया ॥ पास हूं लेकिन न देखा एक दिन चेहरा तेरा। तीरःबख्ती में तो मैं भी मिसले काकुल होगया ॥ वाह क्या पीरेमुगां का है तसर्रुफ मैकशो। मुहतसिब का अब सखुनतकिया ही मुल मुल होगया ॥ मिस्ले संबुल सब्ज़ए खत का हुआ नश्वोनुमा। खाले रूए यार गोया तुख्मे संबुल होगया ॥ आए नासिख क्या नज़र जुज़ अहसवारे ताफ़ता। सुरमए चश्म गुबारे राहे दुलदुल होगया ॥ ११३ ॥

सैयद आगाहसन खां, अमानत।

वहशत में मेरे दिल का सब अरमां निकल गया। जंगल को चाक करके गरेबां निकल गया ॥ दीवाना तेरी जुल्फ का ठहरा न शहर में। दश्ते खुतन को होके परेशां निकल गया ॥ पहुँचा जो वस्फ़ में दुरे दन्दां का तेरे शोर। बाहर सदफ से गौहरे गलतां निकल गया ॥ मारा ख़याले कामते जानां ने बे अजल ॥ खत्ते सियाह दूर हुआ रूए यार से। देखो गहन से मेहे दुरखशां निकल गया ॥ बोसा न वादे वस्ल दिया लब का यार ने। काबू में आ के लाले बदख्शां निकल गया ॥ फ़स्ले जुनूं का ज़िक्र में मैंने सुना जो नाम। मुरदा तड़प के सूए बयाबां

निकल गया ॥ बे खौफ वस्ले यार के हासिल हुए मजे। मौत आई गैर को मेरा अरमां निकल गया ॥ मैं खाक लखनऊ में अमानत कहूं गजल। घर छोड़ कर हर एक सखुन्दां निकल गया ॥ ११४ ॥

गजले बाबू हरिश्चन्द्र, रसा।

बाल बिखेरे आज परी तुरबत पर मेरे आएगी। मौत भी मेरी एक तमाशा आलम को दिखलाएगी ॥ महवे अदा हो जाऊंगा गर वस्ल में वह शरमाएगी। बारे खुदाया दिल की हसरत कैसे फिर बर आएगी ॥ काहीदा ऐसा हूं मैं भी ढूंढ़ा करे न पाएगी। मेरी खातिर मौत भी मेरी बरसों सर टकराएगी ॥ इश्केबुतां में जब दिल उलझा दीन कहां इसलाम कहां। वाइज काली जुल्फ की उल्फत सब को राम बनाएगी ॥ चंगा होगा जब न मरीजे काकुले शबगूं हजरत से। आपकी उल्फत ईसा की सब उजमत आज मिटाएगी ॥ बक्के अयादत भी जो आएंगे न हमारी बालीं पर। बरसों मेरे दिल की हसरत सिर पर खाक उड़ाएगी ॥ देखूंगा मिहरावे हरम याद आएगी अबरूए सनम। मेरे जाने से मसजिद भी बुतखाना बन जाएगी ॥ गाफिल इतना हुस्न प गर्रा ध्यान किधर है तौबा कर। आखिर इक दिन सूरत यह सब मिट्टी में मिल जाएगी ॥ आरिफ जो हैं उनके हैं बस रंज व राहत एक रसा। जैसे वह गुजरी है यह भी किसी तरह निभ जाएगी ॥ ११५ ॥

रेखता श्रीनागरीदासजी।

सजनी नए नेह की बात कहा कहूं हायरी। गद्दबर आवत कंठ कही नहिं जायरी। मो दिसि रहे लखि लाल रसिक

रस ख्याल में। तब उरझे ए नैन रूप के जाल में॥ मेरे जिय अकुलानि त्यौंहि उत श्याम के। मिलनि बिना दिन रैन छुटे निज धाम के॥ घूमत घायल प्रान जैसें मदिरा पियें। लोक लाज ग्रह काज की सुधि बिसरी हिए॥ आज अचानक भेंट है गई बाट मैं। गई रही मैं न्हान जु जमुना घाट मैं॥ सघन द्रुमन के माहि ले गयो मोहिरी। मिले दोउ लपटाय कहा कहूं तो-हिरी॥ नागरिया रस मगन अधर आसव छकी। देखि न अब लौं मिटी हिए की धकधकी॥ ११६॥

गजले अदा।

दिल लेके इलाजे दिले शैदा नहीं करते। दिक इतना भी ऐ रश्के मसीहा नहीं करते॥ आईने को हर मरतबा देखा नहीं करते। इतना भी गुरूर ऐ बुते यकता नहीं करते॥ अ-गयार जो नाले को सुनाते हैं तो क्या है॥ बादल जो गरजते हैं वो बरसा नहीं करते॥ यूसुफ सा हसीं कौड़ियों के मोल बिका है। ऐ जानेजहां हुस्न प गर्रा नहीं करते॥ अगयार तो क्या चर्ख की बुनियाद भी मिट जाय। यह सोच के सहरा का इ-रादा नहीं करते॥ हँसते हैं अदा मर गया फुरकत में तुम्हारी। ऐ रश्के मसीहा उसे जिन्दः नहीं करते॥ ११७॥

गजल।

घर को छोड़े हुए मुद्दत हुई सैयाद मुझे। किस चमन में था नशेमन ये नहीं याद मुझे॥ आ के तुरबत प बहुत रोए किया याद मुझे। खाक उड़ाने लगे जब कर चुके बरबाद मुझे॥ दिल तुम्हें देके जमाने की निगाहों से गिरे। यह न मालूम थी इस इश्क की उफताद मुझे॥ आगई मौत कदम रखतेही दर पर

उसके। खानए यार हुआ गुलशने हद्दाद मुझे॥ दिल प सौ ज़ख़्म हैं तड़पूं न कफ़स में क्योंकर। जबह कर डाल तो आराम हो सैयाद मुझे॥ ११८॥

गज़ल।

जोस्त के दिन अपने पूरे कर चले। कल के बदले आजही हम मर चले॥ अबतो मिज़गां की उल्फ़त छुट चुकी। अब चले तल्वार या खंजर चले॥ आगे आगे हम थे राहे इश्क़ में। पीछे पीछे खिज्र पैगंबर चले॥ देखिए मंजिल प पहुंचें किस तरह। शाम सर पर आगई दिन भर चले॥ खाक उड़ाते पर प मिस्ले गर्द बाद। यों चले हम जिस्तरह सरसर चले॥११९॥

सैयद आगाहसन खां, अमानत।

दिल तुम्हारे हुस्न पर यों मुबतिला क्योंकर हुआ। नाज़िल इसपर ऐ बुतो कहरे खुदा क्योंकर हुआ॥ बस्तए ज़ुल्फ़े सनम दिल ऐ खुदा क्योंकर हुआ। बैठे बिठलाए यह महबूसे बला क्योंकर हुआ॥ जान का आना लबों पर बेसबब ऐ दिल नहीं। वह खफ़ा मुझसे नहीं तो दम खफ़ा क्योंकरहुआ॥ सुर्ख़ मेंहदी से सदा सैयाद पाए हमने हाथ। कैद तुझसे तायरे रंगे हिना क्योंकर हुआ॥ यार तू आया न वादे पर कभी यां ता बमर्ग। ऐ अजल बतला तेरा वादा वफ़ा क्योंकर हुआ॥ काम अपना होगया मुंह में ज़बां लेने के साथ। यार का आबेदहन आबेबका क्योंकर हुआ॥ क्या तेरे वहशी का जिन्दां की तरफ़ आया कदम। खानए जंजीर में महशर बपा क्योंकर हुआ॥ खूने आशिक शोख था मेंहदी की रंगत से कहीं। हाथ तेरा यार पाबन्दे हिना क्योंकर हुआ॥ देखो मजनूं ने जो मुझ ब-

हुओ की सूरत दूर से। बोला घबरा कर कि मुझसा दूसरा क्योंकर हुआ॥ दस्तेरंगी में लपेटो जुल्फ उसने नाज़ से। कैद देखी पेच से दुहरे छिना क्योंकर हुआ॥ हल्क़ए ज़ुल्फे सनम में फँस गया दिल क्या कहूं। कैद यह मुल्के खुतन में के खता क्योंकर हुआ॥ बोल उठा वह सुनतेही मर्गे अमानत की खबर। कब मुआ दी जान किसपर क्या हुआ क्योंकर हुआ॥ १२०॥

ग़ज़ल फ़रहत।

क़िस्सए हिज्रे बुतां होश में आलूं तो कहूं। थाम लूं जिगर करूं दिलको संभालूं तो कहूं॥ दे के दिल दाम जो पूछे तो कहा यूसुफ़ ने। ऐ ज़ुलीख़ा इसे बाज़ार दिखालूं तो कहूं॥ जर्रे रुख़सार के बोसे की हो यों क्या क़ीमत। चाश्नी देख लूं कस देख लूं ता लूं तो कहूं॥ सलसबीले दहने पाक को पूंछो न ख़बर। हाथ मुंह धो लूं वज़ू कर लूं नहालूं तो कहूं॥ तल्ख़ है तुर्श है शीरीं है कि फीका है कि तेज़। मेवये बोसए गबगब का मज़ा लूं तो कहूं॥ ज़रि दिल क़ल्ब कि ख़ालिस है अभी क्या मालूम देखलूं जांचलूं ख़ूब आंच दिखा लूं तो कहूं॥ ज़ुल्फो लब ज़हर है या क़न्द है कहदूं क्योंकर। सूंघ लूं जायक़ा लूं चख लूं मज़ालूं तो कहूं॥ सरगुज़श्ते ग़मे ग़ैर से वो बरहम होंगे। अपने सर बैठे बिठाए जो बला लूं तो कहूं॥ राज़े दिल की न किसी को हो ख़बर कानों कान। फ़रहत अग़यार को जब बज़्म से टालूं तो कहूं १२१

ग़ज़ल।

ये लुत्फ देख रहे हैं गला कटाए हुए। वो बैठे ज़ानू से सीना मेरा दबाए हुए॥ ग़ुबार कूचए जाना से क्यों उड़ाती है। हमारी ख़ाक ज़रा ऐ सबा बचाए हुए॥ ये किसने ऐन मज़े में

जगा दिया हमको। अभी थे ख़्वाब में उनको गले लगाए हुए॥ सियाह चश्म से गोया बरस पड़े मोती। निचोड़े बाल उन्हों ने अगर नहाए हुए॥ ख़ुदा पनाह में रक्खे तुम्हारी मिज़गां से। सितम की फ़ौज खड़ी है परा जमाए हुए॥ हैं आंखें सुर्ख़ कहीं दूर से वो आते हैं। कि चोलो तर है पसीने में हैं नहाए हुए॥ ग़ुरूर जेरे फ़लक चाहिए बशर को नहीं। जिन्हें उरूज है चलते हैं सर झुकाए हुए॥ कहा ये काफ़िलेवलों से हम भी आते हैं। चले न जाओ ख़ुदारा क़दम बढ़ाए हुए॥ किसी ने भी न कहा। हाय मेरे दफ़न के वक़्त। कि इन पे ख़ाक न डालो ये हैं नहाए हुए॥ बचा है कोई भी घायल तुम्हारी अबरू का। ये दोनों नीमचे हैं ज़ह्र में बुझाए हुए॥ १२२॥

रसिक गोविन्द।

भये तुम नन्द के दानी नई ब्रज रीत यह ठानी। चलत हौ चाल लँगरानी तिहारी छैलता जानी॥ जमुन तट हौं चली पानी मिले मग बीच मोहि आनी। कहत कित बात सतरानी चले क्यों न जाओ अभिमानी॥ कहा तुम फिरत इतरानी कहो मेरी नेकु नहिं मानी। जोबन गुन रूप मर्दानी करे अब सौंह मकवानी॥ बचन सुन ग्वालि मुसकानी कहो रस रीत को ठानी। रसिक गोविन्द दिल जानी लगी तोसे प्रीत मनमानी॥ १२३॥

हरिप्रकाश यंत्रालय

विदित हो कि यह यंत्रालय सन १८७५ में स्थापित हुआ है और आज पचीस वर्ष से जिस तरह के काम छापे हैं वह उन लोगों पर विदित हैं कि जिन्होंने यहां से कुछ छपवाया है या कि यहां की छपी पुस्तकों को देखा है । सिवाय इसके इधर कुछ दिनों से इस कारखाने में ग्राहकों को प्रसन्न करने के लिये अनेक प्रकार के नये, खूबसूरत और उम्दा उम्दा सामान मंगवाये गये हैं जैसे की ।

बम्बई के ढले अक्षरों में जो जो अक्षर देखने में सुन्दर और सुडौल हैं उन में कई तरह के बड़े से बड़े और छोटे से छोटे अक्षर, योंहीं कलकतिया छोटे बड़े अक्षर, बाडर अर्थात एक से एक उम्दा और हरदिल पसन्द मौजूद हैं योंही तरह तरह की मूर्त्ती और तसवीरों के ढांचे फूल वगैरह सब चीज उम्दा और नई हैं अङ्गरेजी के अनेक प्रकार के अक्षर हैं। इन सब के नमूनों की किताब बनी तैयार है जिन साहेबों को देखना हो मंगवा के देखलें और छपवाई का भाव पूछ लें ।

सिवाय इसके जो लोग अपनी किताबें या मजमून यहां छपवावें और उसके शोधने का जिम्मा भी दे दें उनका काम पूरे तौर से कर दिया जाता है । इसके लिये इतना ही कह देना बहुत है कि जो किताबें या अखबार यहां छपे हैं या छप रहे हैं वही इस कहने की साबूती देंगे। काम बड़ी सावधानी से ठीक वक्त पर कर दिया जाता है यह काम करवानेही से मालूम हो सक्ता है अधिक क्या कहें।

अमीर सिंह मालिक
हरिप्रकाश यन्त्रालय
नं॰ १ नेपाली खपरा
बनारस सिटी ।

नित्यकुसुमाकरोद्यान

अर्थात्

चमनिस्तानेहमेशःबहार।

तीसरा भाग।

संशोधित और परिवर्द्धित

इस हिस्से में दीवान सफ़दर से उम्दः २ और हर एक के समझ में आने लायक तथा कुछ और भी गजलें रक्खी गई हैं।

उर्दू कविता और गाने के रसिकों के आनन्द और उपकार के वास्ते बाबू अमीर सिंह ने संग्रह किया।

बनारस।

नम्बर १, नैपाली खपरा

हरिप्रकाश यन्त्रालय में अमीर सिंह ने चौथी बार मुद्रित किया।

चौथी बार ५००] [मूल्य ।)

नित्यकुसुमाकरोद्यान।

चमनिस्तानेहमेशःबहार।

तीसरा भाग

१ ग़ज़ल बाबू हरिश्चन्द्र।

वह अपनी नाथ दयालता तुम्हें याद हो कि न याद न हो। व जो कौल भक्तों से था किया तुम्हें याद हो कि न याद हो॥ सुनी गज की जोंहीं वो आपदा न विलम्ब छिन का सहा गया। वहीं दौड़े उठ के पियादे पा तुम्हें० ॥ वो जो चाहा लोगों ने द्रौपदी को कि शर्म उसको सभा में लें। व बढ़ाया वस्त्र को तुमने जा तुम्हें० ॥ वो अजामिल एक जो पापी था लिया नाम मरने पे बेटे का। व नरक से उसको बचा दिया तुम्हें० ॥ वो जो गीध था गनिका वो थी वो जो व्याध था वो मलाह था। इन्हें तुमने ऊंचों की गत जो दी तुम्हें० ॥ खाना सीलनी के वो जूठे फल कहीं साग दास के घर पै चल। योंहीं लाखों किस्से कहूं मैं क्या तुम्हें० ॥ जिन बानरों में न रूप था न तो गुनही था न तो ज़ात थी। तिन्हें भाइयों का सा मानना तुम्हें० ॥ वो जो गोपी गोप थे ब्रज के सब उन्हें इतना चाहा कि क्या कहूं। रहे उनके उलटे ऋणी सदा तुम्हें० ॥ कहो गोपियों से कहा था क्या करो याद गीता को भी ज़रा। यानी वादा भक्त उधार का तुम्हें० यह तुम्हाराही हरिचन्द है गो फ़साद में जग के बन्द है॥ वह है दास जन्मों का आपका तुम्हें याद हो कि न याद हो॥ १॥

गज़ले सफ़दर।

था शिकायत का जो उनसे हौसला जाता रहा। सामना जब हो गया सारा गिला जाता रहा॥ फ़स्ले गुल में बेड़ियां काटीं अबस हद्दाद ने। था जो सर्कारे जुनूं से सिलसिला जाता रहा॥ इस क़दर सदमे सहे हमने बुतों के इश्क़ में। दिल लगाने का किसी से हौसला जाता रहा॥ जाम टूटे इतने दौरे चर्ख़े मीना रंग से। मोहतसब का शिकवा क़ाज़ी का गिला जाता रहा॥ थीं वह सारी वहशतें जोशे जुनूं तक अब कहां। सर से वह सौदा व दिल से वलवला जाता रहा॥ दोस्तों के हाथ से सदमे उठाये इस क़दर। दिल से अपने दुश्मनों का भी गिला जाता रहा॥ अह्दे पीरी में कहां सफ़दर जवानी की तरंग। वह बहार आख़िर हुई वह वलवला जाता रहा॥ २॥

उमंग पर आके मस्ते ज़ोमत कभी जो वो गुलउ़ज़ार होगा। पिसेंगी मेंहदी पे दिल गुलों के चमन में खूने बहार होगा॥ दमे फ़ना भी यही जो दिल को तसव्वरे ज़ुल्फ़े यार होगा। हवा से फिर कूबकू परेशां यक़ीं है मेरा गुबार होगा॥ न मालो दौलत न जाहो हश्मत न दौर लैलो निहार होगा। फ़क़त है यह चार दिन की हस्ती हम और गंजे मज़ार होगा॥ फ़िराक़ गुज़रा विसाल आया कहो कि अब हसरतें हों रुख़सत। कि एक पहलू में होगा साक़ी तो एक पहलू में यार होगा॥ न खींचो तलवार क्या है हाजत हमारा दिल है शहीदे अबरू। यह आप हो आयगा तसद्दुक़ यह आप तुमपर निसार होगा॥ छिपा चुरा कर कभी जो पी ली तो इससे क्या फ़ायदा है क़ाज़ी। न मैकदे में जगह मिलेगी न मैकशों में शुमार होगा॥ यही है

चालें अगर तुम्हारी तो देखना मर मिटेंगे हम भी। जहां प-ड़ेगा क़दम तुम्हारा वहीं हमारा मज़ार होगा॥ भला हुआ यह कि मिट गया मैं बरंगे नक़्शे क़दम जहां से। न अब उठेगा मेरा जनाज़ा न दोश यारां पै बार होगा॥ यह रात भर के हैं सारे जलसे जहां हुई सुबह फिर तो सफ़दर। न शोरः होगा न जाम होगा न शमअ होगी न यार होगा॥ ३॥

तू ऐ दिल अबस मुबतिला है किसी का। समझ तो कोई भी हुआ है किसी का॥ ज़रा बज़्म से उठके ख़िलवत में सुन लो। ख़ुदा जाने क्या मुद्दआ है किसी का॥ पहुंच अब्द जामो सुबू लेके साक़ी। घटा आई है दिल बढ़ा है किसी का॥ दिया दिल तो हमने किया अपना नुक़सां। हज़ारां कहो इसमें क्या है किसी का॥ ग़नीमत है जो दम है ठहरो न जाओ। कि दो रोज़ में फ़ैसला है किसी का॥ फ़क़त चार दिन की यह है जाहो इशमत। ज़माना कहां आशना है किसी का॥ वो मिस्सी लबों पर जमाते हैं सफ़दर। मगर आज नक़्शा जमा है किसी का॥ ४॥

क़हर है आफ़त है यह आंखें लड़ाने की अदा। ख़ूब आती है तुम्हें फ़ितने जगाने की अदा॥ जब किसी गुंचे को गुलशन में खिलाती है नसीम। याद आती है तुम्हारे मुसकिराने की अदा॥ लाती है किस किस तरह शबखूं दिले उश्शाक़ पर। पान खाने की अदा मिस्सी लगाने की अदा॥ चलते हो मरक़द पै तुम दामन उठाकर नाज़ से। किसने सीखी ख़ाक में हमको मिलाने की अदा॥ देखिये किस किस की गर्दन पर करे ख़ंजर रवां। क़ातिले आलम तेरी तिउरी चढ़ाने की अदा॥ ख़ून हो आएंगे

माशूक़ देखने वालों के दिल। रंग लाएगी नया मेंहदी लगाने की अदा॥ याद है सफ़दर शबे वसलत वो अपना छेड़ना। और उनकी शर्म से आंखें झुकाने की अदा॥ ५॥

यार था मक़तल था शमशीरे अदा थी मैं न था। क़त्ल पर मेरे कमर बांधे क़ज़ा थी मैं न था॥ उसने जब पूछा कि तूने क़त्ल आशिक़ को किया। ग़मज़ा बोला वह नज़ाकत थी अदा थी मैं न था॥ क्या हुआ मुझसे जुदा होकर जो दिलबर तक गया। दिल मेरा साथी न था कुछ दिल का साथी मैं न था॥ कहते हैं वह रुख़ के बोसे ख़्वाब में किसने लिये. मैं यह कहता हूं तेरी ज़ुल्फ़े रसा थी मैं न था॥ वह कहेंगे हश्र में क़ातिल को पूछूंगा अगर। वह क़ज़ा थी तेरी या मेरी अदा थी मैं न था॥ साफ़ कह देता बनाना है अबस पर क्या कहूं। आलमे ईजाद की जब इबतदा थी मैं न था॥ रात उस महफ़िल में क्या मौक़ा था सफ़दर क्या कहूं। सुर्मा था मिस्सी थी ग़ाज़ा था हिना थी मैं न था॥ ६॥

सफ़र में आकर कभी इन आंखों ने रूए अह्लेवतन न देखा। क़फ़स में ऐसे हुए मुक़ैयद कि ख़्वाब में भी चमन न देखा॥ सिवाय रुख़सारो ख़ालो गेसू किसी का हमने दहन न देखा। हलब भी देखा हबश भी देखा ख़ुतन भी देखा यमन न देखा॥ निगाह तिरछी कुलाह तिरछी रविश है तिरछी अदा है तिरछी। जो बांकपन हमने तुम में देखा किसी में यह बांकपन न देखा॥ दहन है गुंचः तो आंख नर्गिस जो ज़ुल्फ़ संबुल तो सर्व क़ामत। तुम्हें तो देखा बला से हमने जो फ़स्ल गुल में चमन न देखा॥ कहें तुम्हें ख़ूबियों का मजमा तुमारे उश्शाक़

क्या समझ कर। वफ़ा व उलफ़त का जिक्र क्या है कमर न देखी दहन न देखा॥ फिरे ज़माने में मुद्दतों हम रही हसीनों से हमको सोहबत। किसी की ऐसी अदा न पाई किसी में यह बांकपन न देखा॥ कमाल यारों से तंग दिल थे अवस गिरफ्तार आवो गिल थे। चले सफ़र को कभी जो सफ़दर तो फिर के सूए वतन देखा॥ ७॥

दुनियां में कुछ सिवाए रंजो महन न देखा॥ कुंजे क़फ़स में हमने रंगे चमन न देखा॥ बागे जहां का हमने बरसों किया तमाशा। शादाब फूल तुझसा ऐ गुलबदन न देखा॥ यह ग़ैरते रंगे गुल गुंचे से वह सिवा है। ऐसी कमर न देखी ऐसा दहन न देखा॥ अहले वतन जो छूटे हमसे तो ऐसे छूटे। गुरबत में आके हमने ख्वाबे वतन न देखा आलम में सब सखुनदां कहते हैं तुझको सफ़दर। हमने किसी का ऐसा रंगो सखुन न देखा॥ ८॥

दिखलाए उसने दस्ते हिनाई तमाम रात। मेंहदी से दिल में आग लगाई तमाम रात॥ दिल में जिगर में सीने में पहलू में आप ने। बिजली कहां कहां न गिराई तमाम रात॥ किस को खबर है बर्के तज्जली की ऐ कलीम। आंखें थीं और वह पायहिनाई तमाम रात॥ दरपरद: यह भी था मेरी तक़दीर का बिगाड़। उस नाज़नीं ने जुल्फ़ बनाई तमाम रात॥ आंख उसकी आंख से तो ज़बां से ज़बां लड़ी। सफ़दर रही मज़े की लड़ाई तमाम रात॥ ९॥

कहा था क्या तुझसे याद है कुछ यह कहके फिरना ज़रा हया कर। ज़रूर दिल में फ़साद है कुछ यह ज़ुल्म ज़ालिम

खुदा खुदा कर॥ अजीब दुनियां का हाल देखा कि जिसका आही जलाल देखा। उसी को फिर खस्तः हाल देखा बिगाड़ते हैं वही बना कर॥ हमेशः की जिनकी खैरख्वाही वही हुए दरपए तबाही। मुक़ामे इन्साफ़ है इलाही बुतों में और मुझ में फ़ैसला कर॥ सिहर है नज़दीक अब है आख़िर सरा से चलते हैं हम मुसाफ़िर। जिन्हें है मिलना वह सब हैं हाज़िर अरस से कह दो कोई सदा कर॥ किया था क़ासिद जो मैंने राही गुज़र गई उसपे क्या तबाही। फिरा न अब तक वह या इलाही गली में उस फ़िलःगर के जाकर। हज़ार मेहनत में मुबतिला हूं मगर मैं राहत से आशना हूं। बसूरते ज़ख्म हँस रहा हूं मैं अपनी आंखों से खूं बहा कर॥ कड़ी उठाता हूं मैं तकल्लुफ़ नहीं है सफ़दर मुझे तअस्सुफ़। ज़बान से मैं कभी कहूं उफ़ यह मुझसे होगा खुदा खुदा कर॥ १०॥

यह शर्मगीं आंख मेरे दिल से हया से मुंह पर नक़ाब कब तक। रहेगी दूल्हा से रोज़ सोहबत दुल्हिन करेगी हिजाब कब तक॥ मैं मर गया और ग़श समझ कर यह कह रहा है वह माह पैकर। कि इनको ग़फ़लत तो है बराबर भला मैं छिड़कूं गुलाब कब तक॥ वह बुत इनायत पे अलद आये खुदा करे मुंह से मुंह मिलाये। तकल्लुफ़ उट्ठे लिहाज़ जाये करेगा शर्मों हिजाब कब तक॥ खिज़ां है आख़िर बहारे दुनियां बक़ा है इसमें हवा का झोंका। ग़ुरूर इतना नहीं है अच्छा भला यह झूठो शबाब कब तक॥ यहां है जीने का क्या भरोसा कि हादिसों से भरी है दुनियां। यही जो है मौज का तमाचा तो फिर क़यामे हुबाब कब तक॥ ज़रूर आफ़ाक़ से सफ़र है ज़रूर

यां काबिले हजर है। मुकाम हसरत यह खुश्कीतर है शराब कब तक कबाब कब तक॥ खफा न सफदर हो मानो कहना तग़ाफुल इतना नहीं है अच्छा। सहर हुई आफताब चमका अब आंख खोलो यह ख्वाब कब तक॥ ११॥

रक़ीबों में मेंहदी लगाने से हासिल। जले दिल को मेरे जलाने से हासिल॥ योंहीं फितनः परवाज़ आलम है चितवन। फिर आंखों में सुर्मा लगाने से हासिल॥ जो चोरी है महेनज़र दिल है हाज़िर। मेरी जान आंखें चुराने से हासिल॥ न लो चुटकियां ग़ैर का ज़िक्र करके। दुखे दिल को मेरे दुखाने से हासिल॥ निकलतेहो घर से नहीं हैं वह सफदर। सरे राह आंखें बिछाने से हासिल॥ १२॥

मेरा घर कहां उनके आने के क़ाबिल। बुलाऊं अगर हूं बुलाने के क़ाबिल॥ कभी बोसा मांगा दहन का तो बोले। चलो तुम नहीं मुंह लगाने के क़ाबिल॥ ग़रज़ दैर से हैं न काबे से हमको। यह सर है तेरे आस्ताने के क़ाबिल॥ हँसा मैं तो हँस कर कहा उसने मुझसे। हुए आप भी मुसकिराने के क़ाबिल॥ जनाज़े प मेरे कहा सबने उन से। मसीहा हो तुम यह जिलाने के क़ाबिल॥ कहा उसने कुछ सोच कर अपने दिल में। यह फितनः नहीं हैं जगाने के क़ाबिल॥ कहा कुछ जो मैंने तो बोला वो सफदर। हुए तुम भी बातें बनाने के क़ाबिल॥ १३॥

तेरा क़द क़यामत से बढ़ कर बनाया। बनाया जो कुछ उसने बेहतर बनाया॥ पसन्द आए ऐसे वो अबरूओ गेसू। कि सानेअ़ ने उनको मुकर्रर बनाया॥ उदू बाग़बां है तो गुलचीं

है दुश्मन । कहां आशियां हमने आकर बनाया ॥ अगर हम न मरते यह शोहरत न होती । तुम्हें हमने ऐ जां बिगड़ कर बनाया ॥ बने दोनो दुनियां यह मुश्किल है सफ़दर । जो यह घर बिगाड़ा तो वह घर बनाया ॥ १४ ॥

रक़ीब इन निगाहों से कम देखते हैं । तुम्हें जिस मुहब्बत से हम देखते है ॥ रहे इश्क़ में दिल ने भी साथ छोड़ा । वफ़ादार दुनियां में कम देखते हैं ॥ दमे निज़अ़ है सामने से न जाओ । तुम्हें और हम कोइ दम देखते हैं ॥ निगाहों से है क़स्द क़त्ले दो आलम । इरादे बड़े उनके हम देखते हैं ॥ भला अपनी हस्ती भी हस्ती है कोई । इधर भी उधर भी अदम देखते हैं ॥ वह साबिर हैं खामोश बैठे हैं सफ़दर । जफ़ा देखते हैं सितम देखते हैं ॥ १५ ॥

मैं कब जिन्से जां रायगां बेचता हूं । खरीदार तुम हो तो हां बेचता हूं ॥ फ़क़त एक बोसे पै देता हूं दिल को । न समझो कि सौदा गरां बेचता हूं ॥ जो तलवार तुमने कोई मोल ली हैं । मैं सर अपना ऐ जानेजां बेचता हूं ॥ तुम्हें जो पसन्द आये हाज़िर है ले लो । दिलो दीनो नामो निशां बेचता हूं ॥ अभी देके दिल मोल लेता हूं बोसा । वह इतना तो कह दें कि हां बेचता हूं ॥ अगर छीन कर तुमको लेना हो ले लो । न दिल बेचता हूं न जां बेचता हूं ॥ किसे दोनो दुनियां की परवा है सफ़दर । मुहब्बत में दोनों जहां बेचता हूं ॥ १६ ॥

तेरा वस्ल हो ख्वाहिशे दिल यही है । मुहब्बत का उल्फ़त का हासिल यही है ॥ तेरी तेग़ देखो तो बिस्मिल यह बोले । गले से लगाने के क़ाबिल यही है ॥ उसे देख कर मुझसे कहता

है यह दिल। मैं बिस्मिल हूं जिसका वह क़ातिल यही है ॥ वह कहते हैं मुंह देख कर आइने में। अगर है तो मेरा मुक़ाबिल यही है ॥ मई भी जो फ़ुर्क़त में गर्दूं पै देखा। मैं समझा कि शमशोरे क़ातिल यही है ॥ जनाज़ा मेरा जब सरे क़ब्र पहुंचा। क़ज़ा ने कहा पहिली मंज़िल यही है ॥ कोई ग़ुंचः देखा जो गुलशन में सफ़दर। तो समझा कि शायद मेरा दिल यही है ॥ १७ ॥

और कोई ढूंढ़िए जौरो जफ़ा के वास्ते। कीजिये आज़ाद बंदे को ख़ुदा के वास्ते ॥ हर तरह के लोग हैं सर्कार के दर्बार में। मुझ गदा को भी लगा रखिये दुआ के वास्ते ॥ हैफ़ है मुतलक़ न पासे आशनाई हो उसे। सबसे बेगाने हुए जिस आशना के वास्ते ॥ ज़ख़म सीने के न सी जर्राह घबराएगा दिल। रहने दे बाक़ी कोई रोज़न हवा के वास्ते ॥ ऐ तवंगर देके मोहताजों को ज़ादे राह ले। चाहिये कुछ ख़र्च बाज़ारे जज़ा के वास्ते ॥ चाहिये हर वक़्त ऐ सफ़दर ख़याले मुस्तफ़ा। दिल मुहब्बत को ज़बां पाई सना के वास्ते ॥ १८ ॥

चमन में जो अब जुस्तजू थी किसी की। निशां जामए गुल में बू थी किसी की ॥ वही दिन कुछ अच्छे थे ऐ चश्म हसरत। न दिल था किसी का न तू थी किसी की ॥ किसी गुल को हमने न देखा न सूंघा। सिवा तेरे कब आरज़ू थी किसी की ॥ कहूं क्या मुझे कैसी मिलती थी लज़्ज़त। ज़बां पर जो अब गुफ़्तगू थी किसी की ॥ न आता मैं बाज़ारे महशर में क्यों कर। कि सफ़दर मुझे जुस्तजू थी किसी की ॥ १९ ॥

तेरे ग़म में बदला यह नक़्शा हमारा। कि कोई नहीं अब शनासा हमारा ॥ तहे तेग़ दो कुछ तड़फने को मोहलत।

अगर देखना हो तमाशा हमारा ॥ भला देखें किस तौर रहती है रंजिश। ज़रा सामना तो हो उनका हमारा ॥ बड़ी बात यह है कि क़ासिद किसीने। लिखा है इन्हें ख़त में शैदा हमारा ॥ गवारा नहीं है जिन्हें बात करना। सुनेंगे वो काहे को क़िस्सा हमारा ॥ गये घर को सब दफ़न करके लहद में। दिया साथ यारों ने अच्छा हमारा ॥ रही योंही उलफ़त जो ज़ुल्फ़े सियह को। न जायगा सफ़दर यह सौदा हमारा ॥ २० ॥

वह बुत जलवः आरा हुआ चाहता है। ख़ुदा जाने अब क्या हुआ चाहता है ॥ बेहुत इसको ईज़ा है पहलू में मेरे। यह दिल अब किसी का हुआ चाहता है ॥ दिखा कर वह तलवार कहते हैं मुझसे। ख़बर है तुम्हें क्या हुआ चाहता है ॥ वह अटखेली की चाल चलने लगी हैं। कोई फ़ित्नः बरपा हुआ चाहता है ॥ बहुत तेज़ है आज कल तीरे मिज़गां। कोई दिल निशाना हुआ चाहता है ॥ मेरे क़त्ल करने को आता है क़ातिल। तमाम आज क़िस्सा हुआ चाहता है ॥ बलाएं जो लीं ज़ुल्फ़ की हँस के बोले। कि सफ़दर को सौदा हुआ चाहता है ॥ २१ ॥

उठे लुत्फ़ जब तक कि ताला रसा थे। हम उन पर तसद्दुक़ वह हमपर फ़िदा थे ॥ न था चैन जब तक कि उनसे जुदा थे। वह आजुर्दः हम ज़िन्दगी से ख़फ़ा थे ॥ यह अन्दाज़ यह नाज़ किस दिन थे दिलकश। यह ग़मज़े यह उशवे कहां दिलरुबा थे ॥ वह बेगाने हैं अब तो बेगाने हैं सब। जो वह आशना थे तो सब आशना थे ॥ न पूछो जवानी का पीरी में क़िस्सा। वह दिन और कुछ थे वह आलम जुदा थे ॥ अदम में कहेंगे यह हस्ती से जाकर। कहें क्या कि किस रंज में मुबतिला थे ॥

नई खाक की सैर हम ने जो सफ़दर। वही मिस्लतखत वही मजलका थे ॥ २१ ॥

रुके वह न हमको बुरा कहते कहते। हुआ खुश्क मुंह यां बजा कहते कहते ॥ न कानों को मोहलत न होठों को फुर्सत, बुरा सुन्ते सुन्ते भला कहते कहते ॥ न राज़ी हुए वह यहां उम्र गुज़री। दुआ देते देते सना कहते कहते ॥ नई तेग़ इस सन से ज़ख्म खाये। क़ज़ा भी थकी मरहबा कहते कहते ॥ सुना कर उन्हें हाले दिल बोसा मांगा। यह बहकी ज़बां माजरा कहते कहते ॥ जवाब एक भी उनसे सीधा न पाया। ज़बां थक गई मुद्दआ कहते कहते ॥ जो था खौफ़ सफ़दर बुतों की गली में। गये या खुदा या खुदा कहते कहते ॥ २३ ॥

मेरे दिल को ऐसी है उलफ़त किसी को। कि आंखों में फिरती है सूरत किसी की ॥ पड़े आंख क्योंकर न ग़मसी क़मर पर। कि मिलती है इनसे शबाहत किसी की ॥ हसीं हमने देखे ज़माने में लाखों। तेरे सामने क्या हक़ीक़त किसी की ॥ दिया एक बोसा वह कहते हैं इस पर। कभी ऐसी देखी है हिम्मत किसी की ॥ अभी हिज्र में जान देता तड़फ कर। करूं क्या नहीं है इजाज़त किसी की ॥ मुसीबत में कब साथ देता है कोई। न काम आई साहबसलामत किसी की ॥ नहीं दिल तुम्हारा जो क़ाबू में सफ़दर। मुक़र्रर है तुमको मुहब्बत किसी की ॥ २४ ॥

सताते हैं यह जुल्फोंवाले हमें। खुदा इस बला से निकाले हमें ॥ चमन से न गुलचीं निकाले हमें। कि रो रो के भरने हैं थाले हमें ॥ न दीवाने हैं हम न वहशी हैं हम। जो चाहें कहें

कहनेवाले हमें॥ किसी की हमें याद आई है आज। कहो हमनशीं अब सम्हालें हमें॥ न जाएंगी हम बज़्म दिलदार से। नहीं मांग जो वह निकाले हमें॥ न शिकवा करेंगे खुदा की क़सम। वह बुत जितना चाहे सता ले हमें॥ लहद तक सब आकर गये अपने घर। किया है खुदा के हवाले हमें॥ बहुत मुज़तरब है दिले बेक़रार। कभी तो गले से लगा ले हमें॥ गले में मेरे हाथ वह डाल कर। यह कहते हैं सफ़दर मना ले हमें॥ २५॥

क्या जानें वां से लाये क़ासिद जवाब क्या क्या। तड़पा रहा है हमको यां इज़्तराब क्या क्या॥ नामे खुदा अब उनका जोबन उभार पर है। जलवा दिखा रहा है हुस्ने शबाब क्या क्या॥ कहता है कोई मफ़्तूं कहता है कोई मजनूं। उल्फ़त में हमने तेरे पाये खिताब क्या क्या॥ झगड़ा चुका न एक दिन योंही रहे हमेशा। अपने सवाल क्या क्या उनके जवाब क्या क्या॥ आग़ोश में भी खींचा बोसे भी हमने पाये। लूटे मज़े पिलाकर उनको शराब क्या क्या॥ वह हौसले वह हिम्मत वह वलवले वो ताक़त। हमराह ले गया है अहदे शबाब क्या क्या॥ क्या एतबारे दौलत है इस जहां में सफ़दर। मिट्टी में मिल गये हैं आलीजनाब क्या क्या॥ २६॥

क्या हमसे फिर गई निगहे यार देखना। तक़दीर जो दिखाय वह नाचार देखना॥ सैयाद दाम लेके तो आये सुए चमन। हम सबसे पहिले होंगे गिरफ्तार देखना॥ देखा जो मैंने प्यार से झुंझला के यह कहा। फिर यों मेरी तरफ न खबरदार देखना॥ गह मेरी सिम्त गाह सुए गैर है निगाह।

कसती है दोनों बागों यह तलवार देखना ॥ घर छूटना वह आलमे गुरबत में याद है। हसरत से जानिबे दरो दीवार देखना ॥ देखा जो बर्क़े तूर को मूसा ने गश किया। आसां नहीं है जल्वए दिलदार देखना ॥ सफ़दर शबे विसाल जो बोसा तलब किया। हँस कर कहा कि आपकी गुफ्तार देखना ॥ २७ ॥

ग़मे आशक़ी कारगर हो चुका। जो होना था ऐ बेख़बर हो चुका ॥ करो गुस्सा मौकूफ़ बरहम न हो। जमाना इधर से उधर हो चुका ॥ निशाना हो जल्द ऐ दिले बेख़बर। रवाना वो तीरे नजर हो चुका ॥ किसी बात पर वह न राज़ी हुए। कटी रात वक्ते सहर हो चुका ॥ सबा का गुज़र उस गली में नहीं। गुज़ारा तेरा नामःबर हो चुका ॥ किसी से वह अब दिल को देखेंगे क्यों। कि आईना मद्दे नज़र हो चुका ॥ बहुत सिजदे उस दर पै सफ़दर किये। चलो बस उठो दर्देसर हो चुका ॥ २८ ॥

कहूं क्या मैं तुमसे कि क्या चाहता हूं। जफ़ा हो चुकी अब वफ़ा चाहता हूं ॥ न वस्लत से मतलब न फुर्क़त से मतलब। फ़क़त मैं तुमारी रज़ा चाहता हूं ॥ दिल आईना है तुमको मालूम होगा। नहीं चाहता हूं मैं या चाहता हूं ॥ बहुत आशना हैं ज़माने में लेकिन। कोई दोस्त दर्द आशना चाहता हूं ॥ किसी गुल की बू लाके मुझको सुंघा दे। यही तुझसे बादेसबा चाहता हूं ॥ खुदा दोस्त को मेरे मुझसे छुड़ाये। जो दुश्मन का भी मैं बुरा चाहता हूं ॥ वह ईसा मिले तो कहूं उससे सफ़दर। कि मैं दर्द दिल की दवा चाहता हूं ॥ २९ ॥

तुम्हें ऐ बुतो कोई क्या जानता है। बड़े सख्त दिल हो

खुदा जानता है ॥ मैं आशिक़ मैं शैदा मैं वहशी मैं मजनूं। वह जो जानता है बजा जानता है ॥ मज़ा है मुहब्बत का कुछ जिसके दिल को। वह तेरी जफ़ा को वफ़ा जानता है ॥ मुझे क्या ग़रज़ कोई जाने न जाने। मेरे दिल का वह मुद्दआ जानता है ॥ मैं कुश्ता हूं उस क़ातिले होलःगर का। लहू को जो रंगे हिना जानता है। तमन्ना नहीं वस्ल की उसके दिल को। जो फ़ुर्क़त का तेरे मज़ा जानता है॥ वह सफ़दर जो मुद्दत से शैदा है तेरा। खुदा जाने तू उसको क्या जानता है॥ ३०॥

जहांन फ़ानी खुराब पाया यह बज़्मे हस्ती सराब देखा। तमाम आलम का कारखाना बरंग चश्मे हुवाब देखा॥ कहूं शबे ग़म की क्या मुसीबत सिवाय ईज़ा हुई न राहत। न मौत आई न नींद आई न आंख झपकी न ख्वाब देखा॥ अगर्चे काबा भी खूब घर है सनमकदः भी है अच्छी महफ़िल। मगर न दोनों को हमने अपने मकाने दिल का जवाब देखा॥ तरक़्क़िए दाग़े ग़म न पूछो फ़िराक़े जानां में हमनशीनो। जो शाम को माह इसको पाया तो सुबह को आफ़ताब देखा॥ कलीम से कोई जाके कह दो कि तुमने कहना मेरा न माना। रहा ज़रा भी न होश बाक़ी न ताब आई जनाब देखा॥ जिसे समझते हैं सब मुहब्बत वह है हक़ीक़त में ऐन ज़िल्लत। किसी को शैदा किसी को रुसवा किसी को खानाखुराब देखा॥ न चैन सफ़दर था ज़िन्दगी में न बाद मरने के पाइ राहत। यहां भी हमने अज़ाब देखा वहां भी हमने अज़ाब देखा॥ ३१॥

खुदाय आलम रहे रज़ा में वो दिल वो हिम्मत मुझे अता कर। छुरी के नीचे करूं मैं सिजदा क़लम के मानिन्द सर

झुका कर ॥ कहा था बुलबुल से हाल मैंने तेरे सितम का बहुत छिपा कर। यह किसने उनको ख़बर सुनाई कि हँसपड़े फूल खिलखिला कर ॥ कभी रुकावट कभी खिचावट कभी है झिड़की कभी है गाली। बुरी बलाओं में मुबतिला हूं मैं इन हसीनों से दिल लगा कर ॥ मगर वह समझे हैं अमम मुझको कि कुश्ता करते हैं वस्ल की शब। जला जला कर बुझा बुझा कर रुला रुला कर घुला घुला कर ॥ बलन्द तेग़े निगाह क़ातिल ज़रा जो हो जाये क़त्लगह में। ज़मीं पै खुरशैदो माह लोटें बरंग बिस्मिल फ़लक से आ कर। मरीज़ दर्दे फ़िराक़ हूं मैं तमाम मरने की है तमन्ना: मिले जो कोई फ़क़ीर कामिल कहूं कि हक़ में मेरे दुआ कर ॥ मेरे जनाज़े को उनके कूचे में नाहक़ अहबाब लेके आये। निगाहे हसरत से देखते हैं वह रुख़ से परदा उठा उठा कर ॥ फ़ुग़ां बुक़ा आह नाल: जारी यही रहे शग़्ल रोज़ ऐ दिल। यह आशिक़ों का है पंजगाना क़ज़ा न कर इसको तू अदा कर ॥ नमाज़ में भी है फ़िक्रे दुनियां किधर है तेरा ख़याल सफ़दर। ख़ुदापरस्ती में बुतपरस्ती ख़ुदा ख़ुदा कर ख़ुदा ख़ुदा कर ॥ ३२ ॥

बुरा हो सैयाद का इलाही निकाल कर आशियां से हमको। क़फ़स में फेंका बला में डाला कहां ये लाया कहां से हमको ॥ तुम्हारे आशिक़ तुम्हीं से उलफ़त तुम्हीं को जानें तुम्हीं को समझें। सिवा तुम्हारे नहीं है मतलब जहांनो अहलेजहां से हमको ॥ न शिकवा मुंह से मेरे निकलता न रंग उस शोख़ का बदला। किया है दोनों को सख़्त नादिम गिला है अपनी ज़बां से हमको ॥ यक़ीन कामिल है रास्ते में

मिलेंगी वह अब ज़रूर हमसे। कि जबसे दिल ने किया रवाना वहाँ से उनको यहाँ से हमको॥ चमन में हम सैर को तो आए मगर है खटका सा एक दिल को। न दोस्त अपना यहाँ है गुलचीं न राह है बाग़बां से हमको॥ हुआ है मुद्दत में वस्ले जानां अजीब राहत से सो रहे हैं। अभी तो है रात ऐ मुअज़्ज़िन जगा न शोरे अज़ां से हमको॥ पसे फ़ना भी नज़र में अब तक वही है जमघट वही हैं जलसे। अगरचे इस उम्र बेवफ़ा ने छुड़ा दिया कारवां से हमको॥ वह तोड़ कर चूड़ियों को अपनी यह बोले मेरे क़फ़न में रख कर। कि सिहने महशर में ढूंढ़ लेना किसी जगह इस निशां से हमको॥ यह सूरे महशर से कह दो सफ़दर कि खाकसारों से क्यों कुदूरत। लहद में राहत से सो रहे हैं जगा न शोरो फ़ुग़ां से हमको॥ ३३॥

खुली ज़ुल्फ़ शब जल्वःगर होगई। उठी रुख से जिस दम सहर होगई॥ वह सफ़्फ़ाक महशर में आया तो खल्क़। इधर होगई कुछ उधर होगई॥ इलाही यह किसको लिखा ख़त्ते शौक़। कि दिल की तड़प नामवर होगई॥ इलाही फ़ुग़ां बे असर थी तो थी। दुआ मेरी क्यों बेअसर होगई॥ कहे कोई सफ़दर से सोए बहुत। उठो आंख खोलो सहर होगई॥ ३४॥

सितम सहते हैं नौजवां कैसे कैसे। यह लेते हैं रोज इम्तिहां कैसे कैसे॥ गुलन्दाम देखे जवां कैसे कैसे। निगाहों में हैं बोस्तां कैसे कैसे॥ क़फ़स में फँसे नग़्मःसंजाने गुलशन। उजाड़े गये आशियां कैसे कैसे॥ न पाया मकां उसका क़ासिद फिर आया। बताये थे हमने निशां कैसे कैसे॥ मिटे जबसे इसकी दहानो कमर में। खुले हम पे राज़े निहां कैसे कैसे॥ कभी

उसने फिर कर न देखा न देखा । तड़फते रहे नीमजां कैसे कैसे ॥ किसी तरह सफ़दर के तेवर न बदले । किये इश्क़ ने इम्तिहां कैसे कैसे ॥ ३५ ॥

जफ़ा से मुंह न फेरेंगे सता ले जिसका जी चाहे । वफ़ादारी में हमको आज़मा ले जिसका जी चाहे ॥ मैं दिल को हाथ में लेकर हसीनों से यह कहता हूं । यह तूती बोलता लाया हूं पाले जिसका जी चाहे ॥ मेरे क़ाबू में आ कर किस मज़े से वो यह कहते हैं । हँसा ले जिसका जी चाहे रुला ले जिसका जी चाहे ॥ हसीनों के बराबर रख दिया है नक़्द दिल हमने । नहीं कुछ काम अब हमको उठा ले जिसका जी चाहे ॥ गुदाज़े इश्क़ से पाया है दिल ने शमअ का रुतबा । बुला कर इसको महफ़िल में जला ले जिसका जी चाहे ॥ ज़काते हुस्न का बोसा ख़ुदा की राह में देकर । हमेश: हम फ़क़ीरों की दुआ ले जिसका जी चाहे ॥ कभी मानिन्द गौहर आबरू सफ़दर न जाएगी । बज़ाहिर ख़ाक में मुझको मिला ले जिसका जी चाहे ॥ ३६ ॥

यों सरफ़रोश कूए क़ातिल को ढूंढते है । गुमकरद: राह जैसे मंज़िल को ढूंढते हैं ॥ उल्फ़त में तेरे दोनों गुम होगये है ऐसे । दिल हमको ढूंढता है हम दिल को ढूंढते है ॥ कह दो अभी न खोले बाबेबिहिश्त रिज़वां । मैदाने हश्र में हम क़ातिल को ढूंढते हैं ॥ फिरते हैं उस गली में जब पूछता है दरबां । कहते हैं गिर पड़ा है हम दिल को ढूंढते है ॥ रहता था साथ जिनका गुज़रे वह सब जहां से । सफ़दर अबस हम अगली महफ़िल को ढूंढते हैं ॥ ३७ ॥

आज कल धुन यह बँधी है तेरे दीवाने को। चल के आबाद करूं अब किसी वीराने को॥ वस्ल में दूर करो आइने को शाने को। और रातें हैं बहुत जुल्फ़ के सुलझाने को॥ देख कर दर पे ख़फ़ा होते हो क्यों जाता हूं। थम गया था दिले बेताब के ठहराने को॥ फ़ुरक़ते यार में किस किस को भुलाऊं दिल से। नाज़ को ग़मज़े को अन्दाज़ को शरमाने को॥ दिल दुखे या न दुखे रहम करें या न करें। काश एक बार वह सुन लें मेरे अफ़साने को॥ सख़्त हैरान हूं किस किस की सुनूं वहशत में। ग़ोल यारों के चले आते हैं समझाने को॥ मौत उसकी है जो हो तेग़े अदा का चौरंग। यों तो सब ख़ल्क़ में मरजाते हैं मरजाने को॥ ऐसे आने से तो हम काश न आये होते। चार दिन गुलशने हस्ती की हवा खाने को॥ पासे ख़ातिर से कहा शेर ये मैंने सफ़दर। एक परी मुझसे ग़ज़ल मांगती थी गाने को॥ ३८॥

मुसीबत में दिल को फँसा कर चले। हम आये थे क्या करने क्या कर चले॥ चमन से वह यों मुसकिरा कर चले। कि फूलों पे बिजली गिरा कर चले॥ जब आये वह महशर बपा कर चले। कि ख़्वाबीदः फ़ितने जगा कर चले॥ हज़ारों गरेबां हुए चाक चाक। वह इस तरह दामन उठा कर चले॥ शिगुफ़्ता हुए उनके आने से गुल। चमन में वह कारे सबा कर चले॥ दवा दर्दे दिल की कहां चन्द रोज़। तमाशाए दारुशिफ़ा कर चले॥ मेरी क़ब्र पर वह जो आये कभी। कुदूरत से ठोकर लगा कर चले॥ हुआ जुज़ ख़ता कौन हमसे सवाब। जहां में हम आये तो क्या कर चले॥ न रहम आए या आए

सफ़दर उन्हें। जो कुछ हाल था हम सुना कर चले ॥ ३९ ॥

चमन में की है फिर फिर कर तुमारी जुस्तजू बरसों। किसी गुल में न पाई पर यह भीनी भीनी बू बरसों ॥ दिला है हिर्सें बेजा एक दम की जिन्दगानी है। जहां में रहने आया हूं न मैं बरसों न तू बरसों ॥ न कुछ उक़दा खुला उनपर मेरे हाले परेशां का। कहा की जुल्फ़ेपेचां हाल मेरा मू ब मू बरसों ॥ किसी की याद ने बख्शा है ऐसा ज़ौक़ खामोशी। कि बुत बनकर रहे हैं हम खुदा के रूबरू बरसों ॥ यह किसके खून की मेंहदी इलाही मलके आये थे। कि आई तेग़े क़ातिल से दुल्हिन की सुर्ख़ी व बू बरसों ॥ लहद पर भी वह सुर्ख़ नाशाद के आया न मुद्दत तक। मुए पर भी न मेरे दिल से निकली आरज़ू बरसों ॥ चमक देखे जो मेरे दर्द की इन्साफ़ से दम भर। तो बिजली की तरह तड़पा करे ऐ तेग़ तू बरसों ॥ रही क्या अज असीरी में भी साक़ी तेरे मस्तों को। कि हलक़ा गर्दने खुम का रहा तौक़े गुलू बरसों ॥ ज़बाने हाल में इज़हार दर्दे दिल किया सफ़दर। लबे खामोश में करते रहे हम गुफ्तगू बरसों ॥ ४० ॥

बनावट के हैं तौर सारे तुम्हारे। बिगड़ जायगी अब हमारे तुम्हारे ॥ हसीनो हुआ हमको अफ़शां से रौशन। कि चमके हुए हैं सितारे तुम्हारे ॥ न है इश्क़ ऐसा न है हुस्न ऐसा। जहां में हैं शोहरे हमारे तुम्हारे ॥ कहां लालओ गुल में हैं रंग ऐसे। अजब गाल हैं प्यारे प्यारे तुम्हारे ॥ तमाशा है लें ग़ैर बोसे लबों के। शकर रंजियां हों हमारे तुम्हारे ॥ भला ग़ैर क्या हमसे आंखें मिलाते। जो उनको न होते इशारे तुम्हारे ॥ अदा

से अबे वस्ल बोले बिगड़ कर । बनेगी न सफ़दर हमारे तुम्हारे ॥ ४१ ॥

सफ़दर कमाल तंग हैं जौरो जफ़ा से हम । फ़रयाद हम बुतों की करेंगे खुदा से हम ॥ दिल को खयाले गेसुए पेचाँ नहीं रहा । अच्छा हुआ कि छुट गये इस बला से हम ॥ जिस जा कभी हुआ न फ़रिश्ते का भी गुज़र । पहुंचे वहां रसाइए बख़्ते रसा से हम ॥ छल्ला चुरा के एक तो दे दस्ते यार का । कहते हैं हाथ जोड़ के दुज़्दे हिना से हम ॥ पूछा मिज़ाज हमने तो बोले कि शुक्र है । अच्छे हैं आज तक तो तुम्हारी दुआ से हम ॥ नफ़रत है दिल को दौलते दुनियां से इस क़दर । चलते हैं बच के सायए बाले हुमां से हम ॥ सफ़दर हमारा दिल जो परेशां योंहीं रहा । खींचेंगे हाथ उलफ़ते ज़ुल्फ़े दुता से हम ॥ ४२ ॥

किस शान से घर में मेरे वह आये हुए हैं । सहमे हुए झेंपे हुए शरमाए हुए हैं ॥ फिर हाथ न आएगा जो लेना है तो ले लो । अब तक दिले बेताब को ठहराए हुए हैं ॥ है सुबह शबे वस्ल भी किस तरफ़ा की सोहबत । हम छेड़ पर आमादा वह शरमाए हुए हैं ॥ खंजर को न आती थी खिचावट न रुकावट । क़ातिल ये चलन सब तेरे सिखलाए हुए हैं ॥ खिलवत में भी इज़हारे तमन्ना नहीं मुमकिन । अन्दाज़ो अदा यार के साथ आए हुए हैं ॥ कहदो मेरे मरने की खबर उनसे यह किसने । कुछ सोच में बैठे है वह घबराए हुए हे ॥ सरसर से कहो जल्द चिराग़ आके बुझा दे । तुरबत पे कई परदःनशीं आए हुए हैं ॥ करता दिले बेताब क़यामत मगर अब तक ।

रोके हुए थांभे हुए बहलाए हुए हैं॥ हूरों को कभी मुंह न लगाएंगे वह सफ़दर॥ जो यार के बोसों का मज़ा पाए हुए हैं॥ ४३॥

सितम का नाम मिटा ज़ुल्म का निशां न रहा। हमारे बाद उन्हें लुत्फ़ हमतहां न रहा॥ खिज़ां के आतेही वह रंगे बोस्तां न रहा। वह हमसफ़ीर वह गुलशन वो अशियां न रहा॥ चमन में दश्त में ज़िन्दां में कूए जानां में। शरीके हाल मेरा ग़म कहां कहां न रहा॥ वही हैं जोश वही वलवले ज-वानी के। दिल आज तक है जवां गो कि मैं जवां न रहा॥ फ़सान: लैलीओ मजनूं का रह गया बाक़ी। वह दश्ते बख्ट वो नाक़: वो सारबां न रहा॥ यह बे हिसाब उठाए फ़िराक़ में सदमे। फ़सनाए शबे ग़म क़ाबिले बयां न रहा॥ लिया जो एक दिल उसने तो दो दिये बोसे। हज़ार शुक्र यह सौदा बहुत गरां न रहा॥ यह हमने संगे दरे यार से जबीं रगड़े। कि नाम को खते तक़दीर का निशां न रहा॥ बुतों को बेखबरी देख कर हमें सफ़दर। ज़रा भी हौसलए नाल: वो फ़िगां न रहा॥ ४४॥

वह गेसू जो मुझको दिखाता रहेगा। वह पेंच यह दिल उठाता रहेगा॥ जो हँस कर वह क़ातिल रुलाता रहेगा। मेरा ज़ख्म रो कर हँसाता रहेगा॥ मुसाहब बनाओ तो तुम मेरे दिल को। ज़माने के क़िस्से सुनाता रहेगा॥ अदम को चलें देर होती है हमको। जिसे होगा आना वह आता रहेगा॥ मिला है जो बेताब दिल मुझको खुश हूं। लहद में यह हर दम जगाता रहेगा॥ अगर हँस के बोलेगा तू मुझ गदा से।

तेरा बोलबाला भी दाता रहेगा॥ अगर वह गया बज़्मे जानाँ में चस्ते। बड़े रंग सफ़दर जमाता रहेगा॥ ४५॥

कभी हाथों में मेंहदी है कभी जुल्फों में शाना है। ये सब उनके बहाने हैं न आना है न जाना है॥ ख़ुदा के वास्ते ऐ ज़ोफ़ इतना तू न कर लाग़र। अभी तो नाज़ उसके मुद्दतों मुझको उठाना है॥ वो रुख़ पर मल के ग़ाज़ा देखती हैं आज आईना। हुआ रोशन कि उनको आग पानी में लगाना है॥ अजब यह वक़्त इसको इश्क़ सहरा में नज़र आया। गुबारे क़ैस लैली के महद पर शामियाना है॥ अज़ीज़ अहबाब ये सब गोर तक जाकर फिर आएंगी। मेरे ताबूत के हमराह क्यों सारा ज़माना है॥ बफ़ूरे सैल बिजली मार रहज़न दुज़्दे ग़ारतगर। ये सारी आफ़तें हैं जिस तरफ़ क़ासिद रवाना है॥ सुना हाले दिले सफ़दर तो वह बोले जलीसों से। कि दीवाना सा है क्या इसकी बातों का ठिकाना है॥ ४६॥

अब दिल में जुल्म सहने की ताक़त नहीं रही। वह तुम नहीं रहे वह मुहब्बत नहीं रही॥ वह दिन गये कि लाखों उठाते थे झिड़कियां। अब नाज़ उठाने की भी ताक़त नहीं रही॥ दुनियां वही ज़मीन वही आसमां वही। फिर क्यों हुज़ूर की वह तबीयत नहीं रही॥ चन्दे में तुम बदल गये या हम बदल गये। क्या वजह आपको जो वह उल्फ़त नहीं रही॥ तुमको तो सब तरह की लियाक़त ख़ुदा ने दी। सच है हमीं में कोई लियाक़त नहीं रही॥ शिकवा नहीं है आप जो अब पूछते नहीं। वह शक्ल मिट गई वह शबाहत नहीं रही॥ बोले वह शिकवा उनसे न आने का जब किया। हां सच है इन

दिनों हमें फ़ुरसत नहीं रही ॥ ईज़ा उठाई ऐसी शबे हिज्रे यार में। कुछ तूले रोज़े हश्र की दहशत नहीं रही ॥ दिल क्या कि उनको जान भी सफ़दर ने नज़्र की। शुक्रे खुदा कि कोई शिकायत नहीं रही ॥ ४७ ॥

कर गई अंधेर बरपा बेवफ़ाई आपकी। चार दिन की चांदनी थी आशनाई आपकी ॥ क्या कहूं क्या कुछ मज़े लूटे निगाहे शौक़ में। छट गई जिस वक़्त सीने से दुलाई आपकी ॥ सादे सादे होंठ क्यों हैं साफ़ कह दो जानेमन। किसने मल के मुंह से मुंह मिस्सी छुड़ाई आपकी ॥ आमदे फ़स्ले खिज़ां है रुख़सते फ़स्ले बहार। वस्ल देखा देखनी है अब जुदाई आपकी ॥ याद है कहना किसी का सर झुका कर वस्ल में। अब तो कुछ शिकवा नहीं हसरत बर आई आप की ॥ शेख़ काबा मोहत-सिब पीरे कलीसा बरहमन। ऐ सनम महाह है सारी खुदाई आपकी ॥ रफ्तः रफ्तः हज़रते सफ़दर कहां पहुंचा कलाम। आसमां पर कुल ग़ज़ल जोहरा ने गाई आपकी ॥ ४८ ॥

मसीहा हमें तेग़ क़ातिल हुई। यहां ज़िन्दगी मर के हासिल हुई ॥ मुझे उसने बोसा दहन का दिया। मुराद आज मुंह मांगी हासिल हुई ॥ हुआ तेरा बीमार यह नातवां। कि करवट बदलनी भी मुश्किल हुई ॥ तेरा अक्से रुख़ आइने में पड़ा। परी यों परी से मुक़ाबिल हुई ॥ वह लाग़र हूं मानिन्दे नक़्शे क़दम। जहां गिर पड़ा मुझको मंज़िल हुई ॥ तसव्वुर ने तेरे जगह दिल में की। परी अपने शीशे में दाख़िल हुई ॥ मेरी उम्र ग़फ़लत में सफ़दर कटी। मैं सोता रहा तय यह मंज़िल हुई ॥ ४९ ॥

कुछ ख़बर भी है तुम्हें अपने गिरफ़्तारों की। जान आंखों में है अब इश्क़ के बीमारों की॥ पड़ गया नील तसव्वुर में भी बोसा जो लिया। किस क़दर जिल्द है नाज़ुक तेरे रुख़सारों की॥ इसने वहशत को दिया है मेरी वहशत ने फ़रोग़। नोक रख ली है मेरे आबिलों ने ख़ारों की॥ रहमते हक़ जो उठा दे अभी चेहरे से नक़ाब। वे गुनह टौहें खुशामद की गुनहगारों की॥ दर्दे दिल ज़ख़्मे जिगर हिज्रे बुतां रश्के अदू। हाय कुछ हद नहीं सफ़दर तेरे आज़ारों की॥ ५०॥

वह नफ़रत से तिउरी चढ़ाये गये। मगर दाग़ दिल हम दिखाये गये॥ कहीं ख़ौफ़ से हम न आये गये। मगर नाज़ तेरे उठाये गये। गये मेरे घर से मगर इस तरह। कि नक़्शे क़दम भी मिटाये गये॥ मदद इसको कहते हैं तक़दीर की। मैं रूठा किया वह मनाये गये॥ बहुत हाथ कानों प रक्खे मगर। हम अहवाल उनको सुनाये गये॥ न आये कभी शर से अग़ियार बाज़। उन्हें कुछ लगाये बुझाये गये॥ सुना है यह हमने कि सफ़दर के शेर। ज़बानों से हूरों के गाये गये॥ ५१॥

करम समझे जो उस बुत ने जफ़ा की। फिर इसपर हम बुरे क़ुदरत ख़ुदा की॥ शबे फ़ुरक़त में दिल ने साथ छोड़ा। कहां इस बेमुरव्वत ने दग़ा की॥ मेरे ग़म में न मलिये दस्ते अफ़सोस। कि शोख़ी कम न हो रंगे हिना की॥ नमक क़ातिल ने छिड़का ज़ख़्मे दिल पर। हमारे दर्द की अच्छी दवा की॥ न कब एहसां किया एहसां के बदले। मिज़ाज उसने अगर पूछा दुआ की॥ गुबारे दिल जो बाक़ी था पसेमर्ग। हमारी ख़ाक से आंधी उठा की॥ शबीह उसकी मैं क्या खिचवाऊं

सफ़दर। वह खुद तसवीर है नाज़ो [illegible] को ॥ ५२ ॥

शोखी के साथ कुछ रहे परदा [illegible] [illegible] आग़ाज़ है अभी तेरे हुस्नो शबाब का ॥ झगड़ों में मेरे [illegible]ज़ा हो गया तमाम। किस्सा न तय हुआ दिले खानाखराब का ॥ इतना गुरूर हुस्न पे लाज़िम नहीं बुतो। मेहमाने चन्दरोज़ः है मौसिम शबाब का ॥ किस किस तरह तड़प के बसर की शबे फ़िराक़। पूछो न हाल मुझसे मेरे इज़्तराब का ॥ परवा गज़क की किसको है ला साक़िया शराब। जल जल के दिल में होगया आलम कबाब का ॥ ऐ शहसवारे हुस्न ज़रा रोक ले इनान। ले लूं मैं चश्मे शौक़ से बोसा रिकाब का ॥ ज़ाहिद का दिल खुदा की क़सम फिर न रह सके दें अपने हाथ से जो वो साग़र शराब का ॥ पी लूं अगर शराब तो ज़ाहिद मुआफ़ कर। यह मौसिमे बहार यह आलम शबाब का ॥ कैसा फंसा दिया है बलाओं में इश्क़ ने। सफ़दर बुरा हो इस दिले खानःखराब का ॥ ५३ ॥

वो मेरे पहलू से घर सिधारे इधर की दुनियां उधर हुई है। क़यामत आई है या इलाही यह आज कैसी सहर हुई है ॥ मरीज़े उलफ़त की रूह तन से रवानः पिछले पहर हुई है। तमाम आफ़ाक़ में है शोहरा तुम्हें भी इसकी खबर हुई है। तुझे है मालूम खाक ज़ाहिद कि आशक़ी में है कैसी लज़्ज़त। यह पूछ मुझसे कि उम्र मेरी इसी में सारी बसर हुई है ॥ नहीं तबीयत में अब वह गरमी नहीं वह आंखों में तर्ज़ें शोखी। हमें यह साबित हुआ मुकर्रर किसी की तुमको नज़र हुई है ॥ खुदा ने ऐसा जमाल रौशन किया है उस मेह्र को इनायत।

जो रूए तावां से जुल्फ़ उट्ठी तो शाम को भी सहर हुई है॥ कभी जो दर तक मैं उनके पहुंचा तो मुझको दरबां ने दी यह तसल्ली। बुलाएंगे वह ज़रूर तुमको ज़रा तो ठहरो ख़बर हुई है॥ नया है पीरी में यह तकल्लुफ़ कि लोग सोहबत से भागते हैं। बरहनः शमशीर बन गये हम ख़मीदः जबसे कमर हुई है॥ नसीब देखो कि एक दिन भी मिज़ाज उनका न हमसे बदला। अगरचे सौ बार से ज़ियादः इधर की दुनियां उधर हुई है॥ गुज़र गई जब शबे जवानी तो क्या रहा लुत्फ़ शेरख़्वानी। ज़बान है बन्द अपनी सफ़दर ख़मोश शमए सहर हुई है॥ ५४॥

सबा क्या छू गई है आप क्यों शरमाये जाते हैं। गुले आरिज़ नसीबे दुश्मनां कुम्हलाये जाते हैं॥ ज़रा मक़्तल में चल खिंच खिंच के दम ले ले के रुक रुक के। क़यामत है ये शमशे तेग़ को सिखलाये जाते हैं॥ गया है क़ासिदे सौके शहादत उनके लेने को। अजल इतना तवक़्क़ुफ़ कर कि वह भी आये जाते हैं॥ जहां में रह न जाए नामे उल्फ़त ता कहीं बाक़ी। निशांहाए मज़ारे आशिक़ां मिटावाये जाते हैं॥ बढ़ा ऐ शौके दिल दश्ते हवस पिस्ताने जानां पर। मगर ये नख़्ले क़ामत से अभी हाथ आये जाते हैं॥ नज़र आती है शाने किबरिया उस बुत की महफ़िल में। बिठाये जाते हैं अग़ियार हम उठवाये जाते हैं॥ वो मस्ते हुस्न दोनों में किसी की भी नहीं सुनता। अबस शेख़ो बरहमन अपनी अपनी गाये जाते हैं॥ दिखा कर आबे तेग़े तेज़ सफ़्फ़ाक कहता है। जो हम पर मरते हैं इस घाट वह नहलाये जाते हैं॥ भला सफ़दर मैं उनको राह पर किस तरह से लाऊं। खपे जाते हैं रोने लगते हैं शरमाये जाते हैं॥ ५५॥

पड़ गया क्या ज़ख्म तेग़े इश्क़ कारी इन दिनों। मुर्ग़े बिस्मिल की तड़प है बेक़रारी इन दिनों॥ वाह क्या जोबन प है हुस्ने उरूसाने चमन। नाज़ करती फिरती है बादे बहारी इन दिनों॥ फुरक़ते दिलदार में रुख़सत हुए होशो हवास। दर्द एक करती है दिल की गमगुसारी इन दिनों॥ जा बजा सब्ज़ा हवाएं सर्द नहरें मोजज़न। क्या गुलिस्तां में है लुत्फ़े बादःख्वारी इन दिनों॥ फुर्क़ते जानां में दिल ने भी हमारे तर्क की। हमग़मी गमगुसारी दोस्तदारी इन दिनों॥ वाह क्या जोबन दिखाती हैं तुम्हारी छातियां। उभरी उभरी गोरी गोरी प्यारी प्यारी इन दिनों॥ फ़स्ले गुल में तोड़िये तौबा रहा जाता नहीं। क्या करे सफ़दर कि हैं बे इख्तियारी इन दिनों॥ ५६॥

जो दिल में ज़रा आपके घर न होगा। गुज़ारा मेरा बन्दः परवर न होगा॥ नज़ाकत यही है तो उस फ़िल्ल:गर से। रवा मेरे गरदन पै ख़ंजर न होगा॥ करो ज़ालिमो ज़ुल्म जितना कि चाहो। बपा क्या किसी रोज़ महशर न होगा॥ न छिड़कोगी जब तक नमक ज़ख्म दिल पर। मज़ा ज़िन्दगी का मयस्सर न होगा॥ न लिक्खेगी जब तक मुझे आप नामा। कभी ख़त में शिकवों का दफ़्तर न होगा॥ अगर कूए क़ातिल का जाना न छूटा। बदन पर मेरे एक दिन सर न होगा॥ लिया ख्वाब में जिसने चारी से बोसा। कोई और होगा वह सफ़दर न होगा॥ ५७॥

अयां बेखुदी में था जलवा किसी का। खुदी होगई अपनी परदा किसी का॥ उसे हाल मालूम हो क्या किसी का। न

आशिक़ किसी का न शैदा किसी का ॥ किया तूने पामाल क्यों दिल को ज़ालिम। अरे था यह नाज़ों का पाला किसी का ॥ कलेजा पकड़ कर अभी बैठ जाते। सुनाही नहीं तुमने नाला किसी का ॥ जो नरगिस को देखा मुझे याद आया। वह शरमा के आंखें झुकाना किसी का ॥ बुतों को जो देखूं न कर मनअ वाइज़। तमाशा है इनका तमाशा किसी का ॥ उठाए जो यह नाज़ बेजा तुम्हारे। हमारे सिवा हौसला क्या किसी का ॥ अबस दिल को लेते हो ऐ जानेजां तुम। जो मेरा नहीं क्या यह होगा किसी का ॥ खुशी उनको है जिसे ग़म कर रहा हूं। तड़फना है मेरा तमाशा किसी का ॥ शबे वस्ल आना न था मौत तुझ को। बना खेल तूने बिगाड़ा किसी का ॥ सुना मेरा मरना तो बोले वो सफ़दर। चलो होगया क़ौल पूरा किसी का ॥ ५८ ॥

न गुलचीं है शफ़ीक़ अपना न मूनिस बाग़बां अपना। ये दोनों होगए दुश्मन ठिकाना है कहां अपना ॥ बयां कैसा तसव्वुर से भी है क़िस्सा निहां अपना। ज़बां का ज़िक्र क्या दिल भी नहीं है राज़दां अपना ॥ हमें क्या काम था इस गुलशने वीरां में आने से। छुड़ाया आबो दाने ने क़दीमी आशियां अपना ॥ वह घबराते हैं तनहाई से हम ग़म से तड़फते हैं। अजब आलम है फ़ुरक़त में वहां उनका यहां अपना ॥ तलाश एक रश्के यूसुफ़ की रही ऐसी कि दिन बरसों। फिरा मंज़िल ब मंज़िल कारवां दर कारवां अपना ॥ शबे वसलत हुई आख़िर अदम को हम भी चलते हैं। कहो शमए सहर, आगे बढ़े लेकर निशां अपना ॥ रियाज़े देह्र में है, ख़त्म मुझपर ख़ान:

बरहोशी। कि अपने मुग़तेबर को जानता हूं आशियां अपना॥ पसे आईना हम तूती है जो सुनते हैं कहते हैं। जबां उनकी जबां अपनी दहन उनका दहां अपना॥ शकररेज़ी शिकायत है सखुन में अपने ऐ सफ़दर। बजा है गर लक़ब हो तूतिए शीरींज़बां अपना॥ ५९॥

बेचैन कर रहा है क्या क्या दिलो जिगर को। हर दम किसी का कहना जाने हैं हम तो घर को॥ कब तक यह तूले फुर्क़त तासीर दे इलाही। हम आहे नारसा को इस अश्के बे असर को॥ इक एक नाज़ उनका बेचैन कर रहा है। क्योंकर कोई सँभाले अपने दिलो जिगर को॥ हर बार कौन मांगे। साक़ी से सागरे मय। अपनी ख़बर नहीं है मुझ मस्त बेख़बर को॥ बेताबियां न समझा कुछ भी वह नावक अफ़गन। पैकां के साथ खींचा मेरे दिलो जिगर को॥ ज़िन्दां से जब मैं निकला ज़ंजीर ने किया गुल। आबाद फिर भी करना आकर इस उजड़े घर को॥ जब क़ाफ़िला चलेगा सूए दियारे जानां। पहिले चलेंगे सबसे हम बांध कर कमर को॥ हर बात में है रोना हर गाम पर है नाला। मुश्किल है साथ मेरा हरएक हमसफ़र को॥ उस बुत ने हाल मेरा सफ़दर कभी न पूछा। किस दिन नहीं गया मैं थांभे हुए जिगर को॥ ६०॥

फिर नज़र आगये वो गेसुए ख़मदार कहीं। फिर गिरफ़्तार हुआ आज दिलेज़ार कहीं॥ दिल तड़फता है बहुत आज क़फ़स में सैयाद। कोई आज़ाद हुआ ताज़: गिरफ़्तार कहीं॥ आगई आह जबां तक तो कहा चर्ख़ को ख़ैर। खिंच गई म्यान से अब रुकती है तलवार कहीं॥ इतनीसी बात प होते हैं

खबम आप खफ़ा। एक बोसे प यह देखो नहीं तकरार कहीं॥ इस अदा से न क़दम वक्ते तमाशा रखिये। हो न हंगामए महशर सरे बाज़ार कहीं॥ सरे बाज़ार न यों नाज़ो अदा से चलिये। आपकी चाल प चल जाय न तलवार कहीं॥ साफ़ चेहरे से तुम्हारे यह अयां है मफ़्दर। दामे उल्फ़त में किसी के हो गिरफ़्तार कहीं॥ ६१॥

गालियों पर भी हक़ में तेरे दुआ करते हैं। हम वह करते हैं जो अरबाबेवफ़ा करते हैं॥ तेरी बू संघने को चाहिये ऐ यार दिमाग। क्या समझ कर गिलए बादेसबा करते हैं॥ कोई इतना तो बता दे कि हसीनाने जहां। दिल जो ले जाते हैं उश्शाक़ का क्या करते हैं॥ गालियां देने लगे कैसे वह बरहम होकर। हमने इतनाही कहा था कि दुआ करते हैं॥ ध्यान कब उसकी कमर का नहीं आता हमको। सफ़रे मुल्के अदम रोज़ किया करते है॥ बारेशाही न उठेगा तेरे दरवेशों से। क्या समझ कर तलवे ज़ुल्फ़े हुमा करते हैं॥ को जो मफ़्दर ने शिकायत तो शिकायत क्या है। दोस्तोंही का तो अहबाब गिला करते हैं॥ ६२॥

चमन में मय का मज़ा है जो पास यार भी हो। हवाए सर्द भी हो अब्रे नौबहार भी हो॥ न जाऊं उसकी गली में मगर क़रार भी हो। सँभालूं चाक जिगर दिल प इख्तियार भी हो॥ सवाले वस्ल में लाज़िम है बेक़रारिए दिल। दुआ क़ुबूल हो शामिल जो इज़तरार भी हो॥ दिया था दिल तुम्हें किस किस उमेद पर मैंने। न जानता था कि ऐसे सितमशुआर भी हो॥ चमन में बज़्म में मंज़ूर हो जहां चलिये। मगर यह शर्त है

हमराह जांनिसार भी हो॥ सहर करीब है बैठोगे बज़्म में कब तक। चलो पलङ्ग प आशिक़ से हमकनार भी हो॥ शबे विसाल का जब लुत्फ़ उठे अय सफ़दर। चमन भी जाम भी सीना भी मय भी यार भी हो॥ ६३॥

दिलो जिगर खून हो चुके हैं हवास तक अपने जा चुके हैं वही मुहब्बत का सौसिला है हज़ार सदमे उठा चुके हैं॥ यक़ीं है अब रह्म पर व आएं सितम किये हैं कमाल मुझ पर। सता चुके हैं रुला चुके हैं दिलो जिगर को जला चुके हैं॥ कभी मज़म्मत न होगी वाइज़ शराब गुलगू की मैकशों से। ज़बां से उसको बुरा कहें क्या जिसे कि मुंह हम लगा चुके हैं॥ लगा के खंजर बुझाएंगे क्या वह प्यास मेरी सुना है मैंने। मेरी तरफ़ से रक़ीब उनको लगा चुके हैं बुझा चुके हैं॥ सितम से दिल और शादमां हो कभी न मह्वो कोई गरां हो। किसी का अब और इम्तिहां हो हमें तो आप आज़मा चुके हैं॥ मुक़द्दर अपना है खाब: कब से कहां है उम्मैद अब कि चौंके। तड़फ के चिल्ला के शोर करके बहुत इसे हम जगा चुके हैं॥ चमन से गुल तोड़ना तो कैसा यही है सफ़दर बहुत ग़नीमत। कि दामन उलझा जो ख़ार से था बमुश्किल उसको छुड़ा चुके हैं॥ ६४॥

हुए उलफ़त के जब बन्दे तो कब कातों से डरते हैं। खुदा के सामने कह देंगे ऐ बुत तुझ प मरते हैं॥ ज़ियाद: इससे शोखी और क्या होगी क़यामत है। लिये बैठे हैं मुट्ठी में मेरा दिल और मुकरते हैं॥ तेरी इस बेवफ़ाई पर वफ़ादारी ये करता है। नहीं मरते हैं तुझपर हम तो अपने दिल प मरते हैं॥ यह खुदबीनी कहां तक आइने को अब करो रुख़सत। इधर भी

एक नज़र हम भी तो तुमको प्यार करते हैं॥ फ़िराक़े यार में यों उम्र मफ़हर की गुज़रती है। तड़पते हैं सिसकते हैं न जीते हैं न मरते हैं॥ ६५॥

अजीब मक़्तल में हैं तमाशे व तेग़ खींचे टहल रहे हैं। कहीं प लाशें पड़े हैं टुकड़े कहीं प बिस्मिल उछल रहे हैं॥ नमाज़ पढ़ लूं मैं सफ़ बिछा कर नियाज़ दूनी मैं दूं मँगा कर। कि मेरे घर में हुज़ूर आकर ये आज पहले पहल रहे हैं॥ चमन में पत्ता कोई जो खड़का हुआ है पैदा कुछ उसको धड़का। ग़ज़ब का है अस्पेनाज भड़का क़दम क़दम पर सँभल रहे हैं॥ अजल ने की यह दराज़ दस्ती उजड़ गई ज़िन्दगी की बस्ती। उतर चुका है लिबासे हस्ती अभी वो कपड़े बदल रहे हैं॥ उभारें उनको रक़ीब शायद लिये हैं आते मेरी लहद पर। हवा हो क्यों यह भड़क भड़क कर चिराग़ मरक़द प जल रहे हैं॥ चले हैं मरक़द की सैर को वह क़दम का उठना भी एक बला है। ग़ज़ब क़यामत का ज़लज़ला है मज़ार मुरदे बदल रहे हैं॥ ख़याले शिकवा ज़रा न लाएं मेरे जनाज़े प वह न आएं। अभी हैं कमसिन दहल न जाएं वो घर से नाहक़ निकल रहे हैं॥ अजब मज़े वस्ल में हैं पाए पसीने में दोनों हैं नहाए। हम उनको छाती से हैं लगाए वो पंखियां हमको झल रहे हैं॥ कभी बुलाया जो पास हँस कर तो फिर अँगूठा दिखा के मटके। वो मुझसे मुद्दत से इक बलायत इसी तरह पर मचल रहे हैं॥ ६६॥

यहां हमारे सवालों का कुछ हिसाब नहीं। वहां जवाब यही है कि कुछ जवाब नहीं॥ वह वलवले नहीं वह आलमे

शबाब नहीं। चमक वह दर्द की वह रंगे इजतिराब नहीं॥ दहन है गुंचा तो संबुल है जुल्फ़ गुल आरिज़। बहारे बाग़ से कम आलमे शबाब नहीं॥ वह वे दहन हैं तो हम भी ज़बां नहीं रखते। इधर सवाल नहीं है उधर जवाब नहीं॥ तड़फ तड़फ के ये मौजें बयान करते हैं। किसी का दीदए पुरआब है हुबाब नहीं॥ बना मज़ार पसे मर्ग कूए जानां में। हज़ार शुक्र कि मिट्टी मेरी ख़राब नहीं॥ शरफ़ वही है न पूछे कोई तो क्या सफ़दर। हमामे सुबह हूं गो दाखिले हिसाब नहीं॥ ६७॥

बहार आई है दीवानो चलो सहरा से गुलशन को। निगाहे शौक़ से देखो उरूसे गुल के जोबन को॥ तमन्ना है बिठा कर सामने देखा करूं हरदम। तेरी इस भोली सूरत को तेरी इस प्यारी चितवन को॥ जवानी में हसीनाने जहां भी प्यार करते हैं। लगाये रखते हैं छाती से अपने अपने जोबन को॥ बहारे गुल में तोबा करके किस हसरत से तकता हूं। कभी साक़ी के चेहरे को कभी शीशे की गर्दन को॥ निहां कब तक रहे वह रुखे आलमसोज़ परदे में। जला दे शोलए बर्क़ेतजल्ली उसकी चिलमन को॥ वह चलते हैं उभर कर जोशे मस्ती में तो कहते हैं। नहीं कुछ माल चोरी का छिपाऊं क्यों मैं जोबन को॥ झुके जो आप से लाज़िम है झुकना उससे ऐ सफ़दर। तहे शमशीर क़ातिल के झुकाऊं क्यों न गरदन को॥ ६८॥

रुसवा अगर जहां में हुआ फिर किसी को क्या। अच्छा सही मैं सबसे बुरा फिर किसी को क्या॥ जुल्फ़ों को उनकी मैंने छुआ फिर किसी को क्या। खुद होगया असीरे बला फिर किसी को क्या॥ अहबाब मना करते हैं क्यों मुझको इश्क़ से।

बसवा हुआ ख़राब हुआ फिर किसी को क्या ॥ सिजदा किया बुतों को तो नासेह है क्यों ख़फ़ा । मुजरिम हुआ मैं पेशेखुदा फिर किसी को क्या ॥ उस बेवफ़ा को कुछ तो समझ कर दिया है दिल । अच्छा किया कि हमने बुरा फिर किसी को क्या ॥ अपनी खुशी से हम तो चले राहे इश्क़ में । दिल ख़ाक में मिला तो मिला फिर किसी को क्या ॥ हिंदू से कुछ ग़रज़ न मुसलमां से कुछ ग़रज़ । सबसे जुदा है दीन मेरा फिर किसी को क्या ॥ करता हूं वस्फे हुस्न तो कहते हैं नाज़ से । जोबन है हम पे नामेखुदा फिर किसी को क्या ॥ जो है जहां में उसके हैं आमाल उसके साथ । सफ़दर बुरा है ख्वाह भला फिर किसी को क्या ॥ ६९ ॥

बैठ कर मैं न दरे यार पर असला उट्ठा । हां जो उट्ठा तो पसेमर्ग जनाज़ा उट्ठा ॥ उनका उठना था कि बेताब हुआ दिल मेरा । हश्र बरपा हुआ लो और यह फ़ितना उट्ठा ॥ कभी रुख़ के कभी बोसे लबे जानां के लिये । क्या कहूं मैं कि मज़ा वस्ल में क्या क्या उट्ठा ॥ न हुआ कुछ मरज़े इश्क़ का जब उससे इलाज । तंग आकर मेरे नालों से मसीहा उट्ठा ॥ तेरे वहशी ने न दी क़ैस को तालीमे जुनूं । जब तलक कान पकड़ कर न वह बैठ उट्ठा ॥ आतेही गुलशने हस्ती से चले मिस्ले नसीम । एक दम के लिये क्या लुत्फ़े तमाशा उट्ठा ॥ सुनते हैं कूच ज़माने से किया सफ़दर ने । नातवां था न तेरे हिज्र का सदमा उट्ठा ॥ ७० ॥

देखने का तेरे अरमान निकलने न दिया । लाख संभला दिले मुज़तर ने संभलने न दिया ॥ सबसे बढ़ कर है हमें तेरी

नज़ाकत से गिला। दो क़दम साथ जनाज़े के भी चलने न दिया॥ रूह पहिलेही निकल आई मेरे क़ालिब से। म्यान से भी तेरे खंजर को निकलने न दिया॥ ऐ फ़लक सोज़िशे दिल मुअ़जिज़: होती आख़िर। दस्ते मूसा की तरह क्यों इसे जलने न दिया॥ एकही बार में मफ़्दर का हुआ काम तमाम। हौसला खंजरे क़ातिल ने निकलने न दिया॥ ७१॥

खींच कर तेग़ जो आया हुए बिस्मिल क़ातिल। वह अदा की कि क़ज़ा बोल उठी क़ातिल क़ातिल॥ जिस तरफ़ देख लिया लूट लिया मार लिया। आंख रहज़न है तेरे आंख का है तिल क़ातिल॥ कौन है क़ाबिले रहमत कोई पूछेगा अगर। साफ़ महशर में यह कह दूंगा कि क़ातिल क़ातिल॥ ज़बह के वक़्त न इतना दिले बेताब तड़फ। ऐसे सदमों का न होगा मुतहम्मिल क़ातिल॥ मुर्ग़ें बिस्मिल की तरह नज्द में बेताब है क़ैस। होगई क्या निगहे साहबे महमिल क़ातिल॥ क्या तकल्लुफ़ है जो दम भरते हैं बिस्मिल तेरा। बात जब है कि मसीहा कहे क़ातिल क़ातिल॥ लोग दीवाने हैं जो ढूंढ़ रहे हैं अफ़्दर। क़त्ल करके मुझे पहुंचा गये मंज़िल क़ातिल॥ ७२॥

मरते रहे हम ली न ख़बर आके किसी ने। मारा दिले मजरूह को तड़फा के किसी ने॥ क्या साहबे ग़ैरत थे तेरे कुश्तए उल्फ़त। एहसान उठाए न मसीहा के किसी ने॥ अग़यार जो आजायँ तो कुछ मुझसे न कहना। चुपके से कहा यों मुझे समझा के किसी ने॥ ज़ेबा है पसेमर्ग जो हो तूर प मदफ़न। मारा मुझे दीदार से तरसा के किसी ने॥ क्या जानिये किस दामे मुसीबत में फँसाया। दिल काकुले पुरपेच में उलझा के

किसी ने ॥ यारानि अदम भी थे अजब यादःफ़रामोश। रक्खा न हमें याद वहां जाके किसी ने ॥ दो रोज़ भी सफ़दर किसी सूरत नहीं बनती। इस दरजः बिगाड़ा उन्हें समझा के किसी ने ॥ ७३ ॥

शमअ की तरह जलें रश्क से जलनेवाले। उनकी महफ़िल से नहीं हम तो निकलनेवाले ॥ चश्मपोशी है दमे नज़अ मुरव्वत से बईद। देखता जो हमें श्रो आंख बदलने वाले ॥ तेरी फ़ुर्क़त में हज़ार आंख से आंसू निकलें। अपने दिल से नहीं अरमान निकलनेवाले ॥ क़ाफ़िलेवालो अदम जाने में जल्दी क्या है। एक ज़रा ठहरो कि हम भी तो हैं चलनेवाले ॥ नज़र आया कोई माशूक़ जहां लोट गया। नहीं देखे दिले नादां से मचलनेवाले ॥ चार:गर रोके से रुकते हैं कहीं लख्ते जिगर। अश्क बन बन के निकलते हैं निकलनेवाले ॥ मंज़िले इश्क़ में वक़फ़ा है तो इतना सफ़दर। भीड़ में जैसे ठहर जाते हैं चलनेवाले ॥ ७४ ॥

जवानी में बहारे हुस्न सूरत आही जाती है। समर जिस वक़्त गदराता है रंगत आही जाती है ॥ शबाब आया तरक़्क़ी पर तो बोसों की इजाज़त दी। खुदा दौलत जो देता है तो हिम्मत आही जाती है ॥ ग़ज़ब की चीज़ है यह हुस्न इन्सां लाख बचता है। मगर दिल खिंचही जाता है तबीयत आही जाती है ॥ हज़ार अन्दोह फ़ुर्क़त को मैं दिल में ज़ब्त करता हूं। मगर फिर कुछ न कुछ लब पर शिकायत आही जाती है ॥ हिरासां इस क़दर ऐ दिल न हो दूरीए मंज़िल से। अगर हिम्मत जो करता है तो ताक़त आही जाती है ॥ यह देखा है तबीयत के

हमीं कितनेही ठंडे हों। हुए दो चार जब आशिक़ शरारत आही जाती है॥ जब उसकी गरमियां सफ़दर नज़र आती हैं गैरों से। बदन में आग लगती है हरारत आही जाती है॥७५॥

बादए इश्के गुलरुखां हमने पिया जो हो सो हो। शौक़ो सलातो इत्तिक़ा छोड़ दिया जो हो सो हो॥ बाग़ में कोई मस्तेनाज़ सोया है आज बेख़बर। रुख़ से नक़ाब उठा भी दे बादेसबा जो हो सो हो॥ हसरते वस्ल रंजे हिज्र इश्क़े उदू जफ़ाए चर्ख़। एक बुते बेवफ़ा को दिल हमने दिया जो हो सो हो॥ अब तो शबे विसाल में यार से मैं लिपट गया। शोख़ो व ग़मज़ओ अदा शर्मोहया जो हो सो हो॥ मैंने कहा कि जानो दिल हिज्र में बेक़रार हैं। उसने अदाओ नाज़ से हँस के कहा जो हो सो हो॥ अहदे शबाब फ़स्ले गुल मौसिमे नान व नोश है। किसको है फ़िक्रे आक़बत बादे फ़ना जो हो सो हो॥ सफ़दरे ख़स्ता:जां का दिल फिर कहीं मुबतिला हुआ। था जो जुनूं ज़राज़रा फिर वह बढ़ा जो हो सो हो॥ ७६॥

क्या हाल होगया है दिले बेक़रार का। आज़ार हो किसी को इलाही न प्यार का॥ मशहूर है जो रोज़े क़यामत जहान में। पहला पहर है मेरी शबे इन्तज़ार का॥ पत्ते ख़िज़ां में झड़ते हैं जो हर निहाल से। ज़ेवर उतर रहा है अरूसे बहार का॥ दुश्मन से दिल मेरा न मुकद्दर हुआ कभी। इस आइने ने मुंह नहीं देखा गुबार का॥ इमसाल देखना मेरी वहशत के वलवले। आया है धूमधाम से मौसिम बहार का॥ राह उनकी तकते तकते ये मुद्दत गुज़र गई। आंखों को हौसला न रहा इन्तज़ार का॥ गुस्ताख़ियों से यार को आज़ुर्द: कर दिया।

सफ़दर बुरा हो मेरे दिलि बेक़रार का ॥ ७७ ॥

गया मैं छिपके उस महफ़िल में लाग़र हो तो ऐसा हो। न देखा मुझको दरबां ने मुक़द्दर हो तो ऐसा हो॥ हमारे दिल से मुंह फेरा न उस ग़मख़ोर अब्रू से। बहादुर हो तो ऐसा हो दिलावर हो तो ऐसा हो॥ मये उरफ़ां से दम भर चश्मो दिल ख़ाली नहीं होते। जो शीशा हो तो ऐसा हो जो साग़र हो तो ऐसा हो॥ क़ज़ा बोली जो ज़ेरे तेग़ क़ातिल सर झुका मेरा। नमाज़ी मरते दम अल्लाहो अकबर हो तो ऐसा हो॥ तड़फने से हमारे कोह पानी हो गये लाखों। पसीजा दिल न उस क़ातिल का पत्थर हो तो ऐसा हो॥ तेरा बिस्मिल हुबाब आसा जो गुज़रा बहरे हस्ती से। क़ज़ा बोली कि क्या कहना शनावर हो तो ऐसा हो॥ ख़ुदा ने हमको सफ़दर दिल दिया और दिल को उल्फ़त दी। करम कहते हैं इसको बन्दःपरवर हो तो ऐसा हो॥ ७८॥

लगाया है दिल उसकी ज़ुल्फ़े रसा से। अगर जान जाए तो जाए बला से॥ मेरा हाल सुन कर कहा किस अदा से। मरे या जिए कोई मेरी बला से॥ तड़प वस्ल में हिज्र से भी है दूनी। मेरा दर्द दिल बढ़ गया इस दवा से॥ रसाई अगर अर्श तक मेरी होनी। उसी बुत का सायल मैं होता ख़ुदा से॥ लगावट तेरी ख़ूब मैं जानता हूं। मेरी जान लेगी ये झूठे दिलासे॥ सितम है हिजाब उनका हम्माम बोसा। नहीं कहके मुंह फेर लेना अदा से॥ ग़ज़ब है ये बीमारिए इश्क़ सफ़दर। न सेहत दवा से न हासिल दुआ से॥ ७९॥

अजब चाल चलते हो आदत नई है। यह मशहूर नया

है क़यामत नई है ॥ तकल्लुफ़ भी एक रोज़ जाता रहेगा। अभी उनसे साहब सलामत नई है ॥ मेरे घर प आ आ के उलटे फिर जाना। फिर उलटा तकद्दुर कदूरत नई है ॥ हरम से हुए बुतकद: आके देखा। वहां से यहां कुछ तो सूरत नई है ॥ कभी यादे गेसू कभी यादे क़ामत। व ताज: बला यह क़यामत नई है ॥ क़दीमी हूं मैं क़ैदिए दामे गेसू। न सौदा नया है न वहशत नई है ॥ ज़माने में जीते हैं सब दिल लगा कर। तुमारी ही सफ़दर मुहब्बत नई है ॥ ८० ॥

वस्ल का अाज उस परी से होके सामां रह गया। शर्म तेरा हो बुरा दोनों को अरमां रहगया ॥ उठते उठते नाज़ुकी से दस्ते जानां रह गया। मुझको हसरत रह गई क़ातिल को अरमां रह गया ॥ एक मेरे क़त्ल मे दो बोझ रक्खे 'दो तरफ़। तेरे सर पर खून मेरे सर पर एहसां रह गया ॥ दर्दो ग़म रंजो अलम से कब रहा ख़ाली ये दिल। चार दिन कोई न कोई इसमें मेहमां रह गया ॥ और तो सब हसरतें निकलीं तहे शमशीरे नाज़। पर तड़फने लोटने का दिल में अरमां रह गया ॥ आदमी रहता नहीं दुनियां में रहता है निशान। ज़िक्रे जम बाक़ी रहा नामे सुलेमा रह गया ॥ हम रहे सफ़दर क़फ़स में हो चुकी फ़स्ले बहार। हसरते गुल रह गई शौक़े गुलिस्तां रह गया ॥ ८१ ॥

लिए फिरता है मुझको जा बजा दिल। मेरा बेचैन मेरा चुलबुला दिल ॥ मिलाया ख़ाक में क्यों इसको तूने। बहुत नाज़ों का पाला था मेरा दिल ॥ हज़ारों हसरतों का खून होगा। अरे ज़ालिम न मिट्टी में मिला दिल ॥ उठाता क्यों बुतों के नाज़ बेजा। अगर होता मेरे बस में मेरा दिल ॥ अदाओ

बाग़े जानां की लुटाई । गया दिल हाय वे मेरे गया दिल ॥ मिला रोज़े अज़ल आलम को सब कुछ । हमें अफ़्सुरदः इक मिला दिल ॥ हमारा भी कभी तू आश्ना था । अरे ओ बेमुरव्वत बेवफ़ा दिल ॥ गली से उनकी घर तक आते आते । अजब कर सौ जगह रह रह गया दिल ॥ खुशी हो ग़म हो कुछ हो हमने सफ़दर । बस अब तो इक सनम को दे दिया दिल ॥ ८२ ॥

परीरू आदमी का दिल न हो किस तरह दीवाना । तेरी बहकी हुई बातें तेरी चालें हैं मस्ताना ॥ अरे मू फ़र्क़ कुछ इसमें नहीं तशबीह कामिल है । किसी ज़ुल्फ़े परीशां का दिले सदचाक है शाना ॥ बदलता है मेरा दिल रंग क्या क्या इश्क़ बाज़ी में । कभी बुलबुल है गुलशन में कभी महफ़िल में परवाना ॥ सना लैली की अब तक हर तरफ़ आवाज़ आती है । मुरक़्क़ा आलमे वहदत का है मजनूं का वीराना ॥ खिंचा है ख़ञ्जरे क़ातिल तो अपना सर भी हाज़िर है । वहां तेग़ आज़माई है यहां हिम्मत है मरदाना ॥ हज़ारों दर्द हसरत यासो अरमां दिल में मेहमां हैं । कहां उट्ठें कहां बैठें ज़रासा है ये काशाना ॥ जवानांने चमन अपना न समझे आज तक मुझको । रहा बाग़े जहां में मिस्ल सब्ज़ः सबसे बेगाना ॥ ग़रज़ तूबा व कौसर से न परवा हमो जन्नत की । वो मीना हो वो साग़र हो वो साक़ी हो वो मैख़ाना ॥ दिले अग़ियार को सफ़दर हमारे दिल से क्या निसबत । ये मसजिद है वो मैख़ाना ये काबः है वो बुत-ख़ाना ॥ ८३ ॥

सौदा करेंगे दिल का किसी दिलरुबा के हाथ । इस

बावफ़ा को बेचेंगे एक बेवफ़ा के हाथ ॥ शिकवों का कुछ जवाब जब उनसे न बन पड़ा। गर्दन में मेरे डाल दिये मुसकिरा के हाथ ॥ दो दो क़दम वह रक्स में चलना किसी का हाय। दामन पकड़ के पावँ बढ़ा कर उठा के हाथ ॥ घूंघट उलट के उसने शबे वस्ल ये कहा। कुछ बिक नहीं गये मेरे दुश्मन हया के हाथ ॥ सुनतेही नामे वस्ल वह पहलू से उठ गये। झुंझला के तेश खा के बिगड़ कर छुड़ा के हाथ ॥ बिजली चमक के रह गई आंखों के सामने। मुंह पर किसी ने रख लिये जब मुसकिरा के हाथ ॥ इतना रहे लिहाज़ कि रुसवा न हो कोई। है आशिक़ोंकी शर्म तुम्हारी हया के हाथ ॥ मक़तल में आज जमअ हैं सामां नये नये। शमशीरे नाज़ गरदने बिस्मिल कज़ा के हाथ ॥ सफ़दर है ख़ौफ़ क्या मुझे रोज़े हिसाब का। है शर्म मेरी दावर रोजे जज़ा के हाथ ॥ ८४ ॥

फुर्क़त में सताती है शबेतार किसी को। दिखला दो ज़रा चांदसा रुखसार किसी को ॥ शिकवों प मेरे हाय यह उस शोख़ का कहना। माशूक़ भी मिलता है वफ़ादार किसी को ॥ कुछ दिल से जो कहता हूं तो कह देता हूं यह भी। करना न ख़बर इसकी ख़बरदार किसी को ॥ अहबाब ने की मेरी सिफ़ारिश तो वो बोले। दुश्मन मेरे क्या करने लगे प्यार किसी को ॥ बालीं प मेरे कहते हैं घबरा के मसीहा। इस दर्द का देखा नहीं बीमार किसी को ॥ आग़ोश में खींचा तो कहा उसने बिगड़ कर। इस तरह भी करता है कोई प्यार किसी को ॥ बेचैन हैं बेसब्र हैं बेताब हैं सफ़दर। देखा है मुकर्रर सरे बाज़ार किसी को ॥ ८५ ॥

हम होंगे न तुझे रखे जानानः रहेगा। आलम में मगर इश्क़ का अफ़सानः रहेगा॥ शब भर फ़क़त आराइशे महफ़िल है शिहर को। यह शमअ रहेगी न यह परवानः रहेगा॥ मस्जिद की तरफ़ जाते हैं तो जायँ नमाज़ी। बन्दा तो मुक़ीमे दरे मैख़ानः रहेगा॥ रस्ते में अगर कोई परीरू नज़र आया। क़ाबू में न अपना दिले दीवानः रहेगा॥ जब तक कि न हाथ आयेगी वह ज़ुल्फ़े मुसलसल। सदचाक दिल अपना सिफ़तेशानः रहेगा॥ सर खंजरे क़ातिल से जो कट जाय तो कट जाय। शोहरा तेरा ऐ हिम्मते मर्दानः रहेगा॥ दो रोज़ फ़क़त दौरे मये ऐश है सफ़दर। यह शीशा रहेगा न यह पैमानः रहेगा॥ ८६॥

ख़ाले आरिज़ किसे प्यारा न हुआ। किसकी आंखों का सितारा न हुआ॥ होगया दिल तो उन्हीं का जानिब। यह भी कम्बख़्त हमारा न हुआ॥ वस्ल का ज़िक्र तो क्या क़ातिल को। क़त्ल करना भी गवारा न हुआ॥ यार आया न अजल फ़ुरक़त में। एक मतलब भी हमारा न हुआ॥ हाय वह ख़ाले रुख़े माहजबीं। मेरी क़िस्मत का सितारा न हुआ॥ ग़ैर का दिल न दुखाया हमने। रंजे दुश्मन भी गवारा न हुआ॥ हो रहे तुम तो उसी के सफ़दर। वह न होना था तुम्हारा न हुआ॥ ८७॥

अब रहा कौन आशना मेरा। दिल भी मुझसे जुदा हुआ मेरा॥ हर निगह में हैं सैकड़ों अरमान। कोई देखे तो देखना मेरा॥ मुतरद्दुद है दिल कहूं न कहूं। पूछते हैं वो मुद्दआ मेरा॥ लिये जाते हो तुम कहां दिल को। है यह मुद्दत का आशना मेरा॥ उस सितमगर से दिल लगाया है। कोई देखे तो

होसला मेरा ॥ पास तुमको अगर नहीं तो न हो। अब बुतो क्या खुदा नहीं मेरा ॥ अब बहार आई बाग़ में सफ़दर। अब्बी दिल होगया हरा मेरा ॥ ८८ ॥

दिले सदचाक अपना जब किसी गेसू का शाना था। वो दिन क्या खूब थे यारब वो क्या अच्छा ज़माना था ॥ उसी की शक्ल देखी हर तरह जब सैरे गुलशन की। हर एक पत्ता था आईना चमन आईनःखाना था ॥ निकाले भी न थे बालो पर अपने तायरे दिल ने। कि तेरा ज़ुल्म चर्खे सिफ़्ल: परवर का निशाना था ॥ अबस चीबरजबीं हो तुम हमारा हाले दिल सुन कर। न थी आज़ुर्दगी की बात शिकवा दोस्ताना था ॥ कभी गुलशन में रहते थे क़फ़स में अब गुज़रती है। खता सैयाद की क्या है हमारा आबोदाना था ॥ मुक़द्दर देखना हम पर हुई नींद और भी ग़ालिब। सिहर को क़ाफ़ला जिस वक़्त मंज़िल से रवाना था ॥ परीरू किस तरह गाते न खुश हो हो के अय सफ़दर। हुआ जो शेर मौज़ूं इस ग़ज़ल में आशक़ाना था ॥ ८९ ॥

हमेशः मुझको हसरत से सितमगर याद करते हैं। तअस्सुफ़ खूने नाहक़ का मेरे जल्लाद करते हैं ॥ सनम का ज़िक्र करते हैं न हक़ को याद करते हैं। हम इस अमरू व रोज़े को अबस बरबाद करते हैं ॥ ठहर जा कोई साअत और अय तेग़े क़ज़ा हम ले। अभी बिस्मिल तमाशाए रुख़े जल्लाद करते हैं ॥ हुई है तर्क मैख्वारी मगर कुछ रब्त बाक़ी है। सुराही हिचकियां लेती है जब हम याद करते हैं ॥ चहकना हमसफ़ीराने चमन सब भूले जाते हैं। तड़प कर जब असीराने क़फ़स फ़रयाद करते हैं ॥ सवाले वस्ल पर लाज़िम नहीं हैं गालियां देनी। हमारी

अर्ज़ क्या है आप क्या इरशाद करते हैं ॥ सिहर को तायराने खुशनवा किस किस फ़साहत से । सनाए बागबाने गुलशने ईजाद करते हैं ॥ तसव्वुर आज कल फिर दिल में आया खूबरूयों का। फिर इस उजडी हुई बस्ती को हम आबाद करते हैं ॥ यह किस महबूब की तस्वीर है आईनए दिल में । कि सफ़दर रश्क जिसमे मानियो बेहज़ाद करते हैं ॥ ८० ॥

कमसिन हैं आइना अभी पेशे नज़र नहीं । क्या लें मेरी खबर उन्हें अपनी खबर नहीं ॥ हमदम कहां रफीक़ कहां हिज्रे यार में । पहलूनशीं सिवाय दिले नौहःगर नहीं ॥ लेता हूं एक गाली के बोसे जो चार पांच । किस नाज़ से वह कहते हैं बस अब इधर नहीं ॥ उठ उठ के मेरे दिल को करें आप पायमाल । मैं देखूं बैठे बैठे यह मेरा जिगर नहीं ॥ सौदाय ज़ुल्फ़े यार में कहता हूं रात भर । यह वह शबे फ़िराक़ है जिसको सिहर नहीं ॥ मिलती नहीं है आंख भी बोसे का ज़िक्र क्या । अगली सी वह हुज़ूर की हम पर नज़र नहीं ॥ सफ़दर कहीं छिपाये से छिपता है दर्दे दिल । बेताब क्यों हैं आप मुहब्बत अगर नहीं ॥ ८१ ॥

कोई बात मुंह से निकल गई जो खिलाफ़े वस्लते यार में। तो यह उज्र उनसे करूंगा मैं कि जुनूं है मझको बहार में ॥ मेरे दिल को कुछ है नई फ़ुग़ां अलमसे जुदाइये यार में। न असर के नाले में दर्दिय: न असर ये मौते हज़ार में ॥ वो खड़े हुए हैं सरे लहद मेरे अक़रबा से कहे कोई। उन्हें और देख लूं कोई दम अभी तख्ते दें न मज़ार में ॥ चमने जहां में मैं फिर चुका नहीं तुमसा गुल कोई दूसरा। फ़क़त एक बुलबुले जार क्या

जो कहो तो कहदूं हज़ार में ॥ दमे वस्ल बस कि लिहाज़ था न ज़बां से कुछ भी मुझे कहा। मगर आंखें शर्म से बन्द कीं गई सूझी बोसों किनार में ॥ तेरे लुत्फ़ हद से कहीं सिवा मेरे जुर्म को नहीं इन्तिहा। न वो आ सकेंगे हिसाब में न यह आ सकेंगे शुमार में ॥ न वो नाज़ उठाने के हौसले न वो सफ़दर अपने हैं वलवले। नहीं ताक़त अब दिले ज़ार में नहीं ताब जाने निसार में ॥ ८२ ॥

सख्त बीमार दर्दे फुर्क़त हूं। आइये जल्द बरन: रुख़सत हूं ॥ साफ़ बातिन हूं पाक तीनत हूं। शक्ले आईन: बे कदूरत हूं ॥ जान तक भी निसार कर दूंगा। ग़म न कर गम जो मैं सलामत हूं ॥ मिस्ले सब्ज़: रियाज़े आलम हूं। पायमाले हजूमे ग़फ़लत हूं ॥ दौरे साग़र है इस तरफ़ भी ज़रूर। साक़िया लायक़े इनायत हूं ॥ रंजे फुरक़त से दे नजात मुझे। मौत का मैं रहीने मिन्नत हूं ॥ इश्क़ मुझपर तमाम है सफ़दर। पैरवे ख़ातिमे रिसालत हूं ॥ ८३ ॥

क़फ़स पर फूल रखने से सितमईजाद क्या हासिल। गिरफ़्तारों के तड़फाने से अय सैयाद क्या हासिल ॥ खिज़ां आई चमन में ख़ाक ऐ सैयाद उड़ती है। क़फ़स से अब जो करता है मुझे आज़ाद क्या हासिल ॥ शिकायत दौरे अंजुम की भला कब चर्ख़ सुनता है। बरहमन से बुतों की हम करें फ़रयाद क्या हासिल ॥ तहे खंजर जो कहता हूं उठा रुख़ से ज़रा परदा। तो किस अग़माज़ से कहता है वह जल्लाद क्या हासिल ॥ कोई सुनता नहीं बेदर्द हैं सब क़ाफ़लेवाले। कहो सफ़दर जरस से बे असर फ़रयाद क्या हासिल ॥ ८४ ॥

बदलता है सफ़हर कुछ ऐसा ज़माना। कि है श्राज इसका कल उसका ज़माना॥ हुवावे बहर जो थे हम इस चमन में। खुली आंख अपनी तो गुज़रा ज़माना॥ लड़कपन था जब तक न थे फ़िक्र कोई। बहुत याद आता है पिछला ज़माना॥ बहुत मिह्रबां था वो बेमिह्र मुझपर। हुआ है अभी इसको थोड़ा ज़माना॥ कभी दश्ते गुलशन कभी बाग़े सहरा। दिखाता है नैरंग क्या क्या ज़माना॥ जो है क़त्ल महेनज़र सर है हाज़िर। मगर यह कहो क्या कहेगा ज़माना॥ हुआ वस्ल उससे जुदाई थी जिससे। है इन रोज़ों मफ़्दर तुम्हारा ज़माना॥ ९५॥

न छेड़ो हमें दिल दुखाए हुए हैं। जुदाई का सदमा उ-ठाए हुए हैं॥ जो अश्क आंख में डबडबाए हुए हैं। जिगर पर कड़ी चोट खाए हैं॥ बुतों ने जलाया हमे ग़मासुरत। खुदा से बस अब लौ लगाए हुए हैं॥ भला क़त्ल के वक़्त तड़पूं मैं क्योंकर। वह जानू से सीना दबाए हैं॥ न दे इस क़दर कुछ तकलीफ़ हमको। तेरे घर में मेहमान आए हुए॥ हैं श-हीदों की लाशों पे बोला वह क़ातिल। ये सब खून में क्यों नहाए हुए हैं॥ मिला वक़्त का कुछ न सिकवा फ़लक से। दिले ग़-मज़दः के सताए हुए हैं॥ हया वस्ल में भी नहीं जाती उनकी। दुपट्टे से मुंह को छिपाए हुए हैं॥ हमें क़त्ल करके भी तेवर न बदले। अभी तक वो त्युरी चढ़ाए हुए हैं॥ जो आजाया मुश्किल तो घबरा न रंगीं। अली बहरे इमदाद आए हुए हैं॥ ९६॥

तकल्लुफ़ नहीं हमसे ज़ेबा तुम्हारा। तुम्हारा हमारा हमारा तुम्हरा॥ लिया दिल तो लो जान भी क्यों रहेगी। तमन्ना ह-मारी तक़ाज़ा॥ ये तस्वीर चेहरा उतर क्यों गया है। खिंचे

किसी को क्या है नक़शा तुम्हारा ॥ न तीर आह का दस्ते कुदरत में अपने। न शमशीरे अबरू पै क़बज़ा तुम्हारा ॥ चले हम तो हसरतको लेकर रक़ीबो। मुबारक रहे तुमको प्यारा तुम्हारा ॥ रक़ीबों से लड़ने का क़िस्सा न पूछो। फज़ीहत हमारी तमाशा तुम्हारा ॥ मैं अपनेही जज़बे का क़ायल था लेकिन। ग़ज़ब है मेरी जान गुस्सा तुम्हारा ॥ मुझे और से क्या मैं आ-शिक़ हूं प्यारे। तुम्हारा तुम्हारा तुम्हारा तुम्हारा ॥ ख़फ़ा होते क्यों हो कि बकते हो प्यारे। न जज़बा हमारा न जलवा तु-म्हारा ॥ नसीम इस चमन में गुलेतर की सूरत फटे कपड़े र-खते हैं परदा तुम्हारा ॥९७॥

ठोकर लगा के ख़्वाब से बेदार कर चले। सोते हुए नसीब को हुशियार कर चले ॥ चितवन वो बर्क़ थी कि निशाना मैं होगया। तीरे निगाह दिल से मेरे पार कर चले ॥ ले अब नसीब सोहबते अग़ियार हो तुझे। नज़्ज़ारा तेरे हुस्न का ही यार कर चले ॥ लेकर चने हैं बाे गुनह बाग़े देह्र से। क्या ख़ूब सैर हस्ती भी गुलज़ार कर चले ॥ दर तक रसाई यार की अपनी मुहाल है। चौखट का उसकी दूर से दीदार कर चले ॥ अबरू व चश्मो ग़मज़ओ अन्दाज़ो नाज़ से। दम भर को आए अपने मगर वार कर चले ॥ रंजो ग़मो फ़िराक़ो अलम क्यों दरदो साज़। इतनों को एक दिल का ख़रीदार कर चले ॥ क़ातिल को याद क़त्ल दिया तन ने यह जवाब। सद शुक्र आज हमको सुबकसार कर चले ॥ दर पर तुम्हारे सुबह से आलम ने शाम की। ये शाहे हुस्न आप का दीदार कर चले ॥ ९८ ॥

दाग़े जुनूं ने फिर किये सामां नए नए। फुरक़त छाने बियाबां नए नए॥ सौदाय जुल्फ़ जब से हुवी मुझे सनम। मैं देखता हूं ख्वाबे परेशां नए नए॥ जुनूं का हाल ये पहुंचा है नासेहा। होते हैं रोज़ चाक गरेबां नए नए॥ बनती नहीं है कोई भी तदबीरे वस्ले यार। हरचन्द रोज़ करता हूं सामां नए नए॥ दर तक तुम्हारे आने नहीं देते हैं मुझे। बिठलाए खूब आपने दरबां नए नए॥ बे शर्बते विसाल के मुमकिन नहीं शिफ़ा। आलम अगरचे लाख हों दरमा नए नए॥ ९९॥

गज़ले अम्बिकादत्त व्यास तखल्लुस प्रेम।

सांवले प्यारे मुझे सूरत दिखाता क्यों नहीं। दिल धड़कता है मुझे धीरज धराता क्यों नहीं॥ तूने अर्जुन को सुनाई रथ प गीता बैठ कर। एक भी मुझको बचन अपना सुनाता क्यों नहीं॥ जंगली भालू औ बन्दर से भी की थी दोस्ती। वैसेही भी क़िसमतवर बनाता क्यों नहीं॥ तुझको चश्मों पर रखूंगा औ न छोड़ूंगा कभी। मुझको तू एक बेर प्यारे आज़माता क्यों नहीं॥ क्या बजाता फिरता है पेड़ों में बंसी यार तू। सामने मेरे कभी आकर बजाता क्यों नहीं॥ गिड़गिड़ाता हूं मैं इतना पर तू कुछ सुनता नहीं। दीनबंधु बना है क्यों निरदै कहाता क्यों नहीं॥ बाने के आगे तेरे ताना तनेगा क्या मेरा। पै तुही तानों से कुछ मेरा बनाता क्यों नहीं॥ ज़िन्दगी का क्या ठिकाना मिलना हो तो आन मिल। गर नहीं तो लेके खंजर मार जाता क्यों नहीं॥ प्रेम को तुझको क़सम है गर न मिलना हो तुझे। तो तू अपना हाल मुझसे कहके जाता क्यों नहीं॥१००॥ इति

हरिप्रकाश यंत्रालय

हो कि यह यंत्रालय सन १८७५ में स्थापित हुआ आज पचीस वर्ष से इसमें जिस तरह के काम छापे हैं वह उन लोगों पर विदित हैं कि जिन्होंने यहां से कुछ छपवाया है या कि यहां की छपी पुस्तकों को देखा है। सिवाय इसके इधर कुछ दिनों से इस कारखाने में ग्राहकों को प्रसन्न करने के लिये अनेक प्रकार के नये, खूबसूरत और उमदा उमदा सामान मंगवाये गये हैं जैसे कि—

बम्बई के ढले अक्षरों में जो जो अक्षर देखने में सुन्दर और सुडौल हैं उन में कई तरह के बड़े से बड़े और छोटे से छोटे अक्षर, योंही कलकतिया छोटे बड़े अक्षर, बार्डर अर्थात एक से एक उमदा फूल पत्तियां हरदिल पसन्द मौजूद हैं। योंही तरह तरह की मूर्त्ती और तसवीरों के ढांचे फूल वगैरह सब चीजें उमदा और नई हैं अङ्गरेजी के अनेक प्रकार के अक्षर भी हैं। इन सब के नमूनों की किताब बनी तैयार है जिन साहेबों को देखना हो मंगवा के देखलें और छपवाई का भाव पूछ लें।

सिवाय इसके जो लोग अपनी किताबें या मजमून यहां छपवावें और उसके शोधने का जिम्मा भी दे दें उनका काम पूरे तौर से कर दिया जाता है। इसके लिये इतना ही कह देना बहुत है कि जो किताबें या अखबार यहां छपे हैं या छप रहे हैं वही इस कहने की सबूत देंगे। काम बड़ी सावधानी से ठीक वक्त पर कर दिया जाता है यह काम करवानेही से मालूम हो सकता है अधिक क्या कहें।

अमीर सिंह मालिक
हरिप्रकाश यन्त्रालय
नं० १ नैपाली खपरा
बनारस सिटी।

गाने और कविता की पुस्तकों की सू

नित्यकुसुमाकरोद्यान ।

अर्थात्

चमनिस्तानेहमेशःबहार ।

चतुर्थ भाग ।

इस हिस्से में आपस की मुहब्बतनामा अर्थात् प्रेम के पत्रव्यवहार के निमित्त अशआर, दोहे, सोरठे, बरवै, कवित्त, सवैये और श्लोक जिन्हें कि सर्वसाधारण अपनी २ इच्छानुसार लिख सकें क़रीब ५०० के रक्खे गये हैं ।

अनेक कवियों के उत्तम २ ग्रंथों से संग्रह करके अमीरसिंह ने निज हरिप्रकाश यन्त्रालय में चौथी बार मुद्रित किया ।

बनारस

हरिप्रकाश यन्त्रालय में मुद्रित हुआ ।

चौथी बार १०००]　　[दाम ।)

निख कुसुमाकरोद्यान।

अर्थात्

चमनिस्तानेहमेशःबहार।

चतुर्थ भाग।

अशआर।

इश्क़ के मकतब में मेरी आज बिस्मिल्लाह है।
मुंह से कहता हूं अलिफ़ दिल से निकलती आह है॥ १॥
अदम की सैर की दुनिया में आये एक जहां देखा।
खुदा शाहिद है ओ बुत तुझसा यां देखा न वां देखा॥ २॥
दरो दिवार प हसरत से नज़र करते हैं।
ख़ुशरहो अहले वतन् अब तो सफ़र करते हैं॥ ३॥
खुशी से रहना मेरे मेहरबां जहां रहना।
न मिलना हमसे मगर दिल से आशनां रहना॥ ४॥
वह भी होगा कोइ उम्मीद बर आई जिस्की।
अपने मतलब तो न इस चर्खे कोहन से निकले॥ ५॥
दिल में आता है लिखूं तुमको कुछ अपना रोना।
पर करूं क्या कि नहीं रोने से फ़ुरसत मिलती॥ ६॥
क्या नविश्ता हैं कि क़ासिद भी मिला तो ऐसा।
न तो पहिचानता है और न घर जानता है॥ ७॥
हम नहीं कहते हमारा ज़ख्म कारी देखिये।
खंजरे मिजगां की अपने आबदारी देखिये॥ ८॥

जो किया तुमने वो बेहतर मेरे महबूब किया।
और जो चाहो करो जो कि किया ख़ूब किया ॥ ९ ॥
अच्छा जो ख़फ़ा हमसे हो तुम ए सनम अच्छा।
लो हम भी न बोलेंगे ख़ुदा की क़सम अच्छा ॥ १० ॥
गाली सही व नाज़ सही झिड़कियां सही।
यह सब सही प एक नहीं की नहीं सही ॥ ११ ॥
न आया चर्ख़ को कुछ और गर आया तो यह आया।
घटाना वस्ल की शब का बढ़ाना रोज़ि हिजरां का ॥ १२ ॥
क्यों ख़फ़ा रहने हर होता है।
आदमी से क़ुसूर होता है ॥ १३ ॥
एक जा रहते नहीं आशिक़े बदनाम कहीं।
दिन कहीं रात कहीं सुबह कहीं शाम कहीं ॥ १४ ॥
होते हैं रातो दिन इसी उम्मीद में बसर।
अब आते होंगे अब नहीं आए अब आएँगे ॥ १५ ॥
मुझे ग़ैर से क्या मैं आशिक़ हूं प्यारे।
तुम्हारा तुम्हारा तुम्हारा तुम्हारा ॥ १६ ॥
कांटों में न हो अगर उलझना
थोड़ा लिक्खा बहुत समझना ॥ १७ ॥
फिर ख़त की न हो उमैदवारी।
मशकूर है क़लम की दोस्तदारी ॥ १८ ॥
सीमाब ख़ाक होवे तो मिस को तिला करे।
दिल ख़ाक हो किसी का तो क्या जाने क्या करे ॥ १९ ॥
तुम्हारे घर प क्या आएँ तुम्हारे पास क्या बैठें।
न ग़म्माज़ी हमें आती है न जासूसी आती है ॥ २० ॥

क़फ़र उस जा गुज़र होता है जब ऐसेही लोगों का ।
कि जिनको चापलूसी और कानाफूसी आती है ॥ २१ ॥

यह तो हम कहते नहीं आपसे आया कीजे ।
शक्ल तो बह्रे ख़ुदा अपनी दिखाया कीजे ॥ २२ ॥

ख़ूबरू लाख जहां में कोई हुशियार बने ।
पर तुझे देखे तो तिनके सरे बाज़ार चुने ॥ २३ ॥

समझे वही अन्दाज़ मेरे तर्ज़े सुख़न का ।
नारा ही सुना जिसने कभी मुर्ग़े चमन का ॥ २४ ॥

न पांव तोड़ता क़ासिद के गर यक़ीं होता ।
जवाब साफ़ मिलेगा जवाब के बदले ॥ २५ ॥

तुम हो दिलशाद तुम्हें अंजुमन आराई है ।
हम हैं और रंज है और गोशए तनहाई है ॥ २६ ॥

ज़ब्त नालों को करूं हरदम कि रोकूं आह को ।
मुझसे अब छिपती नहीं कब तक छिपाऊं चाह को ॥ २७ ॥

अखूं ख़बर को ये जी में न दिलरुबा आई ।
हज़ार हैफ़ न आये तुम और क़ज़ा आई ॥ २८ ॥

अपने बन्दे पर जो कुछ चाहो व बेदाद करो ।
यह न आजाय कहीं जी में कि आज़ाद करो ॥ २९ ॥

न सता दर प पड़ा रहने दे क्या लेते हैं ।
अय शहे हुस्न फ़क़ीरों को दुआ लेते हैं ॥ ३० ॥

दिले शिकस्तः मेरा फेर दो मैं बाज़ आया ।
फ़क़ीर भीख से गुज़रा य ठीकरा मिल जाय ॥ ३१ ॥

मिले अबकी तो यह उस दिलबरे क़ातिल से कहना है ।
बस एकदम के लिये देदो हमें कुछ दिल से कहना है ॥ ३२ ॥

फ़ुरक़त की शब में ऐसी मुझसे खटक गई है।
आंखों में मेरे आते कुछ नींद चौंकती है॥ ३३॥
है गुमां तेरा किधर किस वस्री नादानी में है।
पेश आती है वही जो कुछ कि पेशानी में है॥ ३४॥
चाक जो तक़दीर के हरगिज़ नहीं मुमकिन रफ़ू।
सोज़ने तद्बीर सारी उम्र गो सीती रहे॥ ३५॥
आपका यह जो हाल ऐसा है।
ख़ैर तो है मिज़ाज कैसा है॥ ३६॥
इस ज़ीस्त से बेहतर है अब मौत प दिल धरिये।
जल बुझिये कहीं जाकर या डूब कहीं मरिये॥ ३७॥
हम न थे वाक़िफ़ कि उल्फ़त की ये रस्मो राह है।
रश्क लाज़िम है कि ज़ालिम अपनी पहिली चाह है॥ ३८॥
तेरे जाने से यह सद्मा हुआ गुलहाय गुलशनपर।
गले रख रख दिये गुंचों ने तेग़े बर्गे सौसन पर॥ ३९॥
होके कुश्तां मैं शहीदों में सितमगर मिलता।
ईद होती जो गले से तेरा खंजर मिलता॥ ४०॥
अश्क ऐ दीदए तर हिज्र में जारी रखना।
आबरू बज़्मे मुहब्बत में हमारी रखना॥ ४१॥
हम अश्क बज़्म में मुंह पर बहाये बैठे हैं।
य सूझता नहीं अपने पराये बैठे हैं॥ ४२॥
य मुंह कहां तेरे आगे जो अर्ज़ हाल करें।
मजाल है नहीं जुम्बिश लबे सवाल करें॥ ४३॥
मेरी गर्दन भी है और तेग़ भी जल्लाद की है।
मौत की देर है या आपके इरशाद की है॥ ४४॥

इसलिये नाम नहीं लेते कि सुन ले न कोई।
दिलही दिल में तुम्हें हम याद किया करते हैं ॥ ४५ ॥
उल्फ़त का नशा अब कोई मर जाए तो जाए।
यह दर्देसर ऐसा है कि सर जाए तो जाए ॥ ४६ ॥
दूर हो हरचन्द पर वह जज़्बए दिल है यहां।
हम अगर चाहें अभी तुम दौड़े आओ डाक में ॥ ४७ ॥
तेरे मैंदे मुहब्बत हो चुके हम।
करे तू जब्ह ऐ प्यारे कि छोड़े ॥ ४८ ॥
उड़ाता है जो सर तेगे सितम से तू मेरा नाहक़।
सितमगर क्या मुहब्बत आज़माई यों भी होती है ॥ ४९ ॥
अपनी कहते हो मेरी सुन्ते नहीं।
क़िस्सा मेरे आपके क्योंकर चुके ॥ ५० ॥
किस प फिर नाज़ मुहलका करते।
दिल न देते तो आप क्या करते ॥ ५१ ॥
कुछ कशिश ने तेरी असर न किया।
तुझको अय इन्तिज़ार देख लिया ॥ ५२ ॥
गरेबां चाक मुंह पर ख़ाक आंखों में भरे आंसू।
चले इस शक्ल से थे आज हम सैरे गुलिस्तां को ॥ ५३ ॥
दिल पर लगा उलट के दहन तीरे आह का।
जब याद आगया तेरा पलटा निगाह का ॥ ५४ ॥
चश्मे फ़ैयाज़ से हमको भी इशारा हो जाय।
नाम हो आपका और काम हमारा हो जाय ॥ ५५ ॥
हाय किस बेवफ़ा से आंख लगी।
न लगी आंख जबसे आंख लगी ॥ ५६ ॥

आओ दम भर के लिये दम है लबों पर प्यारे।
बात रह जाएगी और वक़्त निकल जाएगा ॥ ५७ ॥
वादए वस्ल अगर आज भी टल जाएगा।
दिल मेरा और के पहलू से निकल जाएगा ॥ ५८ ॥
जला जो न दिल मुफ़्त लेकर किसी का।
कहा भी तो मान ऐ सितमगर किसी का ॥ ५९ ॥
न हरगिज़ दर्दे दिल से मैं कराहा।
गरज़ पोशीदः उल्फ़त को निबाहा ॥ ६० ॥
ए सङ्गदिलो दिल तो यहाँ चूर चूर है।
पत्थर से आइने को बचाना ज़रूर है ॥ ६१ ॥
खुद ब खुद जी मेरा उदास नहीं।
दिल्लगी जिससे थी वो पास नहीं ॥ ६२ ॥
तू नहीं भूलता जहाँ जाऊं।
हाय मैं क्या करूं कहाँ जाऊं ॥ ६३ ॥
बरसों हुए सुनी नहीं तक़रीर आपकी।
देखी नहीं महीनों से तहरीर आपकी ॥ ६४ ॥
हर सखुन के साथ लब पर नालए जांकाह है।
तेरी फुरक़त में सखुनतकिया हमारा आह है ॥ ६५ ॥
आंखों के वास्ते तेरी तहरीर चाहिये।
कानों के वास्ते तेरी तक़रीर चाहिये ॥ ६६ ॥
आगई मौत शबे हिज्र में हैहात मुझे।
अब कहाँ यार से उम्मेदे मुलाक़ात मुझे ॥ ६७ ॥
कभी नाला कभी गिरियः कभी वहशत कभी ग़श।
क्याही ओ इश्क़ किया तूने खुश औक़ात मुझे ॥ ६८ ॥

पहरोंही बात भरे मुंह से निकल सकती नहीं ।
याद आजाती है तेरी जो कोई बात मुझे ॥ ६९ ॥
इश्क़ का मतलब लिखा जिस दिन मेरी तक़दीर में ।
आह की नक़दी मिली सहरा मिला जागीर में ॥ ७० ॥
मांगते हैं यह दोआ सोने के वक़्त ऐ यार हम ।
हों तेरे पाओं की आहट से कहीं बेदार हम ॥ ७१ ॥
पोते हैं ख़ूं जिगर का बजाए शराब हम ।
खाते गिज़ा की जा हैं जिगर का कबाब हम ॥ ७२ ॥
जो न देखा था वह सब इश्क़ में तेरे देखा ।
देखिये और दिखाती है हमें क़िस्मत क्या ॥ ७३ ॥
भेजते हो सैकड़ों लिख लिख के अग़यारों को ख़त् ।
एक भी लिक्खा न तुमने हम ख़तावारों को ख़त् ॥ ७४ ॥
लिख के भेजें तुमको हम क्या ख़ाक ख़त ।
बिन पढ़े कर डालते हो चाक ख़त ॥ ७५ ॥
हम इस्तरह हैं हिज्र की रातों को काटते ।
सोना हैं अपना कूटते हाथों को काटते ॥ ७६ ॥
शिताब आ कि तेरा दीद टुक मुयस्सर हो ।
ये दम लबों प है अब थम रहे रहे न रहे ॥ ७७ ॥
तड़पता वस्ल को यों हूं हवस में कुछ नहीं चलती ।
कि जैसे जानवर तड़पे क़फ़स में कुछ नहीं चलती ॥ ७८ ॥
यादे चश्मे मस्त में तेरे य कैफ़ीयत रही ।
होश बातिन में रहा ज़ाहिर मुझे ग़फ़लत रही ॥ ७९ ॥
दिलो जां सब्रो तुवां जो तुम्हें दरकार हो लो ।
होगा बाहर न कुफ़र आपके फ़रमाने से ॥ ८० ॥

यों हीं निबाहेंगे दोस्तो हम—
इधर की दुनिया अगर उधर हो।
करेंगे उल्फ़त न हम कभी कम—
इधर की दुनिया अगर उधर हो ८१ ॥
बग़ैर आपके हो जाने दिल न क्यों बे चैन।
कि राहते दिलो आरामे जां तुम्हीं तो हो ॥ ८२ ॥
तू न हो पहलू में तो फिर दर्दे दूरी से तेरे।
बेक़रारी रोज़ो शब दिल को मेरे क्योंकर न हो ॥ ८३ ॥
क्या कहूं मैं किस नशे में रात दिन मख़मूर हूं।
ऐसी कैफ़ीयत में हूं अपनी ख़ुदी से दूर हूं ॥ ८४ ॥
उसके ज़ख्मे दिल प क्या मरहम लगाएगा कोई।
जिसके दिल पर यार की तेगे निगह लग जायगी ॥ ८५ ॥
यह तो लटका ख़ूब सीखे हो जिसे चाहा हरे।
तुमने सौदाई दिखा कर ज़ुल्फ़ की लट कर दिया ॥
शोलःरू एक बात मेरी तू न आकर सुन गया।
तेरी बातों से कलेजा जल गया दिल भुन गया ॥ ८७ ॥
छीन कर दिल को हमारे हाथ से।
इसतरह पटका कि टुकड़े होगया ॥ ८८ ॥
न पूछो दोस्तो तुम हमसे हाले दिल कहूं क्योंकर।
कि यह तो क़िस्सा कहने के नहीं क़ाबिल कहूं क्योंकर ॥ ८९ ॥
इश्क़ में कब तक जिए हम अपना सीना कूट कर।
दिल में है खा जायँ हीरे का नगीना कूट कर ॥ ९० ॥
तदबीर लोग करते हैं क्या क्या प ऐ ज़फ़र।
चलती नहीं किसी की मुक़द्दर के सामने ॥ ९१ ॥

हमसे ऐ जानेजां एक न तेरा दिल फिरता।
ग़म न था चर्ख़ जहां जितने हैं सारे फिरते ॥ ९२ ॥
जानो दिल ताबो तवां होशो खिरद सब्रो क़रार।
ले चुके और भी कुछ है तुम्हें दरकार कि बस ॥ ९३ ॥
न भेजा तूने लिख कर एक परचा।
हमारे दिल को परचाया तो होता ॥ ९४ ॥
तद्बीर को सौ तरह की तद्बीर से बदलूं।
तकदीर को किस तौर की तकदीर से बदलूं ॥ ९५ ॥
लाख चाहत को छिपाये कोई पर छिपती नहीं।
प्यार की आंख और उल्फ़त की नज़र छिपती नहीं ॥ ९६ ॥
नहीं है आह करने की भी ताक़त।
मरीज़े ग़म ये तेरा नातवां है ॥ ९७ ॥
जो कहता था वही कहता रहा मंसूर सूली पर।
कि कह कर हर्फ़ हक इन्कार कब सरबाज़ करते हैं ॥ ९८ ॥
दिलो जां दीनो ईमां मैं अभी देने को हाज़िर हूं।
मगर आशिक़ को अपने आप हिम्मत आजमाते हैं ॥ ९९ ॥
था तो मजनूं को भी जुनूं लेकिन।
मेरी वहशत का और है नक़शा ॥ १०० ॥
मेरे नालों से पत्थर मोम है अय नाज़नीं होता।
मगर दिल में असर तेरे नहीं होता नहीं होता ॥ १०१ ॥
ग़ज़ब है कि दिल में तो रक्खो कदूरत।
करो मुंह प हम से सफ़ाई की बातें ॥ १०२ ॥
दिल लगाने की बात औरहि है।
जो दुखाने की बात औरहि है ॥ १०३ ॥

क्या कही बात हमने तुम से ख़िलाफ़ ।
रूठ जाने की बात औरहि है ॥ १०४ ॥

तुझसे ज़ालिम से अगर दिल न लगाते अपना ।
सहते क्यों जुल्मो सितम इश्क़ में ऐसे ऐसे ॥ १०५ ॥

हज़ार आईन:रू हों रूबरू पर हम किसे देखें ।
नहीं लगती कोई सूरत हमें तेरे सिवा अच्छी ॥ १०६ ॥

अज़ींनियाज़ इश्क़ के क़ाबिल नहीं रहा ।
जिस दिल प नाज़ था मुझे वह दिल नहीं रहा ॥ १०७ ॥

इश्क़ ने ग़ालिब निकम्मा कर दिया ।
वरन: हम भी आदमी थे काम के ॥ १०८ ॥

सीने को चमन बनाएंगे हम ।
गुल खाएंगे गुल खिलाएंगे हम ॥ १०९ ॥

निकलना खुल्द से आदम का सुनते आये हैं लेकिन ।
बहुत बे आबरू होकर तेरे कूचे से हम निकले ॥ ११० ॥

जान हम तुम प फ़िदा करते हैं ।
यह नहीं जानते हुआ क्या है ॥ १११ ॥

हमको उनसे वफ़ा की है उम्मेद ।
जो नहीं जानते वफ़ा क्या है ॥ ११२ ॥

न कीजे आप वफ़ा हमको क्या ।
बेवफ़ा आपही कहलाएंगे ॥ ११३ ॥

रोते रोते जान जावेगी फ़िराके यार में ।
अश्क का दरिया मेरा मुरदा बहा ले जायगा ॥ ११४ ॥

एक मेरे क़त्ल से दो वस्फ़ ऐ क़ातिल हुए ।
संगे दिल तेरा छुटा जौहर खुले शमशीर के ॥ ११५ ॥

दिल लेवे हमारा जो कोई तालिबेजां है।
हम खूब समझते हैं कि वो है तो जवां है॥ ११६॥
जिन्हें दिल आप गरां समझे हैं एक बोसे पर।
ध्यान इतना नहीं क्या लेते हैं क्या देते हैं॥ ११७॥
बोसा देते नहीं और दिल प है हर लहज: निगाह।
जी में कहते हैं कि हाथ आये तो माल अच्छा है॥ ११८॥
है कुछ ऐसीही बात जो चुप हूं।
वरन: क्या बात कर नहीं आती॥ ११९॥
आपही अपने ज़रा जौरो सितम को देखें।
हम अगर अर्ज़ करेंगे तो शिकायत होगी॥ १२०॥
हर बशर को खाक का पुतला न जानो ग़ाफ़िलो।
एकही सूरत मिली है खाक और अकसीर को॥ १२१॥
जो ख़ैर हुस्न की चाहो तो हमें बोसा दो।
ज़कात से नहीं नुक़साने माल होता है॥ १२२॥
बदल दे और दिल इस दिल के बदले।
इलाही तू तो रब्बिलआलमीं है॥ १२३॥
काशके दो दिल भी होते इश्क़ में।
एक रखते एक खोते इश्क़ में॥ १२४॥
रंज इतने जो दिये थे मुझको।
या खुदा दिल भी दो दिये होते॥ १२५॥
गर किसी ढब से कोई हमको हंसा देता है।
ग़मे फुरक़त वोहीं कुछ याद दिला देता है॥ १२६॥
नींद को भी नींद आजाती है हिज्रे यार में।
छोड़ कर बेख्वाब मुझ को आप सो जाती है नींद॥ १२७॥

तुमने बदली है नज़र जब से घटा कर उल्फ़त।
रातो दिन चश्मों से अश्कों की झड़ी रहती है॥ १२८॥
क्या हाल हो गया है दिले बेक़रार का।
आज़ार हो किसी को इलाही न प्यार का॥ १२९॥
हम हैं वही जो पहिले रोतों को हंसाते थे।
अब हाल अपना यह है हँसतों को रुलाते हैं॥ १३०॥
ज़फ़र जिस दम ग़मे दूरी से दिल मग़मूम होता है।
मज़ा दिल के लगाने का हमें मालूम होता है॥ १३१॥
नहीं दरकार कुछ महज़र हमारी दादख्वाही को।
निशानी अपने दाग़े दिल की काफ़ी है गवाही को॥ १३२॥
अगर हम जानते होगी जुदाई।
क़सम रब की न करते आशनाई॥ १३३॥
हिज्र में आंखें नहीं भर आई रोने के लिये।
अब्रे दर्याबार उमड़ा है डबोने के लिये॥ १३४॥
सीने प धर के देख ज़रा एक बार हाथ।
यह हाल है कि उछले है दिल बार बार हाथ॥ १३५॥
आजा शबे फ़ुरक़त में क़सम तुझको ख़ुदा की।
ऐ मौत बस अब देर लगाना नहीं अच्छा॥ १३६॥
ग़मे जुदाई का सदमा नहीं सहा जाता।
हराम मौत न होती तो ज़हर खा जाता॥ १३७॥
जोश बुलबुल के भी नालों में मैं खो देता हूं।
मुसकिराता है अगर गुञ्चः तो रो देता हूं॥ १३८॥
कौन सुनता है कहां जाके मैं फ़रियाद करूं।
इश्क़ ने जुल्म किया किससे तलब दाद करूं॥ १३९॥

हम तो मरने को हैं मौजूद अगर आये क़ज़ा।
पर क़ज़ा अपनी है उस तेग़अदा के ताबे॥ १४०॥
लगाता है जो तू एक और शमशीर।
अरे क्या ज़ख्म पहले कम लगा है॥ १४१॥
तेरी शमशीर से गर्दन मियां फेरी नहीं जाती।
कि है इक़रार सरबाज़ी ज़बां फेरी नहीं जाती॥ १४२॥
खड़ा दस्तबस्ता गुनहगार हूं।
जो चाहो सज़ा दो सज़ावार हूं॥ १४३॥
हम नहीं वह जो करें दिल से फ़रामोश तुम्हें।
जानते अपना हैं ऐ यार दमो होश तुम्हें॥ १४४॥
चांई चकार चोर औ नटखट तोरे बदे।
छोड़ गेलैं सारे रामधे चौपट तोरे बदे॥ १४५॥
घर से नगर से जात कुटुंब संगी भाइ से।
कैसे भयल बिगाड़ न खटपट तोरे बदे॥ १४६॥
रोअल करीला पाटी पै माथा पटक पटक।
लेईला जब कि रात के करवट तोरे बदे॥ १४७॥
पुतरी मतिन रखब तोहें पलकन की आड़ में।
तोहरे बदे हम आंखी में बैठक बनाईला॥ १४८॥
हम झारेवाला बाटी हज़ारन में रामधे।
पै राजा तोसे बेंत मतिन थरथराईला॥ १४९॥
इस सितम दीदः प तुम रह्म करो या न करो।
पर ज़रा कान तो फ़रयादे जिगर पर रक्खो॥ १५०॥
तद्बीर लोग करते हैं क्या क्या पर ऐ ज़फ़र।
चलती नहीं किसी की मुक़द्दर के सामने॥ १५१॥

खातिरे इश्क वह है जिससे समुन्दर जल जाय।
गरचे लग आय ये पत्थर में तो पत्थर जल जाय ॥ १५२ ॥
जब खुबर थी इमकिनाबे आश्नां हो जायगा।
दोस्त का मिलना नसीबे दुश्मनां हो जायगा ॥ १५३ ॥
यां तो पैग़ामे अजल आ पहुंचा।
वां से क़ासिद न फिरा क्या बाइस ॥ १५४ ॥
क्या पढ़ाया तुम्हें कुछ गैरों ने।
ख़त हमारा न पढ़ा क्या बाइस ॥ १५५ ॥
करवटें ले ले के कहते हैं शबे फुरक़त में हम।
किस तरह ऐ खुफ़तगाने ख़ाक आजाती है नींद ॥ १५६ ॥
अपनी फुरक़त में न पूछो सरगुज़श्ते ख़्वाबे चश्म।
आज कल पाए निगह की ठोकरें खाती है नींद ॥ १५७ ॥
कूए जानां से जो उठाता हूं तो सो जाते हैं पांव।
दफ़ातन आंखों से पांवों में उतर आती है नींद ॥ १५८ ॥
हिज्र में सोने को ऐसी है तमन्ना ऐ वज़ीर।
देखता हूं उसे हसरत से जिसे आती है नींद ॥ १५९ ॥
नहीं उठने के क़ातिल की गली से।
कि हम बैठे हैं सर से हाथ उठा कर ॥ १६० ॥
मैं यह समझा दुआ देता है मुझको।
लगा जब कोसने तू हाथ उठा कर ॥ १६१ ॥
सख़्त जां हूं मेरी गर्दन प छुरी फेर आकर।
तेज़ करने के लिये खूब है यह सिल क़ातिल ॥ १६२ ॥
हो गमो अंदोह उलम दे डालो।
हम फ़क़ीराना सदा करते हैं ॥ १६३ ॥

कूएकातिल का यह क़ासिद है पता।
नामावर क़त्ल हुआ करते हैं॥ १६४॥
किस क़दर है फ़र्क़ यूसुफ़ में और अपने यार में।
पर खरीदार इसके आएं वह बिके बाज़ार में॥ १६५।
न आओ खुश रहो जिस जा रहो मेरे साहब।
मिलो व या न मिलो हम निबाह करते हैं॥ १६६॥
मैं वह बुलबुल हूं कि फ़रयाद मेरी सुन सुन कर।
चटक के गुञ्चए गुल आह आह करते हैं॥ १६७॥
नहीं है तुझसे हमें कुछ भी ऐ फ़लक शिकवा।
सितम जो करते हैं यह रश्कमाह करते हैं॥ १६८॥
तू न बोसा दे सका लेकिन तेरे दीवाने ने।
सर दिया शमशीर को और दस्तो पा ज़ंजीर को॥ १६९॥
इस पते से पूंछना क़ासिद मकाने यार को।
चांदनी कहते हैं जिसके सायए दीवार को॥ १७०॥
देख कर तेरे मरीज़े इश्क़ को बोला तबीब।
हम पयामे मर्ग कहते हैं इसी आज़ार को॥ १७१॥
जाने शीरीं दमे आखिर जो लबों तक आई
बोला फ़रहाद कि मरने में मज़ा होता है॥ १७२॥
कोई हमचश्म नहीं मेरी सियहबख्ती का।
मैं वह सुरमा हूं जो नज़रों से गिरा होता है॥ १७३॥
सख्त जां हूं न मरूंगा शबे फ़ुरक़त में वज़ीर।
सैकड़ों बार अजल आए तो क्या होता है॥ १७४॥
जो कि तायर तेरे सदके में रिहा होता है।
ऐ शहे हुस्न वह उड़तेही हुमा होता है॥ १७५॥

हम असीरों को कफ़स में भी ज़रा चैन नहीं।
रोज़ धड़का है कि अब कौन रिहा होता है ॥ १७६ ॥
दोनों आलम मुझे तारीक नज़र आते हैं।
जब तसौवर तेरा ये ज़ुल्फ़े दुता होता है ॥ १७७ ॥
लाख दरवाज़ा करे तू बन्द ख़त भेजेंगे हम।
रोज़ने दीवार भी दर है सबा के वास्ते ॥ १७८ ॥
बर्के यारां जिसको कहते हैं मेरा अफ़साना है।
कुछ हक़ीक़त रोने की कुछ हाले बेताबाना है ॥ १७९ ॥
कौन जीता है ऐ सनम मर के।
आओ तो देख लें नज़र भर के ॥ १८० ॥
सर को टकराते हैं लहद में हम।
लुत्फ़ भूले नहीं हैं ठोकर के ॥ १८१ ॥
शाह कहलाये हर तरह से वज़ीर
बादशाही न की गदाई की ॥ १८२ ॥
बेताबियों से तेरी तअज्जुब हुआ मुझे।
ए दिल शबे फ़िराक़ में छाती न फट गई ॥ १८३ ॥
फिर वही हम थे वही तुम थे मुहब्बत थी वही।
सुलह कर लेते अगर आंखें लड़ाने के लिये ॥ १८४ ॥
हूं वो ग़मदीदा हंसे कोई तो मैं रोने लगूं।
कुछ बहाना चाहिये आंसू बहाने के लिये ॥ १८५ ॥
कौन होगा तेरे तीरों का निशाना मेरे बाद।
ख़ाक ले जाना मेरी तोदा बनाने के लिये ॥ १८६ ॥
रास्ता रोक के कह लूंगा जो कहना होगा।
क्या न मिल जाओगे बाज़ार में आते जाते ॥ १८७ ॥

बनाया आप हमने अपना दुश्मन दिल के आने से ।
करश्मे को सितम को नाज़ को अन्दाज़ आना की ॥ १८८ ॥
दमों में टालते हो दमनिकलही जाएगा ।
मैं नातवां हूं बहुत आजमाइये न मुझे ॥ १८९ ॥
जब तलक मुझको ख्याले गौहरे दन्दां न था ।
दुर कोई कहता न था देता कोई लूलू न था ॥ १९० ॥
लगावे तो क्या दिल बुतों से लगावें ।
रहा ही नहीं दिल लगाने के क़ाबिल ॥ १९१ ॥
खुम न हो कर खुदगरज हो जाइये ।
मिस्ले साग़र और के काम आइये ॥ १९२ ॥
इसका गिला नहीं न हो वादा वफ़ा न हो ।
इतना तो हो कि रश्क मुझे गैर का न हो ॥ १९३ ॥
ग़र्बते वस्ल न पीने दे न ग़म खाने दे ।
क्या ग़ज़ब है कि न जीने दे न मरजाने दे ॥ १९४ ॥
किसी का कब कोई रोजे सियह में साथ देता है ।
कि तारीकी में साया भी जुदा रहता है इनसां से ॥ १९५ ॥
नहीं मालूम क्या इस सीनए सोज़ां में जलता है ।
धुआं नोके जबां से बात करने में निकलता है ॥ १९६ ॥
समाया जो नज़रों में तू खूबरू है ।
जिधर देखता हूं उधर तूही तू है ॥ १९७ ॥
लाइये लाइये तशरीफ़ वहां हज़रते इश्क़ ।
खूने दिल पीने को हाज़िर है जिगर खाने को ॥ १९८ ॥
करो तुम कद्र इसको भी हमारा दिल परेशां है ।
ये वीराना वो है जिस में तुम्हारी याद बसती है ॥ १९९ ॥

ये जानते तो न बातों की तुझसे खू करते।
तेरे खयाल से पहरोंही गुफ़्तगू करते॥ २००॥
जितने आये तेरे मैखाने में सब झूम चले।
साक़ियां बस हमी बाक़ी थे सो महरूम चले॥ २०१॥
दिलो दीदः अपने जो यार थे वो बला में हमको फसागये।
हमें जिनसे अम्मे उमीद थो वही आंख हमसे चुरागये॥ २०२॥
जान मेरी मुझे ग़नीमत जान।
आशिक़ बावफ़ा नहीं मिलता॥ २०३॥
एक ज़माना तेरा आशिक़ मुझे बतलाता था।
उँगलियां उठतीं थीं जिस राह से मैं जाता था॥ २०४॥
न दरवेशों का फिरका चाहिये ने ताजे शाहाना।
मुझे तू होश दे इतना रहूं मैं तुझ प दीवाना॥ २०५॥
रात यूं ग़मश कटी हमको जो रोते रोते।
बह गये अश्कों में हम सुबह के होते होते॥ २०६॥
असीरी को जो लज़्ज़त से पड़ा ढब आशनाई का।
मज़ा रो रो मेरे दिल से हुआ रुख़सत रिहाई का॥ २०७॥
न तेरा बस है मुमकिन न ताब है दिल को।
अजब तरह का इलाही अज़ाब है दिल को॥ २०८॥
तेरी इस बेवफ़ाई पर फ़िदा होती है जान अपनी।
खुदा जाने अगर तुझ में वफ़ा होती तो क्या होता॥ २०९॥
लुत्फ़े शबेमह ऐ दिल उस दम मुझे हासिल हो।
एक चांद बग़ल में हो एक चांद मुक़ाबिल हो॥ २१०॥
गुलो गुञ्चों का मिला बुलबुले खुशलहजः न कर।
तू गिरफ़्तार हुई अपनी सदा के बाइस॥ २११॥

गुमाने ज़ुल्फ़ से नज़्ज़ारए संबुल नहीं करते।
हमें काटा है जब से सांप ने रस्सी से हैं डरते ॥ २११ ॥

यह तो मुमकिन ही नहीं दिल फँसे और जान बचे।
साहबे ख़ाना प आफ़त हो व मेहमान बचे ॥ २१२ ॥

ये क़िस्सा वह नहीं तुम जिसको क़िस्सःख्वां से सुनो।
मेरे फ़सानए ग़म को मेरी ज़बां से सुनो ॥ २१४ ॥

इतने बिगड़े हैं वह हम से कि अगर नाम उनका।
लिखता काग़ज़ प हूं तो हर्फ़ बिगड़ जाते हैं ॥ २१५ ॥

न रहे हौसला रक़ीबों को।
आज़मा लें जो आज़माते हैं ॥ २१६ ॥

हाले दीवानगाने इश्क़ न पूछ।
तिनके चुनते हैं ख़ाक उड़ाते हैं ॥ २१७ ॥

आमादः मेरे क़त्ल पः साक़ी शिताब हो।
छूटूं अज़ाब से मैं तुझे भी सवाब हो ॥ २१८ ॥

मेरी जान जाती है यारो सँभालो।
कलेजे में कांटा चुभा है निकालो ॥ २१९ ॥

क्या हँसे इन्सान और क्या रो सके।
दिल ठिकाने हो तो सब कुछ हो सके ॥ २२० ॥

होगया ख़ञ्जरे बेदाद का बिस्मिल ठंढा।
ले हुआ अब तो कलेजा तेरा क़ातिल ठंढा ॥ २२१ ॥

कौन रखता है भला ऐसा जिगर देखें तो।
यार हो सामने देखे न उधर देखें तो ॥ २२२ ॥

अब तो आ बैठे सहेंगे सौ तरह की ज़िल्लतें।
जैसी कुछ हम पर बने अब आप के दर पर बने ॥ २२३ ॥

कोई आलम में नहीं जल्लाद तुझसा दूसरा।
छोड़ता है मुझको क़ातिल नीमजाँ किसके लिये ॥ २२४ ॥

ख़ाल में है ख़त में है या गेसुए ख़मदार में है।
दिले गुमगश्तः हमारा कहीं हो यार में है ॥ २२५ ॥

जान जाती किसी से छिपी है।
देख लो मेरी जान जाती है ॥ २२६ ॥

जीते जी छोड़ते हैं कब ये क़दम।
अब तो हम तुम से क़ौल हारे हैं ॥ २२७ ॥

भूल कर ऐ चांद के टुकड़े इधर आजा कभी।
मेरे वीराने में भी होजाय दमभर चांदनी ॥ २२८ ॥

फिर वही कुंजे कफ़स फिर वही सैयाद का घर।
चार दिन और हवा बाग़ की खा ले बुलबुल ॥ २२९ ॥

मालूम तुमको भी हो किसी पर जो आए दिल।
नाहक़ सताया करते हो साहब पराए दिल ॥ २३० ॥

मिट्टी हुआ हवा हुआ पामाल हो गया।
क्या पूछते हो ख़ाक कहूं माजराए दिल ॥ २३१ ॥

जल्द आओ जो तुमको आना है।
हम कोई दम में याँ रवाना हैं ॥ २३२ ॥

अब हमसा बावफ़ा न वो दुनियां में पाएंगे।
क्योंकर कहूँ कि उनको न हम याद आएंगे ॥ २३३ ॥

हम रिन्द हैं ग़रज़ हमें दैरो हरम से क्या।
तेरी गली में बैठ के धूनी रमाएंगे ॥ २३४ ॥

मुझे ऐ दोस्त तेरा हिज्र अब ऐसा सताता है।
कि दुश्मन भी मेरे अहवाल पर आंसू बहाता है ॥ २३५ ॥

न था मालूम उल्फ़त में कि ग़म खाना भी होता है।
जिगर को बेकली और दिल का घबराना भी होता है॥ २३६॥
कहाँ तक खाइये ग़म अब तो ग़म खाया नहीं जाता।
दिले बेताब को बातों से बहलाया नहीं जाता॥ २३७॥
नातवानी इस क़दर छाई है जिस्मे ज़ार पर।
चढ़ नहीं सकता है साया भी मेरा दीवार पर॥ २३८॥
जीते जी क़द्र बशर की नहीं होती प्यारे।
याद आवेगी तुझे मेरी वफ़ा मेरे बाद॥ २३९॥
किसी बेकस को ऐ बेदादगर मारा तो क्या मारा।
जो आपी मर रहा हो उसको गर मारा तो क्या मारा॥२४०॥
सख़्त बीमार दर्दे फ़ुरक़त हूं।
आइये जल्द वरन: रुख़सत हूं॥ २४१॥
तेरा दाग़े जफ़ा है और मैं हूं।
दिले दर्द आशना है और मैं हूं॥ २४२॥
तब लुत्फ़े ज़िन्दगी है जब अब्र हो चमन हो।
पेशे नज़र हो साक़ी पहलू में गुलबदन हो॥ २४३॥
देते दुआएं उम्र तलक कूए यार को।
थोड़ी ज़मीं हमें भी जो मिलती मज़ार को॥ २४४॥
हर दिल में है आरज़ू तुम्हारी।
हर लब प है गुफ़्तगू तुम्हारी॥ २४५॥
नहीं दैरो हरम से काम हम उल्फ़त के बन्दे हैं।
वही काबः है अपना आरज़ू दिल की जहां निकले॥ २४६॥
यह अब दर्याफ़्त होता है मुझे दिल की तबाही से।
ज़माना वस्ल का नज़दीक है फ़ुर्क़त की स्याही से॥ २४७॥

रुबाई

यही पैग़ाम दर्द का कहना।
गर कोई कूए यार से गुज़रे॥
कौनसी रात आन मिलियेगा।
दिन बहुत इन्तज़ार में गुज़रे॥ १॥
बे मिस्ल हो लाजवाब हो ऐसे हो।
हो और भी कोई तो कहें वैसे हो॥
हम खूब तुम्हें समझे हुए हैं दिल में।
साहब हो बहुत खूब ग़रज़ जैसे हो॥ २॥
अय फ़लक जो जो दिखाई देख ली।
वस्ल भी देखा जुदाई देख ली॥
दिल के आईने में है तस्वीरे यार।
जब ज़रा गर्दन झुकाई देख ली॥ ३॥
खेल जाते हैं जान पर आशिक़।
जान देते हैं आन पर आशिक़॥
कोई इन गालियों से डरते हैं।
हम हैं तेरी ज़बान पर आशिक़॥ ४॥
क़िस्मत किया हर एक को क़स्साके अज़ल ने।
जो शख़्स कि जिस चीज़ के क़ाबिल नज़र आया॥
बुलबुल को दिया नाला तो परवाने को जलना।
ग़म हमको दिया सबसे जो मुश्किल नज़र आया॥ ५॥

मुखम्मस।

कोई रोता था तो कहते थे कि रोना कैसा।
ग़म किसे कहते हैं मुंह अश्कों से धोना कैसा

वाक़िफ़ जो शेख़: मज़हबों प: होना कैसा।
दिलो दीं होगो खि़रद इश्क़ में खोना कैसा॥
लोग माशूक़ों के क्यों जौरो सितम सहते हैं।
आशिक़ी चीज़ है क्या इश्क़ किसे कहते हैं॥ १॥
अब जो देखा तो ये देखा कि क़यामत है इश्क़।
कुफ़्र है जुल्म है बेदाद है आफ़त है इश्क़॥
बखुदा बाइसे सद तफ़्रो मलामत है इश्क़।
शोलए खि़रमने दीनो दिलो ताक़त है इश्क़॥
राह बतलाइये जिसको वही रहज़न होजाय।
दोस्ती कीजिये जिससे वही दुश्मन होजाय॥ २॥
जो कड़ी कहते थे तुम हम वह उसे सहते थे।
सख़्त कहते थे तो सुनके उसे चुप रहते थे॥
रोने लगते थे न यों फूट के नम बहते थे।
इस मुरौवत में तुम्हारी यही हम कहते थे॥
उसके क़ुरबान रहेंगे उसे चाहेंगे हम।
मुंह से निकला है जो कुछ उसको निबाहेंगे हम॥ ३॥

मुसद्दस मियां नज़ीर।

जबसे तुमको लेगया है यह फ़लक आजुरदम कहीं।
जी तरस्ता है कहीं और चश्म हैं पुरनम कहीं॥
हम प जो गुज़रा है वह गुज़रा किसी पर कम कहीं।
ने तसल्ली है न दिल को चैन है एक दम कहीं॥
छूट जाऊं ग़म के हाथों से जो निकले दम कहीं।
ख़ाक ऐसी ज़िन्दगी पर तुम कहीं और हम कहीं॥
हर घड़ी आंसू बहाना दीदए खूंबार से।

रात दिन सर को पटकना हर दरो दीवार से ॥
आहो नाला खींचना हरदम दिले बीमार से ।
है बुरा अहवाल अब तो हिज्र के आज़ार से ॥
छूट जाऊं ग़म के हाथों से जो निकले दम कहीं ।
ख़ाक ऐसी ज़िन्दगी पर तुम कहीं और हम कहीं ॥
ने किसी से मेरी उल्फ़त ने किसी से प्यार है ।
ने कोई अपना रफ़ीक़ और ने कोई ग़मख़्वार है ॥
दिल उधर सीने में तड़पे जी इधर बीमार है ।
क्या कहूं अब तो बहुत मिट्टी हमारी ख़्वार है ॥
छूट जाऊं ग़म के हाथों से जो निकले दम कहीं ।
ख़ाक ऐसी ज़िन्दगी पर तुम कहीं और हम कहीं ॥
घर में जी बहले न बाहर अंजुमन में दिल लगे ।
ने ख़ुश आवे सैर ने सर्वो समन में दिल लगे ॥
ने पहाड़ों में न सहरा में न बन में दिल लगे ॥
अब तो तुम बिन ने गुलिस्तां ने चमन में दिल लगे ॥
छूट जाऊं ग़म के हाथों से जो निकले दम कहीं ।
हैफ़ ऐसी ज़िन्दगी पर तुम कहीं और हम कहीं ॥
पर नहीं उड़ कर तुम्हारे पास जो आजाइये ।
जोहो जी में कब तलक ख़ूने जिगर को खाइये ॥
चश्मेतर और दाग़े सीने को किसे दिखलाइये ।
दिल समझता है नहीं क्योंकर इसे समझाइये ॥
छूट जाऊं गम के हाथों से जो निकले दम कहीं ।
हैफ़ ऐसी ज़िन्दगी परतुम कहीं और हम कहीं ॥
अब जो अपनी हाल पर हम ख़ूब करते हैं निगाह ।

हर घड़ी मिस्ले नज़ीर इस ग़म से है हालत तबाह ॥
है जो कुछ जुल्मो सितम हम पर कहें क्या तुमसे आह।
बिन मुए अब तो नज़र आता नहीं हरगिज़ निबाह ॥
छूट जाऊं ग़म के हाथों से जो निकले दम कहीं।
हैफ़ ऐसी ज़िन्दगी पर तुम कहीं और हम कहीं ॥ १ ॥

दोहा।

जो कहिये तो सांच करि को माने यह बात।
मन के पग छाले परे तो लों आवत जात ॥ १ ॥
अरे पियारे क्या करूं जाहिर होगी लाग।
क्योंकर दिल बारूद में छिपे इश्क़ की आग ॥ २ ॥
कर कांपे लेखनि डगे रोम रोम थहराय।
सुधि आवै छाती फटै पाती लिखी न जाय ॥ ३ ॥
कागद भींजत नैनजल कर कांपत मसि लेत।
पापी बिरहा मन बसे बिथा लिखन नहिं देत ॥ ४ ॥
कर कांपत पतिया लिखत जल भरि आवै नैन।
कोरो कागद हाथ दै मुखही कहियो बैन ॥ ५ ॥
कही जाय क्या इश्क़ की कही न मानै कोय।
जानै सो जानै अरे जिहि सिर बीती होय ॥ ६ ॥
सुनि प्यारी या बात को देख हिये करि गौर।
रूप दुपहरी छांह कब ठहरानो इक ठौर ॥ ७ ॥
समझे हो नहिं मांनती जाहिर ह्वैहै लाग।
क्योंकर दिल बारूद में छिपे इश्क़ की आग ॥ ८ ॥

मन चाहत है मिलन को मुख देखन को नैन।
श्रवन सु चाहत हैं सुन्यो पिय तुव मीठे बैन ॥ ९ ॥
कहन सुनन को है नहीं लिखो पढ़ो नहिं जात।
अपने मन सों जानियो मेरे मन की बात ॥ १० ॥
अपनो गरजन बोलियत कहा निहोरो तोहि।
तू प्यारो मो जीय को मो जिय प्यारो मोहि ॥ ११ ॥
मांगत भिच्छा दरस की झोली पलक पसार।
तेरे जोगी नैन ये करि इनको सतकार ॥ १२ ॥
तबते भल करि और तनहूं पलक पसारत हैं न।
जबते छबि धन मीत दै किये अजाची नैन ॥ १३ ॥
नेही दृग जोगी भये बरुनी जटा बनाय।
अरे मीत तूं दे इन्हें दरसन भिच्छा आय ॥ १४ ॥
दरस दान तोपै चहैं दृग पल अँजुरी ओड़।
पूरन कर मनकामना इन्हें विमुख मत मोड़ ॥ १५ ॥
पलक न लागत एक पल सोचत रजनी जात।
जिमि चकई पति के बिरह चाहत सदा प्रभात ॥ १६ ॥
हँसि हँसि सङ्ग सुकेलि करि प्रीति सु अधिक बढ़ाय।
मन चुराय कै रमि रहे बहुरि दियो बिसराय ॥ १७ ॥
अवधि करी हम आइहैं सो तजि दियो प्रमान।
निस दिन चित चिन्ता रहै दाहत अनल समान ॥ १८ ॥
हे दिलबर दिलदार बर प्यारे प्रान सुजान।
कब मिलिहो सो अब लिखो मेरे जीवन प्रान ॥ १९ ॥
मित्र पत्र बिनु हिय लहत कबहुं न छन बिस्राम।
प्रफुलित होत न कमल जिमि बिनु रबि उदय ललाम ॥ २० ॥

और काज सनि लिखन मैं होय न लेखनि मन्द।
मिले पत्र उत्तर अवसि यह बिनवत हरिचन्द॥ २१॥
अर्द्ध मिलन निज दूत सम प्रिय बानी को चित्र।
गुप्त भेद प्रगटित करत पत्र लीजिये मित्र॥ २२॥
बंधु लेख रससिंधु के तट जैये करि यत्न।
जितनोही अवगाहिये तितनो लहिये रत्न॥ २३॥
मित्रन के पत्रहिं कहत अर्द्ध मिलन सब कोय।
आपहुं उत्तर लिखहिं तो पूरो मिलनो होय॥ २४॥
कर ले चूमि चढ़ाय सिर हिय लगाय भुज भेंटि।
लखि पाती पिय की लिखो बांचति धरति समेटि॥ २५॥
बुधजन दरपन में लखत दृष्ट वस्तु को चित्र।
मनु अनदेखो वस्तु को यह प्रतिबिंब विचित्र॥ २६॥
आसा अमृत पात्र पुनि प्रिय बिरहातप छत्र।
मित्र बचन विश्राम सब कारज साधन पत्र॥ २७॥
प्रीतम पाती तौ लिखौं जो तुम होहु विदेस।
तन में मन में नैन में ताको कहा सँदेस॥ २८॥
कागद पर लिखत न बनत कहत सँदेस लजात।
कहिहै सब तेरो हियो मेरे हिय की बात॥ २९॥
भूलत निज उपकार नित अरु पर कृत अपकार।
मित्र भूलनो बानि सों मोहि जनि देहु बिसार॥ ३०॥
जल में बसत कमोदिनी चन्दा बसत अकास।
जो जाही के मन बसे सो ताही के पास॥ ३१॥
कमलन को रवि एक है रवि को कमल अनेक।
हमसे तुमको बहुत हैं तुमसे हम मोहि एक॥ ३२॥

है इत लाल कपोत ब्रत कठिन प्रेम की चाल।
मुख सों आह न भाषिहै निज सुख करो हलाल ॥ ३३ ॥
प्रेम बनिज कीनो हुतो नेह नफा जिय जान।
अब प्यारे जिय की परी प्रान पूंजि मैं हान ॥ ३४ ॥
तेरोई दरसन चहैं निस दिन लोभी नैन।
श्रवन सुन्यो चाहत सदा सुन्दर रसमय बैन ॥ ३५ ॥
तन तरु चढ़ि रस चूसि सब फूली फली न रीति।
प्रिय अकासबेली भई तुव निर्मूलक प्रीति ॥ ३६ ॥
हुरत चोट बिसरत नहीं उठत पिराय पिराय
जौलों मसक न भेंटहौं तौलों कसक न जाय ॥ ३७ ॥
सर सूखे पच्छी उड़े औरे सरन समायँ।
मीन दीन बिन पच्छ के कहु रहीम कहँ जायँ ॥ ३८ ॥
प्रान हमारो चलन को बार बार अकुलाय।
आवन आसा औधि की यों राख्यो समुझाय ॥ ३९ ॥
तन दुख मन दुख नैन दुख हिये भई दुख खान।
मानो कबहूं ना हुतो वा सुख सों पहिचान ॥ ४० ॥
फांसी प्रीत लगाय कै मो मन लियो चुराय।
अब तो तेरे बस पस्यो छूटि सकै नहिं हाय ॥ ४१ ॥
करत करी बिछुरत मरी जरी परी यह रीति।
किन सुख पायो री सखी परदेसी की प्रीति ॥ ४२ ॥
पंछी तुम पर्वत बसो हम जमुना के तीर।
अबका मिलना कठिन है पायन परी जँजीर ॥ ४३ ॥
पात झरंते इमि कहैं सुन तरवर बनराय।
अब के बिछुरे कब मिलें दूर परेंगे जाय ॥ ४४ ॥

प्रीति प्रीति सब कोउ कहैं कठिन तासु की रीति।
आदि अन्त निबहै नहीं बालू की सी भीति ॥ ४५ ॥
मीन काटि जल धोइये खायें अधिक पियास।
तुलसी प्रीति सराहिये मुए मीत की आस ॥ ४६ ॥
कछु न होत सुसङ्ग ते देखहु तिल अरु तेल।
मोल तोल सब फिर गयो पायो नाम फुलेल ॥ ४७ ॥
जो मैं ऐसा जानती प्रीति किये दुख होय।
नगर ढिंढोरा फेरती प्रीति न कीजो कोय ॥ ४८ ॥
आह दई कैसी करी अनचाहत के संग।
दीपक के भाएं नहीं जर जर मरत पतंग ॥ ४९ ॥
बिरह अगिन तन मैं लगी जरन लगी सब गात।
नारी पकरत बैद के परे फफोला हात ॥ ५० ॥
ना मोहि पंख न पायँ बल मैं अपंख पिय दूर।
उड़ि न सकत गिर गिर परत रहत बिसूर बिसूर ॥ ५१ ॥
दिल चाहत दिलदार को तन चाहत आराम।
दुबधा मैं दोऊ गये माया मिली न राम ॥ ५२ ॥
प्रीत सीखिये ऊख तें जहां जु रस की खान।
जहां गांठ तहं रस नहीं यही प्रीत की बान ॥ ५३ ॥
जहां गांठ तहँ रस नहीं यह जानत सब कोय।
गठजोरे की गांठ में अधिक अधिक रस होय ॥ ५४ ॥
तुम बिछुरन जो दुख मिल्यो सो कछ लिखूं क्रपाल।
पत्री गागर तुल्य है सागर रूप हवाल ॥ ५५ ॥
मन बहलावत जात दिन महा कठिन है रैन।
कहा करौं कैसें भरौं बिन देखे नहिं चैन ॥ ५६ ॥

तुम बिनु एती को करै कृपा हमारे नाथ।
मोहि अकेली जानि कै दुख राख्यो मो साथ॥ ५७॥
लाल पिया के बिछुरते बिछुरि गये सब चैन।
भूख प्यास नींदौ गई अंसुवाहु भए नैन॥ ५८॥
इहि गुन पतियां ना लिखौं धरे रहौं मन मौन।
तुम प्रीतम जिय में बसौ पाती बांचै कौन॥ ५९॥
पाती ताहि पठाइये जो साजन परदेस।
निस दिन हियरे में बसे ताको कहा सँदेस॥ ६०॥
प्रीतम यह मत जानियो भयो दूर को बास।
देह गेह कितहूं रहै प्रान तिहारे पास॥ ६१॥
मन माला तुव नाम की जपत रहौं दिन रैन।
नैन पियासे दरस के नेक न पवैं चैन॥ ६२॥
मेरो मन तोपै रह्यो तेरो मन मोहि पाहिं।
दोउ व्याकुल बिन मिले चैन शरीरहि नाहिं॥ ६३॥
प्रीतम हम तुम एक हैं कहन सुनन को दोय।
मन से मन को तौलिये दो मन कभी न होय॥ ६४॥
प्रीतम धागा प्रेम का जिन तोरौ चटकाय।
टूटे फेर जुटै नहीं अन्त गांठ परि जाय॥ ६५॥
तो मन को जानत नहीं अहो मीत सुखदैन।
पै मो मन को करत है मैन महा बेचैन॥ ६६॥
बिथा कथा लिखिये कहा सुन लीजे मम मीत।
चित्त ठिकाने है नहीं अबसे लागी प्रीत॥ ६७॥
जो ग़रीब सों हित करैं धन रहीम वे लोग।
कहा सुदामा बापुरो कृष्ण मिताई जोग॥ ६८॥

हरि रहीम ऐसी करी ज्यों कमान सर पूर।
खैंच आपनी ओर को डार दियो पुनो दूर ॥ ६९ ॥
रहिमन राज सराहिये जो बिधु के बिधि होय।
रबि को कहा सराहिये उगे तरैयां खोय ॥ ७० ॥
अब रहीम चुप करि रहो समुझि दिनन को फेर।
जब दिन नीके आइहैं बनत न लागी बेर ॥ ७० ॥
यारी यारी छोड़ दो अब रहीम वे नाहिं।
अब रहीम दर दर फिरैं मांगि मधुकरी खाहिं ॥ ७२ ॥
मोहन मोहन के गये मोहन मोह न कीन।
मोह त्यागि मोह तजि गये अति दारुन दुख दीन ॥ ७३ ॥
अंकम भर मोहि भामिनी मन की खोल फफूंद।
प्यासे प्रान पपीहजा बिगत स्वाति की बूंद ॥ ७४ ॥
यह निठुराई लाड़िली उचित नहीं हौं दीन।
दरस सुधारस पान बिनु बिगत नीर ज्यों मीन ॥ ७५ ॥
प्रीतम यह मत जानियो तोहि बिछुरे मोहि चैन।
जैसे बन की लाकड़ी सुलगत हौं दिन रैन ॥ ७६ ॥
प्रीतम ऐसी प्रीत कर ज्यों लांबी खजूर।
चढ़े तो चाखे प्रेमरस गिरे तो चकनाचूर ॥ ७७ ॥
पिय तन तजि मिलती तुमैं प्रानपिया को प्रान।
रहती जो न घरी घरी औधि परी दरम्यान ॥ ७८ ॥
जिस दिन बरषत रहत हौ तहं कहुं घटत न मूल।
नैन नीर हिय अगिन को भयो घीव सम तूल ॥ ७९ ॥
निसि जगाय प्रातहिं चलत प्रान मजूरी हाल।
अंग नगर मैं बिरह यह भयो नयो कोतवाल ॥ ८० ॥

बरषत मेह अछेह अति अवनि रह्यो जल पूरि।
पथिक तऊ तुव गेह तें उठत भभूरन भूरि ॥ ८१ ॥
लाल तिहारे बिरह की लागी अगिन अपार।
सरसै बरसै नीरहू मिटै न झर झंझार ॥ ८२ ॥
प्रेम प्रेम सबही कहत प्रेम न जान्यो कोय।
जोपै जानहि प्रेम तो मरैं जगत क्यों रोय ॥ ८३ ॥
प्रेम सरोवर नीर है यह मम कीजो ख्याल।
परे रहैं प्यासे मरैं उलटी ह्यां को चाल ॥ ८४ ॥
प्रेम सरोवर की लखो उलटो गति जग माहिं।
जे डूबे तेई तरे तरे तरे ते नाहिं ॥ ८५ ॥
प्रेम सरोवर को यहै तीरथ बिधि परमान।
लोक वेद कों प्रथमहीं देइ तिलांजलि दान ॥ ८६ ॥
अरे वृथा क्यों पचि मरो ज्ञान गरूर बढ़ाय।
बिना प्रेम फीको सबै लाखन करहु उपाय ॥ ८७ ॥
प्रेम सकल श्रुति सार है प्रेम सकल स्मृति मूल।
प्रेम पुरान प्रमाण है कोउ न प्रेम के तूल ॥ ८८ ॥
परम चतुर पुनि रसिकवर कैसोहू नर होय।
बिना प्रेम रूखी लगै बादि चतुरई सोय ॥ ८९ ॥
जान्यो वेद पुरान मैं सकल गुनन की खानि।
जुपै प्रेम जान्यो नहीं कहा कियो सब जानि ॥ ९० ॥
डरै सदा चाहै न कछु सहै सबै जो होय।
रहै एक रस चाहि कै प्रेम बखानो सोय ॥ ९१ ॥
हरिन अहेरी पै मरत मांगत है गहि पाय।
मेरे या मृगचाम पर बैठो बीन बजाय ॥ ९२ ॥

सुधि बुधि लाज समाज सुख सबै के दिये साथ।
अब न छुटाये छुटै मन पस्यो पराये हाथ॥ ९३॥
भेजत हौं यह पत्र सँग तूल हाथ दुखरास।
नहिं पायो तो राखियो प्रान आपने पास॥ ९४॥
मित्र विलोकत रहत हौं निस दिन तो प्रिय चित्र।
सो प्रतच्छ ह्वै करहुगी कब यग दृगन पवित्र॥ ९५॥
प्यारे कहँ लगि लिखिहिंगी हम अपनो सब हाल।
युगल जुराफा कर अलग निरख लेहु ततकाल॥ ९६॥
जिमि जल बिनु झख अरु कमल तुम बिन त्यों मम हाल।
नहिं पायो वहि काल अरु नहिं पायो वहि काल॥ ९७॥
सुनि श्रुति पाती आपकी छाती गई जुड़ाय।
अवध बढ़ाई पढ़त हीं गयो बदन कुम्हिलाय॥ ९८॥
हे प्यारे तुम बिन हमैं कल न परत दिन रैन।
तरसत भेंटन को हियो अरु दरसन को नैन॥ ९९॥
नेह जरायो जाय तुम बातो साथ बनाय।
इत श्री नित प्रति मम जस्यो तन मसाल को पाय॥ १००॥
कुशल आपकी सर्वदा राखैं श्री करतार।
कुशल हमारी आपके आवन के आधार॥ १०१॥
कृपापात्र जो आपने भेज्यो पायो तौन।
पढ़ कर हरष अपार भौ जान आपको भौन॥ १०२॥
समाचार आतुर लिखो है चातुर मम जीव।
सब गुणज्ञाता धर्मधुर तुम सुख संपत सीव॥ १०३॥
तुम पहँ धावन ते प्रथम चलन चहत है प्रान।
पत्रोत्तर लगि हम इन्हैं राखे अति सनमान॥ १०४॥

नवल नेह दृग दिवस भर लागी लात अघाय।
गये आप विरहाग सौं मनसिज दियो जराय ॥ १०५ ॥
दरसायो बरषा दरस आस अंग गो सूक।
उचित नहीं घनश्याम जू चित चातक की चूक ॥ १०६ ॥
नेह नीर मझधार में विरह समीर समाज।
तरनी सौं तरनी भई बूड़ो चाहत आज ॥ १०७ ॥
जद्यपि ग्रह तारे गगन जगमग जगमग होत।
तद्यपि चखन चकोर के चढ़ो चन्द की जोत ॥ १०८ ॥
इन दुखिया अँखियान को सुख सिरजोई नाहिं।
देखत बन्यो न देखते विन देखे अकुलाहिं ॥ १०९ ॥
जब जब वे सुधि कीजिये तब सबही सुधि जाहिं।
आंखिन आंखि लगी रहैं आंखैं लागति नाहिं ॥ ११० ॥
जबतें चितये नैन भरि तबतें छिन नहिं चैन।
मनमोहन गोहन पस्यो जागत सपने सैन ॥ १११ ॥
बैन पियूष मयूष वपु अधरन ऊख मिठास।
निज शीतल सीतल करन मीत मिलन की आस ॥ ११२ ॥
उत भूलें सुध लेत ना इत भूले न भुलात।
भूलेहूं सुधि जो करौ बेसुध सुध ह्वै जात ॥ ११३ ॥
अवधि बुझै विरहा बरै मरै न जियै अजान।
फेर फेर फिरि आवहीं करि करि प्रान पयान ॥ ११४ ॥
हियो दई दृग वहैं प्रिय चहैं लहैं ना पास।
बिना मोच जीवन मरन नेह अनोखी बास ॥ ११५ ॥
ना आवन की औधि कछु नाहिं रावरी आस।
ताहू पै न निरास मन बढ़त प्रेम की प्यास ॥ ११६ ॥

सजन मिलन की लालसा लीनो औम लपेट।
प्रान प्रान आँखिन बसे उठत ममोला पेट॥ ११७॥
बैरो बिरह बढ़ावने ससि सूरजहिं दिखाव।
दिन तो शिव भज सो भयो बामन सो डग रात॥ ११८॥
हो, निरमोही कान्ह जू तलफावत क्यों प्रान।
सब सामान निदान यह जान जान के मान॥ ११९॥
रे कठोर चितचोर पिय जिय मरोर बेतौर।
प्रीत जोर बरजोर अब करत और की और॥ १२०॥
लाल करील की कुंज में रह्यो उरझि मो चीर।
ए बलवीर अहीर के हरत क्यों न मो पीर॥ २१॥
कनकलता श्रीफल फली रही विजन बन फूल।
ताहि तजत क्यों बावरे सुमलि साँवरे भूल॥ २२॥
प्रेम पंथ अति कठिन है सब कोउ जानत नाहिं।
चढ़िबो मोम तुरंग पै चलिबो पावक माहिं॥ १२३॥
तन सूखो झिँगड़ी भयो रगें सुख भई तार।
रोम रोम सुर उठत है बाजत नाम तिहार॥ १२४॥
राम न जाते हरिन सँग सोय न रावन साथ।
ज्यों रहीम भावी कतहुं होत आपने हाथ॥ १२५॥
तुलसी इन अल झूल को जौ पै निपट अकाज।
कै राखे कै सँग चले हाथ गहे की लाज॥ १२६॥
पानि पलक कुसु बरुनिका अँसुआ जल द्विज नैन।
तुम्हें चलत पिय नींद को करत संकलप मैन॥ १२७॥
क्षमा कीजियो दोष सब मोहि निज अनुचर जान।
पत्रोत्तर दे बेगही मिलहु प्रान प्रिय प्रान॥ १२८॥

सोरठा ।

सज्जन रस की रीत सो हम देखी ऊख में ।
ऊखहुं में विपरीत जहां गांठ तहं रस नहीं ॥ १ ॥
कुच को टेढ़ो बांस सेंक सांक सीधो कियो ।
आयो चातुरमास जाय मिल्यो कुल आपने ॥ २ ॥
जल पय सरस बिकाय देखहु प्रीत की रीत भलि ।
बिलग होइ रस जाय कपट खटाई परतही ॥ ३ ॥
लाग्यो तोसों नेह रैन दिना कल ना परै ।
प्रेम तपावत देह तन मन आपनो दे चुकी ॥ ४ ॥

बरवा ।

प्रेम प्रीति को बिरवा गये लगाय ।
सींचन की सुधि लीजो मुरझि न जाय ॥ १ ॥
कागद देख बिधाता कागद देख ।
जे दिन गये मित्र बिन ते जनि लेख ॥ २ ॥
कहँकनु है उँजियरिया निस नहिं घाम ।
जगत जरत मोहिं लागै तुम बिन श्याम ॥ ३ ॥
प्रीतम तुव मिलबे को अस जिउ होय ।
पंछी लौं उड़ि भेंटौं लखै न कोय ॥ ४ ॥
प्यारी सुधि नहिं पाई जिय अकुलाय ।
तुव बिनु इतहूं मोसों रह्यो न जाय ॥ ५ ॥
दरसन बिनु बहु प्यासे तलफत नैन ।
बितवत गिनत सितारे चैन न रैन ॥ ६ ॥

यां बीतत दिन कैसे जानहु नाहिं ।
बीतत बन की पतियां रतियां जाहिं ॥ ७ ॥
लिखत वियोग कहानी भरि भरि नैन ।
रैनहुं जात सिरानी आव न बैन ॥ ८ ॥
लिखत लेत लेखनियां छूटत हाथ ।
गिरे दृगन ते अँसुआ एकहि साथ ॥ ९ ॥
अँसुअन गिरत बहायो कागद हाय ।
लिखनो बहो तुरतही धनहु गँवाय ॥ १० ॥
हम तो हाय बिकाने तेरे हाथ ।
तन मनहूं सब पठयो तेरे साथ ॥ ११ ॥

कवित्त ।

दासी दरवानन की झिरकी करोर सहौं दूतिन नचाये नचौं नौ नौ पानि नेजे पर । दिवस बिताये दौरि इत उत दुरि दुरि रोइहूं सकौ न खुलि हाय दुख सेजे पर ॥ हरी चन्द प्रानन पे आय बनी सबै भांति अंग अंग भीनो पीर परि बिष रेजे पर । हाय प्रानप्यारे नेक बिछुरे तिहारे दुख कोटिन अंगेजे याही कोमल करेजे पर ॥ १ ॥

लोक वेद लाज करि कीजे ना रुखाई एतौ दुखिये पियारे नेक दया उपजाइ कै । बिरह बिपति दुख सहि नहिं जाय कहि जाय ना कछुक रहौं मन बिलखाइ कै ॥ हरीचन्द अब तो सह्यारो नहिं जाय हाय भुजन बढ़ाय बेगि मेरी ओर आइ कै । बिरद निभाय लीजे मरत जिवाइ लीजे हा हा प्रानप्यारे आइ लीजे गर लाइ कै ॥ २ ॥

सवैया।

मीन मरै जल के बिछुरे जल नेक दया नहिं मीन की आनै।
चातक स्वाति की बूंद रटै अरु स्वाति न चातकही पहिचानै॥
चन्द की चाह चकोर मरै पै चकोर की चाह न चन्द्रमा जानै।
मूरख मित्र सों प्रीत लगैये तो प्रानहूं जाय पै मित्र न मानै॥ १॥

हंसा चाहत मानसरोवर मानसरोवर है रँगराता। स्वाति की बूंद पपीहा चाहत चन्द चकोर को नेह को नाता॥ प्रीतम प्रीत भले निबही कवि गंग कहै जग जीवन दाता। मेरे तो चित्त में मित्त बसै अरु मित्त के चित्त की जानै बिधाता॥ २॥

चन्द की चाह चकोर मरै अरु दीपक जोति जरै जौं पतंगो। मोर मरै घनघोर के कारन मीन मरै बिछुरे जल संगो॥ चातक स्वाति की बूंद रटै अरु केतकी कारन भौंर भुजंगो ये सब चाहैं हमैं नहिं कोउ सो जानिये प्रीत की रीत एकंगो॥ ३॥

जो अमावस पावस लागी रहै तो चकोरन के रहैं प्रान कहां। घन स्वाति के जो बरसैं न कहूं तो पपीहन के तन त्रान कहां॥ बलदेव जो भोरहिं उगैं न भानु तो चक्रन जीवन दान कहां। महबूब को खूब न देखैं कहीं तो गरीबन को गुज-रान कहां॥ ४॥

चैन कहां जहां नैन लगे अरु नेम कहां जहां प्रेम पग्यो है। सुधि कहां जहां बुद्धि नहीं सुखहेतु कहां जहां प्रेत लग्यो है॥ धीर कहां जहां पीर मुबारक लाज कहां जहां लोभ धस्यो है। छूटहिंगो तब जानहिंगे अब तो मन हाथ पराये पर्यो है॥ ५॥

ए करतार विनय सुन दास की लोकन को अवतार करो जिन। लोकन को अवतार करो तो मनुष्यहू को सँवार करो जिन ॥ मानुषहीं को सँवार करो तो तिन्हें बिच प्रेम प्रकास करो जिन । प्रेम प्रकास करो तो दयानिधि केहूं वियोग विचार करो जिन ॥ ६ ॥

हित सांचो लगै जिहि को जिहिं सों तिहि को लै तहां पहुंचावत है । बर हंस चुगै मुक्ताहल को अरु स्वातिहि चातक पावत है ॥ कहि ठाकुर ये निज भेद सुनो अवझावे सोई सुरझावत है। परमेश्वर की परतीत यही मिल्यो चाहिये ताहि मिलावत है ॥ ७ ॥

जै मन फेरिबो सीखे नहीं बलि नेह निबाह कियो नहिं आवत। हेरि कै फेरि मुखै हरिचन्द जू देखनहूं को हमैं तरसावत ॥ प्रीत पपीहन कों घन सांवरे पानिप रूप कबौं न पियावत। जानो न नेक बिथा पर को बलिहारी तऊ पै सुजान कहावत ॥ ८ ॥

मन लागत जाको जबै जिहिं सों करि दाया को ताहि निभावत है। यह रीत अनोखी तिहारी नई अपुनो जहां दूनो दुखावत है ॥ हरिचन्द जू जानो न राखत आपनो दासहूं ह्वै दुख पावत है । तुमरे जन सोच के भोगैं दुखै तुम्हैं लाजहूं हाय न आवत है ॥ ९ ॥

श्लोक।

सुहृदाम्पत्रिका बाला यावत् सादरं चुम्बिता।
सर्वताऽऽलिङ्गिता यावत् तावद्भवति शर्म्मदा॥ १॥

इन्दीवरेणनयनं मुखमंबुजेन कुन्देन दन्तमधरं नवपल्लवेन।
अङ्गानि चम्पकदलैः सविधाय वेधाः कान्ते कथं घटितवानुपलेन चेतः॥ २॥

भवत्पत्रं घनंश्यामः कदाचिदपि नागतम्।
मनोमयूरः प्रेक्ष्यासौ मोदते नैव तद्दिना॥ ३॥

क्रियते स्मरणं भक्त्या भवदीयमहर्निशम।
श्रीमद्भिर्विस्मृतस्तत्र को वेद किमु कारणम्॥ ४॥

भवत्पत्रं सुवृत्ताढ्यं सुखदं च सुधोपमम्।
विश्लेषतापसन्तप्तमनः क्लेशनिवारणम॥ ५॥

पत्रं कुशल वृत्तान्तं दूतं जानन्ति पण्डिता।
तदुत्तरं विचार्याशु लिखन्ति सुखहेतवे॥ ६॥

कथं न लिखितं पत्रं ममनिर्वृति वेदकम्।
सैवास्ति हृदये चिन्ता चित्तमत्र विचार्यते॥ ७॥

ममास्ति हृदये गुरुमं नर्म विश्लेषसम्भवम्।
वेद्यं वृत्तमयं पत्रं कथं न प्रेष्यतेऽधुना॥ ८॥

लिख्यते न कथं पत्रं चेतश्चिन्ताभयापहम्।
सन्तोषसुखदं भव्यं वर्णवृत्तान्तसंयुतम्॥ ९॥

विरहोरग दष्टस्य मच्चित्तस्यमुमूर्षतः।
भवद्धस्ताङ्कितश्लोकः पत्ररूपोहि गारुड़िः॥ १०॥

नालेखि भवता पत्रं निज हस्त सुशोभनम्।
तच्चिन्ता मानसं नित्यं दुनोति खलु मामकम्॥ ११॥

चिन्ता मार्ग परिश्रान्तचेतसः श्रमनाशनम्।
प्रेषणीयं द्रुतं पत्रं त्वोयहस्ताक्षराङ्कितम्॥ १२॥
मेलने मेलनं यस्य दर्शने यस्य दर्शनम्।
कथं न प्रेष्यते पत्रं तथा जोवस्य जोवनम्॥ १३॥
मक्षिस्त्र वातकस्यार्त्ति हरणोयत जोवनम।
भवत्यत्रघनं नित्यमिहलोकः प्रतीच्यते॥ १४॥
विरहोदधि मग्नस्य ममस्नेहार्द्रचेतसः।
समुक्तुं भवत्यत्र समाचारो न संशयः॥ १५॥
यथा स्मरति गौर्वत्सं चक्रवाकोदिवारम्।
सती स्मरति भर्त्तारं तथाहं तव दर्शनम्॥ १६॥
सूर्यं स्मरति मिथुनानि रथांगनाम्नां
हंसा यथा शुचि तटं खलु मानसस्य॥
चन्द्रं स्मरन्ति कुमुदानि यथातथाद्य
स्नेहं स्मरामि भवतः स्मृतिकारणं वा॥ १७॥
कृष्णस्यागमनं निशम्य सहसा कृत्वा फणीन्द्रं गुणं
कौपीनं परिधाय चर्मकरिणः शंभुः पुरो धावितः॥
दृष्ट्वाकृष्णरथं सकम्पहृदयः सर्पोऽपतद्भूतले
कृत्ति प्रस्खलितं ह्रिया नतमुखो नग्नोहरः पातु वः॥ १८॥
जेतुं यस्त्रिपुरान्तकेन हरिणा व्याजाद्दलिंवञ्चता
स्रष्टुं वारिभवोद्भवेन मुनिना शेषेण धर्त्तुं धरा।
पार्वत्या महिषासुरप्रमथने सिद्धादिभिर्मुक्तये
ध्यातः पञ्चशरेण विश्वजितये पायात् स नागाननः॥ १९॥

इति शुभम्भूयात्।